॥ जैनीय-वैराग्यशतकं भाषान्तर सहितं ॥

॥ प्रारम्भः ॥

॥ वैराग्यशतकं भाषान्तर सहितम् ॥

टिप्पण तथा भाषान्तर करनार.

(स्वर्गस्थ) शास्त्री रामचंद्र दीनानाथ.

छपावी प्रसिद्ध करनार,

मेसर्स मगनलाल एन्ड कुं.

व्यवस्थापक.

शास्त्री लक्ष्मीनारायण रामचंद्र.

किं० किंमत दोढ रुपीओ १॥.

(आवृत्ति ४ थी)

अमदावादमां.

" राजनगर प्रिन्टींग प्रेसमां " शा· मगनलाल हठीसंगे छाप्युं.

संवत १९६६—सने १९१०

भाषान्तरकर्त्तानी प्रस्तावना.

आ सर्व ग्रंथनो अभिप्राय ग्रंथकारे पोतेज, पहेली गाथाना पेहलाज पदमां जणाव्यो छे के, "संसारम्मि असारे' आ सर्व संसार असारज छे अर्थात् सार वस्तुनी अपेक्षायेज असार कह्यो छे माटे सार वस्तु ते शी छे? ने असार वस्तु ते शी छे? ए बुद्धिमान् पुरुषे तो अवश्य जाणवु जोइये. ते संबंधी थोडामा जाणवा योग्य तो, एटलुज छे के, जे आत्मगुणने विषे वर्त्तवु, तेज सार छे. अने जे पुद्गलिक भाव तेमा वर्तवु, ते असार छे. अने आ? आखा ग्रंथमां पण एज वातनो विस्तार वारंवार जणाव्यो छे.

वली आ ग्रंथमा प्रथम असार एवु संसारनुं विशेषण जे मूक्यु छे, ते वर्णन करवा योग्य एवा वैराग्य रूप वृक्षनु बीज छे. अर्थात् संक्षेपमां आखा ग्रंथनो अभिप्राय, एकज पदमा जणाव्यो छे. हवे असार शब्दनो लेश मात्र अर्थ देखाडीए छीए. जेने विषे सार नथी, ते असार कहीये. आ ससारमां कल्पना

करीने मानी लीधेली सारी सारी वस्तु शी छे ? प्रथम पोतानो देह, स्त्री, पुत्र, परिवारादिक सघलु छते पण, जो स्त्री आदिकना शरीरमा आत्मा न होय तो ते सर्व वस्तु असार थइ पडे, माटे आत्मा छे एज सार छे कारण के, अनतुज्ञान, अनतुदर्शन, अनतुअव्यावाध सुख पण, एज आत्मामा रहेलु छे अने ते आत्माने लीधे बीजा सर्वे असार पदार्थो पण सारा लागे छे एटले स्त्रीआदिकना देहमाथी आत्मा जतो रहे त्यारे तेज स्त्रीआदिक पदार्थ, घणु प्रिय होय पण तेनु आलिंगनादिक करी शकातु नथी वली जेम जेम सूर्यनी समीपे जइए, तेम तेम वधारे वधारे प्रकाश जणाय वली जेम जेम चद्रमानी समीपे जइए, तेम तेम वधारे शीतलता जणाय तेम, जेम जेम आत्मगुणनी समीपे जता जइए, तेम तेम वधारे सुखशाति जणाय अने जेम जेम तेथी (आत्मगुणथी छेटु थवाय, एटले परभावमा पेसाय, तेम तेम वधारे अशाति थाय, माटे आत्म गुण तो अवश्य प्रकट करवा जोइए. एटले जेम जेम सार वस्तु जणातो जाय, तेम तेम असार उपरथी सहेजेज प्रीति उतरती जाय.

जेम के, कोइनी पासे कोडी होय, ने तेने पैसो मल्यो, त्यारे तेने कोडी छांडवी ते काइ कठण नथी. तेमज रुपियो मले, त्यारे पैसो छांडवो कठण नथी तेमज सोना महोर मले, त्यारे रुपियो छांडवो कठण नथी तेमज रत्न मले, त्यारे सोना महोर छांडवी कठण नथी तेमज पार्श्वमणि मले, त्यारे रत्न छांडवु कठण नथी. तेमज चिंतामणिरत्न मले, त्यारे ते पूर्वे कहेलु सघलुं धन मूकवुं कांइ कठण नथी. माटे चिंतामणि रत्न समान तो आत्मगुण छे ते आत्मगुण प्रकट करवाने माटेज सर्व क्रिया अनुष्ठान करवा पडे छे ते पण आत्म ज्ञान पूर्वक विधि सहित करे, त्यारेज आत्मगुण प्रकट थाय छे ते आत्मगुणोनो अंत कोइथी कही शकाय तेम नथी. जेम के, आकाशनो अंत कोइ पक्षीथी पामी शकातो नथी जेम जे पक्षी, पोतानी पाखना बलवडे जेटला आकाशमा उडी शके छे, ते पक्षी, आ आटलुज आकाश छे, एम समजे छे जेम सगतरु, चरकलु, समली, अनल पक्षी, अष्टापदनामा पक्षी अने गरुड पक्षी ए सर्वे पांखवाला छे, तेउ पोते पोतानी पाखना बल प्रमाणे आकाशमा गमन करी शके छे, परतु ते स

वैने पण आकाश अपारने अपार रहे छे तेम आत्माना ज्ञानादिक गुणो अपार साररूप छे, तेथी उलटो आ सघलो ससार असाररूप छे अर्थात् अनेक प्रकारना आधि तथा व्याधि तथा उपाधि तेणे करीने आत्मगुण प्रकट करवानो उद्यम बिलकुल करी शकतो नथी ने कदापि करे छे, तो देहने पोतानु रूप मानीने करे छे, एटले मनावा पूजावादिकनी लालचे करे छे माटे ते आत्मगुण शी रीते प्रगट थाय ? परतु ते आत्मगुणो तो, क्यारे प्रकट थाय ? के, ज्यारे आ ससारने विषे देहादिक सर्व पदार्थने असाररूप जाणे त्यारेज आत्मगुण प्रकट थाय छे अर्थात् वैराग्य पाम्या विना आत्मगुण प्रकट थायज नही। माटे मोक्ष मार्गमा चालनार पुरुषने तो, वैराग्य पगने ठेकाणे छे, ज्ञान हृदयने ठेकाणे छे, अने धर्म माथाने ठेकाणे छे तो पण एक बीजाने परस्पर सबध रहेलो छे एटले मोक्षमा जनार पुरुषने पूर्वोक्त त्रण पदार्थोनु सपूर्ण बल जोइए परतु तेमा मोक्षमार्गे चालनारने प्रथम पगनु बल बरोबर जोइए, केमके, पगविना चाली शकातु नथी एटलाजमाटे वैराग्यनु बल दृढ जोइए,

ते वैराग्यने जाग्रत करनार एवो आ वैराग्यशतक नामनो ग्रंथ कोइ पूर्वधर पुरुषे पूर्वमांथी उधर्यो छे, तेने गूजराती भाषान्तर सहित करी प्रगट कर्यो छे.

लि. शास्त्री रामचन्द्र दीनानाथ.

-भाषान्तरकर्त्ता.

व्यवस्थापकनी विज्ञापना.

आ "वैराग्यशतक" नामनो ग्रंथ अति उपयोगी थइ लोकमां प्रशसनिय थइ पडवाथी तेमज उत्साहीजनो तथा नितीवान पुरुषोनी वारंवार मागणीउ थवाथी चोथी आवृत्ति करवा अमारे जरुर पडी छे. भविष्यमां तेनी आशा राखु छुं के आ ग्रंथनी प्रसिद्धी हजी पण सर्वे नितीवान पुरुषोमां नहीं थइ होय तेवा स्थळे जरुरा जरुर थशे, ने कदीपण तेने हाथमाथी मुकवानु मन थशे नहीं. एटलुज नहीं पण ते ग्रंथनी अंदर जे जे विषयो दर्शाव्या छे ते खरेखर मुमुक्षुए अवश्य एक पाठनी माफक तेमज नित्यकर्मनी मा

फक हमेशां पठन करवायोग्य छे, माटे ते प्रमाणे तेउ अवश्य पोताना लक्षमा लेशेज ने आ ग्रथनो जेम विस्तार थाय तेम करशे हमेशा दरेक नितीवान पुरुषोने तो "आत्मगुण" केवी रीते प्रगट थाय छे ते जाणवा अपेक्षाज रहे छे, ने आत्मगुण जाण्या विना मोक्ष प्राप्त थतो नथी ते पण सिद्ध छे आ ग्रथमां घणा दृष्टात सिद्धातो छे, ने मोक्षपदवीने आ सांसारिक पुरुषोथी कीया कीया साधनोए करी पमाय छे ते दर्शावेल छे रगरागी पुरुषो एक क्षण क्षणनार दीवसमा आ ग्रथनु पठन करशे तोपण ते सर्व आधीव्याधीथी छुटी कैवल्यपदनो रस्तो देखशे ने पोताना मनुष्यदेह ने धर्मनु सार्थक करशे एज विज्ञापना

ली

शास्त्री लक्ष्मीनारायण रामचंद्र दीनानाथ.
मालेक श्री दीनकर प्रेस
तथा मेनेजर मेसर्स मगनलाल एन्ड कुं.

भुमिका.

स्वर्गस्थ शास्त्रीजी रामचंद्र दीनानाथे आ ग्रंथनुं भाषांतर तथा टीप्पण करेल छे. तेउने मागधी भाषानो घणो शोख हतो ने पोतानी बाल्यावस्थामां एक माहात्मा योगी पुरुषोना समागममा रही तथा पोताना स्वर्गस्थ पीता श्री दीनानाथ शास्त्रीनी पासे रही विद्या ग्रहण करी काशी जेवा नामांकित स्थळे रही सपूर्ण माहीती मेळवी मागधीनां छ व्याकरणनो अभ्यास करी सस्कृतनी माहीती मेळवी हती. मुंबाइ सरकारमां तेमनुं नाम प्रसिद्ध छे, कारण के तेउ जुना ताडपत्रना पुस्तकना शोधन पर हता, ने गवरमेन्टनां पुस्तकोनो वार्षीक रीपोर्ट महेरबान डा. बुल्हर, डा कीलहोर्न, डा. पी. पीटरसन तथा डा भंडारकर साहेबो पासे रही बहार पाडता हता. जैनमार्गना घणा नामाकित सवेगी साधुउ, श्रीपूज्यो तथा अन्य पुरुषो अभ्यास करता हता. जैनीय महाराज श्री शांतीसागरजीए तो मूळथीज विद्याभ्यास कर्यो हतो, ने धर्मबींदु आदिक ग्रंथ प्रसिद्ध कराव्या हता. जैनमार्गनी वृद्धिकरता

तेवा शेठीया प्रेमचंद रायचद तथा शेठ. फकीरनाइ वि. अनेक शेठीयाउनी प्रसन्नता तेमनापर हती, तेमणे घणाक जणने पोताना नामना ग्रथो तथा बाळाबोध करी आप्या छे, तथा पोते प्रबंधचीन्तामणी तथा तेनुं नापांतर जेनी बीजी आवृत्ति थइ छे, तथा रत्नामजरी नाटीका मुळ मागधी तथा संस्कृत, आचारप्रदीपना बे नाग तथा प्राकृत शब्दरूपावळी, आत्मनिंदाष्टक विगेरे जैनी ग्रथो कर्या छे

शास्त्रीजीनो प्रचार श्री स्वामिनारायण सप्रदायमां हतो तेमना पीता महा समर्थ हता, जेथी ते सप्रदायना तमाम शास्त्र वैदीक मत्तानुसारे बाध्या छे ने तेना नापातर स्वर्गस्थ शास्त्रीजीए कर्यां छे. अने तेमना मत्तना घणा ग्रथो जाणवायोग्य ने प्रशसनिय छे जेथी तेमना रचेला आ "वैराग्यशतक" जेवा ग्रथने नितीवान पुरुषोए अवश्य उत्तेजन आपवु उचित छे

मेमर्स मगनलाल एन्ड कं.

॥ ॐ श्री वीतरागाय नमः ॥

॥ श्री वैराग्यशतकम् ॥

प्रणम्य परमात्मानं । बालबोधाय लिख्यते ॥

वैराग्यशतकस्यास्य । जाषा टीकानुसारिणी ॥ १ ॥

श्री पूर्वाचार्य महाराजे पूर्वमांथी उद्धार करीने वैराग्यशतक नामनो ग्रंथ रच्यो छे अने तेनी टीका संवत् १६४७ ना वर्षमां खरतर गच्छीय श्री जिनचंद्र सूरिना राज्यमां थएला श्री गुणविनय नामा आचार्ये करी छे. तेनो जावार्थ लइने आ बालावबोध कर्यो छे.

॥ आर्यावृत्तम् ॥

संसारे असारे नास्ति सुखं व्याधिवेदनाप्रचुरे

संसारंमि असारे । नंहि सुहं वाहिवेअणापउरे ॥

जानन् इह जीव न करोति जिनदर्शित धर्मं

जाणंतो इह जीवो । न कुणइ जिणदेसिय धम्मं ॥२॥

अर्थ–(असारे के०) सार रहित एवो, अने (वाहि के०) व्याधि एटले शरीर संबंधि दुःख, (वेअणा के०) वेदना एटले मन संबंधि दुःख, तेणे करीने (पउरे के०) प्रचुर एटले बहुल अथवा जरेलो एवो, (इह के०) आ (संसारंमि के०) संसारने विषे (सुह के०) सुख जे ते (नत्थि के०) नथी (जाणंतो के०) ए प्रकारे जाणतो एवो (जीवो के०) जीव जे ते (जिणदेसिय के०) जिनराजना प्ररूपेला (धम्म के०) धर्मने (न कुणइ के०) नथी करतो ॥ १ ॥

जावार्थ–अनेक प्रकारना आधि, व्याधि, अने उपाधि तेणे करीने आ संसार जरेलो छे, एटले आ असार संसारमा काइ पण सुख नथी एवी रीते आ जीव जाणे छे, देखे छे, अने अनुजवे छे, तोय पण आ मूढ जीव जिन परमात्माना कहेला धर्मने नथी करतो ! !

आ प्रथम गाथामां एम कह्यु के, आ जीव संसारनु असारपणु जाणे छे,

तोये पण श्री जिनप्रणीत धर्मने नथी करतो; एवुं कहुं, परंतु न्हानी उम्मरवाला अने तेज भवने विषे मोक्ष जनारा अने श्री वीरभगवाननी देशना फक्त एकज वार सांभळवाथी दृढ वैराग्यवान् थएला, एटलुंज नही पण ते संसारना असारपणा संबंधी माता पिता साथे प्रत्युत्तर करी छेवटे माता पितानी आज्ञा लेइ जेणे बाल्यावस्थामां दीक्षा अंगिकार करी, एवा श्री अतिमुक्तककुमारनु वृत्तांत श्री अंतगडदशांग अने भगवत्यादि सूत्रने अनुसारे नीचे प्रमाणे जाणवु.

कथा.

पोलासपुर नगरने विषे विजय नामे राजा, तेनी श्री नामनी पट्टदेवी एटले पटराणी, ते बे जणनो अतिमुक्तक एवे नामे पुत्र हतो. ते पुत्र बहु उद्यमे करीने म्होटो थयो, अनुक्रमे करीने छ वर्षनो थयो, ते अवसरे नगरनी बहार श्री वीरस्वामी समोसर्या. एटले पधार्या. त्यार पछी ज्ञानवंत एवा गौतम गणधर, श्री वीरस्वामीने पूछी भिक्षा लेवाने अर्थे नगर मध्ये आव्या,

व० श०

ते अवसरे ठोकराउनी संगाथे रमतो एवो अतिमुक्तक कुमार, गौतमस्वामीने देखीने ए प्रकारे पूठतो हवो के, "तमे कोण ठो ? अने केम फरो ठो?" एम पूठे सते गौतमस्वामीए कह्यु के, "अमे श्रमण ठीए, अने जिक्षाने अर्थे फरीए ठीये" त्यारे कुमार वोल्यो "हे पूज्य ! आवो, हुं तमने जिक्षा अपावु" एम कहीने ते कुमार गौतमस्वामीनी आंगलीए वलगीने पोताने घेर आव्यो ते अवसरे श्रीदेवी घणी खुशी थइ सती जक्तिये करीने गौतमस्वामीने नमस्कार करीने प्रतिलाजती हवी एटले आहार पाणी आप्या त्यार पठी अतिमुक्तक कुमार फरीने ए प्रकारे पूठतो हवो के, "तमे क्या रहो ठो?" त्यार पठी गौतमस्वामी कहेता हवा. "हे जद्र! जे उद्यानमा अमारा धर्माचार्य श्री वर्द्धमानस्वामी वसे ठे त्या अमे वसीए ठीए" एवुं कह्यु ते अवसरे ते कुमार वोल्यो "हे स्वामिन् ! तमारी साथे श्री वीरस्वामीने वंदन करवा माटे हु आवु?" त्यार पठी गौतमस्वामी कहेता हवा, "यथासुखं देवानुप्रिय एटले हे देवताउने वल्लन्न ! जेम तने सुख उपजे तेम." त्यार पठी गौतमस्वा

ए ए

मीनी साथे आवीने अतिमुक्तक कुमार भगवंतने वंदन करतो हवो त्यार पछी भगवते धर्मनो उपदेश दीधो, ते उपदेश सांभलीने प्रतिबोध पाम्यो एवो अतिमुक्तक कुमार, दीक्षा ग्रहण करवाने इच्छतो सतो माता पितानी अनुज्ञा लेवाने अर्थे, घेर आवीने माता पिताने आ प्रकारे कहेतो हवो. "हे अंब! हे तात! में आज श्री वीरस्वामीजीनी पासे धर्म सांभल्यो ते धर्म मने रुच्यो एटले ते धर्म करवानो मने अभिलाष थयो छे." ते अवसरे ते माता पिता कहेता हवा "हे पुत्र! तु धन्य छु, तुं कृतपुण्य छु, तु कृतार्थ छुं एटले तने धन्य छे अने कर्यु छे पुण्य ते जेणे एवो तुं थयो, अने कर्यो छे अर्थ नाम प्रयोजन ते जेणे एवो तु थयो. जे कारण माटे ते वीरस्वामीजीनी समीपे धर्म सांभल्यो, अने वली ते धर्म तने रुच्यो, ते कारण माटे." त्यारपछी ते कुमार फरीने ए प्रकारे कहेतो हवो "हे अंब! हे तात! हुं ते धर्म सांभला-वादिके करीने संसारना भये करीने उद्विग्न एटले उपरांग मनवालो एवो अने जन्म मरणना भयथकी भय पामेलो एवो थयो छु, ते कारण माटे तमारी

अनुज्ञाए करीने एटले रजाए कराने श्री वीरप्रभुजीनी समीपे प्रव्रज्या ग्रहण करवाने इछु छु " एवु कह्यु त्यारपछी ते कुमारनी माता अनिष्ट कहेता वल्लभ नहीं एवु, अने एकातपणे अणगमतुं एवु, अने अप्रिय एवु, अने प्रथम कोइ दहाडो न सांभळेलु एवु, ते कुमारनु वचन सांभळीने तत्काल शोकना समूह प्रत्ये पामी एटले शोकातुर थइ अने दीन अने उदास एवा मने करीने सहित छे मुख ते जेनु एवी थइ सती, मूर्छा पामीने आंगणतलने विषे एटले घरना आंगणामा धरती सर्व अंगोए करीने पडी ते अवसरे दासीउए शीघ्र, सोनानो कलश लावीने ते कलशना मुखथकी नीकलतु एवु शीतल अने निर्मल एवु जल तेनी धाराउए करीने एटले सुगंधवाली पाणीनी धाराउए छांटी, अने कर्यो छे ताढा वायरानो उपचार ते जेने एवी करी सती चेतना पामीने विलाप करती थकी पुत्र प्रत्ये आ प्रकारे कहेती हवी "हे जात! तु अमारे एकज पुत्र छे, अने अमने इष्ट कहेता वल्लभ, अने कांत कहेता मनोज्ञ, अने प्रिय कहेता प्रियकारी एवो, अने आभरणना करंडिया समान, ए-

टले अमूल्य रत्नतुल्य एवो, अने हृदयने आनद उत्पन्न करनार एवो, अने उवराना फूलनी पेठे दुर्लभ एवो तु अमारे छे एज कारण माटे क्षणमात्र पण तारा वियोगने अमे सहन करवाने समर्थ नथी ते कारण माटे हे जात! ज्यासुधी अमे जीवीए त्यासुधी तु घरमां रहे. पछी सुखे करीने प्रव्रज्या ग्रहण करजे एटले दीक्षा लेजे" त्यार पछी ते कुमार कहेतो हवो "हे अंब! तमारु कहेवु सत्य छे परंतु आ मनुष्यनो भव अनेक जन्म जरा मरण रुप, तथा शरीर अने मन संबधि अतिशे दु:खनुं वेदवु एटले भोगववु ते रुप उपद्रवे करीने पराभव पामेलो एवो, अने अध्रुव कहेता अशाश्वत एवो, अने सध्या समयना वादलाना रग सरखो एवो, अने जलना परपोटा सरखो एवो, अने वीजलीना सरखो चचल एवो, अने सडी जवु, पडी जवुं, नाश पामवु, ए छे धर्म कहेतां स्वभाव ते जेनो एवो छे ते प्रथम अथवा पछी जरूर त्यागवा जोग्य छे एटले मूकवोज पडशे हवे कोण जाणे आपणा मध्ये कोण पहेलु परलोके जशे? अथवा कोण पछी जशे? एवी खबर पडती नथी ते का

ने० रण माटे तमारी आज्ञाए करीने हमणाज हु दीक्षा लेवाने इछु छुं" ए रीते
कुमारे कह्यु त्यारपछी फरीने माता पिता ते कुमरने कहेता हवा. "हे पुत्र!
१० आ तहारु शरीर विशेष रूपवालु एवु, अने *लक्षण †व्यजन रूप गुणे करीने
सहित एवु, अने नाना प्रकारनी व्याधिए करीने रहित एवु, अने सौभाग्यप-
णाए करीने सहित एवु, अने न हणाएला एवा, अने उदात्त कहेता मनो-
हर अने कात कहेतां मनोज्ञ एवा, पाच इन्द्रिओ तेमणे करीने शोभायमान
एवु, एटले अलकृत मनोहर पाच इन्द्रियोए करीने रूप सौभाग्यादि गुणोने
अनुभवीने एटले भोगवीने परिणत वयवालो यइने एटले परिपक्व अवस्था-
वालो यइने पछी प्रव्रज्या ग्रहण करजे" त्यार पछी ते कुमार फरीने आ प्र-
कारे कहेतो हवो "हे अंब! हे तात! जे तमे शरीरनु स्वरूप कह्यु, ते मनु-
ष्य सबधि शरीर, खलु कहेता निश्चे दुःखनुज स्थानक छे, अने नाना प्रका-
रनी सैंकडो व्याधियोने रहेवानु घर एवु, अने हाडका रूप लाकडाथी उत्पन्न

* लक्षण=हाथ पगनी रेखादिक † व्यजन=मष तिलकादिक

थएलुं एवुं, अने नसाजाले करीने विंटाएलुं एवुं, अने माटीना नांकनी पेठे दुर्बल एवुं, अने अशुचिना पुजलोए करीने व्याप्त एवु, अने सकी जवु, पकी जवु, अने नाश थवु ए ठे धर्म नाम स्वनाव ते जेनो एवु आ शरीर, प्रथम अथवा पठी जरूर त्यागवा जोग्य थशे. ए कारण माटे आवा शरीरमां कोण बुद्धिवंत पुरुष रीऊ पामे ? एटले जे बुद्धिशाली पुरुष होय, ते तेवा शरीरमां रंजित नज थाय." ए रीते कुमारे कह्युं. त्यार पठी कुमारना माता पिता फरीने कहेतां हवां. "हे पुत्र ! आ तहारा बापदादाथी आवेलु एवु विस्तारवंत धन, कनक, रत्न, मणि, मोती, शंख प्रवाला आदि पोताने वश्य एवुं प्रधान द्रव्य ठे जे द्रव्य सात पेढी सूधी, अतिशे दीनादिकने एटले गरिब लोकोने आपवा माक्युं अने पोते नोगववा माक्युं होय तोपण क्षय न थाय, एटले खूटी न जाय एवु ठे. ते कारण माटे ए प्रकारनुं आ द्रव्य ते प्रत्ये पोतानी खुशी प्रमाणे रूडे प्रकारे नोगवीने, पोताने सदृश रूप लावण्यादि गुणोए करीने शोनायमान एवी अने पोताना मननी रुचि प्रमाणे चालनारी एवी घणी राजकन्यान परणी

वै0 ने तेमनी साथे आश्चर्यकारी एवा संसार संबंधि भोगसुख भोगवीने पछी दी श0
क्षा लेज्यो " त्यार पछी कुमार कहेतो हवो "हे अंब ! हे तात ! तमे जे द्रव्या
११ दिकनु स्वरूप कह्युं तेनु एनी रीते जाणवु के, ते द्रव्य, सह्यु कहेता निश्चे अग्नि,
जल, चोर, राजा, दायाद कहेता गोत्रीलोको ए आदिक घणा लोकोने साधारण
छे, एटले घणा लोकोने वश्य छे, पण द्रव्य कांइ एक जणनी पासे रहेतु नथी,
अने अध्रुव कहेतां अशाश्वतु छे एटले ते द्रव्य कांइ निरंतर रहेतु नथी अने
प्रथम अथवा पछी जरूर त्यागवा योग्य थशे, एटले मूकवुंज पडशे तथा म
नुष्य संबंधि कामभोग पण अशुचि एटले अपवित्र एवा, अने अशाश्वत एवा,
अने वात, पित्त, कफ, शुक्र कहेतां वीर्य अने शोणित कहेतां रुधिर एटला-
ओनो छे आश्रय ते जेमने एवा, एटले वात, पित्त, कफ, शुक्र, शोणितमय एवा,
अने अमनोज्ञ कहेता असुंदर एवा, अने विरूप कहेतां माठा मूत्र अने पु-
रीष कहेता विष्टा तेणे करीने भरेला एवा, अने दुर्गंध एवा छे उच्छ्वास अने
निश्वास ते जेमना, एटले उच्छ्वास अने निश्वास जेमनो दुर्गंध छे एवा, ११

अने मूर्ख लोकोए अतिशे करीने सेवेला एवा, अने निरतर साधुजनने निंदवा जोग्य एवा, अने उत्कृष्ट नागे अनत ससारना वधारनार एवा, अने कडवां फल रूप छे विपाक ते जेमनो, एटले अंते दुर्गतिना फलने आपनार एवा कामभोग छे इहा कामभोग कहेवे करीने तेना आधारभूत एटले तेमने रहेवानु स्थानक एवा स्त्री पुरुषनां शरीर जाणवा. ते शरीर पूर्वे कहेला वेशेषणोए करीने सहित छे, एज कारण माटे तेमने अर्थे एटले ते कामभोगोने अर्थे कोण पुरुष पोताना जीवितने निष्फल करे? एटले जे डाह्यो पुरुष होय ते न ज करे" आ रीते कुमारे उत्तर आप्यो त्यार पछी ते कुमारना माता पिता, ए प्रकारे विषयने अनुकूल एवा बहु वचनोए करीने ते कुमारने लोभाववाने असमर्थ थयां पछी विषयने प्रतिकूल एवां, अने संजमना भयने देखाडनार एवां वचनोए करीने आ प्रकारे कहेता हवा "हे पुत्र! नैर्ग्रंथ प्रवचन कहेतां वीतरागनुं कहेलु एवुं सिद्धांत अथवा शासन ते सत्य छे कहेतां साचु छे, अने अनुत्तर कहेतां प्रधान छे. अने शुद्ध कहेतां दोष रहित छे अने शल्यक-

ने तेमनी साथे आश्चर्यकारी एवा संसार संबंधि भोगसुख भोगवीने पछी दी
क्षा लेज्यो " त्यार पछी कुमार कहेतो हवो "हे अंब ! हे तात ! तमे जे द्रव्या
दिकनुं स्वरूप कह्युं तेनुं एवी रीते जाणवुं के, ते द्रव्य, खलु कहेता निश्चे अग्नि,
जल, चोर, राजा, दायाद कहेता गोत्रीलोको ए आदिक घणा लोकोने साधारण
छे, एटले घणा लोकोने वश्य छे, पण द्रव्य काइ एक जणनी पासे रहेतुं नथी,
अने अध्रुव कहेतां अशाश्वतुं छे एटले ते द्रव्य काइ निरंतर रहेतुं नथी अने
प्रथम अथवा पछी जरूर त्यागवा योग्य थशे, एटले मूकवुं पडशे तथा म
नुष्य संबंधि कामभोग पण अशुचि एटले अपवित्र एवा, अने अशाश्वत एवा,
अने वात, पित्त, कफ, शुक्र कहेता वीर्य अने शोणित कहेता रुधिर एटला-
उनो छे आश्रय ते जेमने एवा, एटले वात, पित्त, कफ, शुक्र, शोणितमय एवा,
अने अमनोज्ञ कहेता असुंदर एवा, अने विरूप कहेतां माठा मूत्र अने पु-
रीष कहेता विष्टा तेणे करीने भरेला एवा, अने दुर्गंध एवा छे उच्छ्वास अने
निश्वास ते जेमना, एटले उच्छ्वास अने निश्वास जेमनो दुर्गंध छे एवा,

अने मूढ लोकोए अतिशे करीने सेवेला एवा, अने निरंतर साधुजनने निंदवा जोग्य एवा, अने उत्कृष्ट नागे अनंत संसारना वधारनार एवा, अने कडवा फल रूप छे विपाक ते जेमनो, एटले अंते दुर्गतिना फलने आपनार एवा कामभोग छे इहां कामभोग कहेवे करीने तेना आधारभूत एटले तेमने रहेवानु स्थानक एवा स्त्री पुरुषनां शरीर जाणवा. ते शरीर पूर्वे कहेला वेशेषणे करीने सहित छे, एज कारण माटे तेमने अर्थे एटले ते कामभोगोने अर्थे कोण पुरुष पोताना जीवितने निष्फल करे? एटले जे डाह्यो पुरुष होय ते न करे " आ रीते कुमारे उत्तर आप्यो. त्यार पछी ते कुमारनां माता पिता, ए प्रकारे विषयने अनुकूल एवा बहु वचनोए करीने ते कुमारने लोभाववाने असमर्थ थया. पछी विषयने प्रतिकूल एवां, अने संजमना भयने देखाडनार एवां वचनोए करीने आ प्रकारे कहेतां हवां. "हे पुत्र! नैग्रंथ प्रवचनं कहेता वीतरागनुं कहेलुं एवुं सिद्धांत अथवा शासन ते सत्य छे कहेतां साचु छे, अने अनुत्तर कहेतां प्रधान छे. अने शुद्ध कहेतां दोष रहित छे. अने शल्यक-

त्तंन कहेता माया शल्य, नियाण शल्य, अने मिथ्यात्व शल्य, ए त्रण शल्यने नाश करनारु ठे अने मुक्तिनो मार्ग ठे अने सर्व दु खने नाश करनार एवु वीतरागनु कहेलु प्रवचन ठे ते प्रवचनमां एटले जैनशासनमां रहेला एवाज जीवो सिद्धिपदने वरे ठे एटले वीतरागनी आज्ञाना पालनार एवाज जीवो सर्व कर्मे करीने रहित थाय ठे परतु आ प्रवचन, लोढाना चणा चाववानी पेठे अतिशे दुष्कर ठे अने वेलुना कोलियानी पेठे स्वादे करीने रहित ठे. अने वे ज्जुजाउए करीने महोटा समुद्र तरवानी पेठे दुस्तर ठे एटले दु·खे तरवा जोग्य ठे अने वली आ प्रवचन ठे ते तीक्ष्ण खड्गादिने उल्लघन करवा जेवु ठे, तथा दोरडादिके करीने बाधेली एवी महाशिलादिक वस्तु तेने ह-स्तादिके करीने धारण करवा जेवु ठे तथा असिधारा व्रत सेवन करवानी पेठे, एटले जेम खड्गादि, अतिक्रमण करवाने अशक्य ठे, तेम आ महाव्रतनु पालवु अशक्य ठे. वली जैनशासनमा साधुउने आधाकर्मिक ओद्देशिकादि चोगवत्राने न कल्पे. एटले जैनना जे साधु होय ते पोताने वास्ते करेलु ए आ-

दिक बेतालीश दोष सहित वस्तु ग्रहण करे नही. अने हे पुत्र! तुं तो सदाय काल सुखमां उत्पन्न थएलो छु कोइ दहाको पण दुःखमां रह्योज नथी. एज कारण माटे तुं शीत कहेता टाढ अने उष्ण कहेतां घांम, क्षुत् कहेतां क्षुधा, पिपासा कहेतां तृषा, दंश कहेता डांस, मशक कहेतां मगतरां, अने नाना प्रकारना रोगादि रूप, परिषह, उपसर्गो प्रत्ये सहन करवाने समर्थ नथी. ते कारण माटे हमणा तने दीक्षा लेवाने अर्थे आज्ञा आपवाने अमे इछतां नथी. अर्थात् हमणा तने आज्ञा नही आपीए." त्यार पछी कुमार कहेतो हवो. "हे अंब! हे तात! तमे जे सजमनी दुष्करता देखाडी, ते दुष्करता खलु कहेतां निश्चे क्लिब पुरुषोने अने कातर पुरुषोने एटले कायर पुरुषोने अने कुत्सित पुरुषोने अने आ लोकने विषे प्रतिबंधवाला पुरुषोने एटले आ लोकमांज सुख मानी बेठेला तेवाओने, अने परलोकथी अवला मुखवाला थएला एवा लोकोने एटले परलोकना सुखना अजाण लोकोने, अने विषयनी तृष्णावाला लोकोने छे. एटले पूर्वे कहेला एवा लोकोने संजमनुं दुष्करपणुं लागे

ठे पण खलु कहेतां निश्चे धीर पुरुषने अने संसारना भयथी उद्विग्न थएला एवा पुरुषने दुष्कर नथी एटले संजम पालवो कठण नथी. ते कारण माटे हु तमारी आज्ञाए करीने हमणाज प्रव्रज्या लेवाने इछु छुं" त्यार पछी ते मा ता पिता फरीने कहेता हवा. "हे वाल! आटलो हठ तु न कर तु शुं समजे ठे?" त्यारे अतिमुक्तक कुमार कहेतो हवो "हे अंव! हे तात! जे हुं जाणुं छु तेज नथी जाणतो, अने जे नथी जाणतो तेज हु जाणु छु" त्यार पछी ते माता पिता कहेता हवा "हे पुत्र! आम केम वोले ठे?" त्यारे ते कुमार कहेतो हवो "हे माता पिताउ! हु जाणुं छु के, जे जनम्यो तेने जरूर मरवुं ठे परंतु एटलु नथी जाणतो के, ते क्यारे मरशे? अथवा किया स्थानमा मरशे? अथवा केवे प्रकारे मरशे? अथवा केटले काले मरशे? ए हु नथी जाणतो तथा हु नथी जाणतो के, किया कर्मोए करीने नरकादिकने विषे जीवो उत्पन्न थाय ठे? पण आटलु जाणुं छु के, पोताना करेलां कर्मोए करीने जीव नरकादिकोमा उत्पन्न थाय ठे" ए रीते कुमारे उत्तर आप्यो त्यार पछी तेनां

माता पिताउ ते कुमारने, संजमने विषे स्थिर चित्तवालो जाणीने महोटा आ च्छवे करीने निकलवानो महोटो उत्सव करतां हवां. ते अवसरे अतिमुक्तक कुमारे स्नान कहेतां नहावुं, अने विलेपन कहेता शरीरे चंदनादिकनो लेप करवो, अने वस्त्र आजरणादिकोए करीने शोजाव्युं छे शरीर ते जेणे एवो, अने माता पितादिक बहु परिवारे करीने परिवरेलो एवो, महोटी शिबिका मां (पालखीमा) बेसीने नाना प्रकारना वाजिंत्रनो शब्द थये सते ज्यारे नगर मध्ये थइने निकलतो हवो, त्यारे घणा द्रव्यना अर्थि जट्टादि लोको, मनोज्ञ वाणीए करीने आ प्रकारे आशिष देता हवा. के, "हे राजकुमार ! तुं धर्मे करीने अने वली तपे करीने कर्मरूप शत्रु प्रत्ये जीत. वली हे जगतने आनंदना करनार ! तहारुं कल्याण थाउ वली तुं उत्तम कहेता प्रधान एवा ज्ञान दर्शन चारित्रोए करीने न जीतेलां एवां इन्द्रियो प्रत्ये जीत अने अंगीकार करेलो एवो साधुनो धर्म ते प्रत्ये रूडे प्रकारे पाल वली तुं निर्विघ्नपणे करीने सिद्धि स्थानकने पाम्य. ए प्रकारे आशिष दीधी. त्यार पछी ते अतिमुक्तक कुमार

ए प्रकारे,जाचक लोकोए स्तवना करवा मांडेलो एवो, अने नगरना रहेनार नर नारीउए आदर सहित जोवा मांडेलो एवो, अने जाचक लोकोने वांछित दान प्रत्ये आपतो एवो, नगर थकी बहार निकलीने ज्यां श्री वीरस्वामीजीनुं समवसरण छे, त्यां आवीने शिविका थकी उतर्यो एटले पालखीथी हेठो उतर्यो त्यार पछी माता पिता, ते कुमारने आगल करीने श्री वीरस्वामीजीनी समीपे आवीने वंदनादि पूर्वक एटले वंदनादि नमस्कार करीने आ प्रकारे कहेता हुआ हे स्वामिन् ! आ अतिमुक्तक कुमार अमने वहालो छे, अने अमने मनोज्ञ छे, अने ए अमारे एकज पुत्र छे, परंतु जेम कमल, कादवने विषे उत्पन्न थाय छे, अने वली पाणीने विषे वृद्धि पामे छे, पण कादव अने पाणीए करीने लेपातु नथी, तेम आ अतिमुक्तक कुमार पण शब्द, रूप, ए बे लक्षण ते जेमनु एवा कामोने विषे उत्पन्न थयो छे, अने गंध, रस, अने स्पर्श ए त्रण लक्षण ते जेमनु एवा भोगोने विषे वृद्धि प्रत्ये पाम्यो छे, पण ते कामभोगोने विषे अने मित्र, ज्ञाति, स्वजन, संबंधि एवा लोकोने विषे लेपायो,

नथी अर्थात् ममताए करीने रहित ठे वली आ कुमार संसारना नये करीने उद्विग्न थयो सतो एटले विरक्त मनवालो थयो सतो आपनी पासे दीक्षा लेवाने इछे ठे ते कारण माटे अमे आपने आ शिष्य रूप निक्षा प्रत्ये आपीए ठीए. आप पण आ शिष्यरूप निक्षा प्रत्ये अगीकार करो. त्यारे स्वामिए कह्यु, हे देवानुप्रियो ! जेम तमने सुख उपजे तेम, पण प्रतिबंध करशो नही. एटले ममता करशो नही त्यार पठी अतिमुक्तक कुमार नगवंतनुं वचन सान्नलीने खुशी थयो सतो नगवंत प्रत्ये त्रण प्रदक्षिणा करीने अने नमस्कार करीने उत्तर पूर्व दिशिने विषे एटले ईशान कूणमा जइने पोतानी मेलेज आन्नरण माल्य अलकार प्रत्ये मूकतो हवो. ते अवसरे माता, उज्वल वस्त्रे करीने आन्नरणादिक प्रत्ये ग्रहण करीने आखो थकी आंसु मूकती थकी अतिमुक्तक कुमारने ए प्रकारे कहेती हवी हे पुत्र ! पामेला एवा संजम जोगोने विषे तहारे प्रयत्न करवो. अने न पामेला एवा संजम जोगोने पामवाने अर्थे घटना एटले रचना करवी. वली प्रवज्या पालवाने विषे पोताना पुरुष

पणानो अभिमान सफल करवो, अने प्रमाद तो करवोज नही ए प्रकारे कहीने त्यार पछी माता पिताउ जगवत प्रत्ये नमस्कार करीने परिवार सहित पोताने स्थानके गया त्यार पछी अतिमुक्तक कुमार, श्री वीरस्वामी समीपे आवीने वंदनादि करीने प्रव्रजित थयो त्यार पछी श्री वीरस्वामीए पण पंच महाव्रत ग्रहण कराववा पूर्वक एटले पंचमहाव्रत ग्रहण करावीने क्रिया कलापादि शीखवाने अर्थे गीतार्थ एवा स्थविर मुनियोने सुप्यो त्यार पछी प्रकृतिए करीने जद्रक एवो, अने विनीत एवो, अतिमुक्तक नामे कुमार श्रमण, एक दहाडो महोटी वृष्टि पडे सते एटले घणो वरसाद पडे सते काखने विषे पात्रु अने रजोहरण लेइने वहार निकल्यो त्या जलनो प्रवाह वहेतो देखीने वाल अवस्थाना वश थकी माटीए करीने पाल बांधीने जेम नावनो चलावनार नाव प्रत्ये चलावे छे, तेम आ अतिमुक्तक साधु पात्राने, आ महारी नाव छे, ए प्रकारे कल्पना करीने ते पाणीमां चलावतो सतो रमतो हवो ते अवसरे स्थविर मुनियो तेनी ते अतिशे अघटित चेष्टा देखीने ते साधु प्रत्ये

हाशी करता होय ने शू जेम! एम जगवंत् समीपे आवीने जगवतने ए प्रकारे पूछता हवा हे स्वामिन्! आपनो अंतेवासी अतिमुक्तक नामे कुमार श्रमण, केटला जवोए करीने सिद्धिपदने वरशे? त्यारे जगवंते कह्यु हे आर्यो! मह्रा रो अतेवासी अतिमुक्तक साधु, एज जवमा सिद्धिपदने वरशे ते कारण माटे हे रूमा पुरुषो! तमे अतिमुक्तक कुमार श्रमणनी जात्यादिकने उघाम्वा थकी हीलना न करशो अने तेनी उचित सेवा न करवे करीने निंदा न करशो अने मने करीने लोकनी समक्ष गर्हा न करशो. अने तेनी अवज्ञा न करशो वली हे देवानुप्रियो! ए अतिमुक्तक साधुने अखेदे करीने अंगीकार करो. अने अखेदे करीने तेनी सहाय्य करो तथा जात पाणी लावी आपवारूप विनये करीने एनी वैयावच्च करो जे कारण माटे आ मुनि, जवनो अंत करनारज छे. एटले ससारनो उछेद करनारज छे अने चरम शरीरवालो छे. एटले आ एने छेल्लु शरीर छे ए रीते ते ज्ञानवंत एवा स्थविर मुनियोने जगवते कह्युं त्यार पछी ते स्थविर मुनियो जगवतने वंदन नमस्कार करीने जगवं-

तना वचनने विनय पूर्वक अगीकार करीने अतिमुक्तक कुमार श्रमण प्रत्ये अखेदे करीने अगीकार करता हवा जावत् वैयावच्च प्रत्ये, करता हवा त्यार पछी अतिमुक्तक मुनि जे ते पण, ते पापस्थानने आलोचीने नाना प्रकारनी तपश्चर्यादिके करीने सजम प्रत्ये सम्यक् प्रकारे आराधन करीने अते अतकृत केवली थइ सिद्धि प्रत्ये जता हवा इति अतिमुक्तक मुनिनु वृत्तात जाणवु इहा अतिमुक्तक कुमारने ७ वर्षनी उम्मरमा दीक्षा आपी छे तेनु कारण के, भगवत पोतेज दीक्षा आपनार छे, माटे तेमा विरोध जाणवो नही

अद्य कल्ये परस्मिन् परतरस्मिन्वर्षे पुरुषाः चिंतयति अर्थसपत्तिं
अद्य कल्ल पर परारिं। पुरिसा चिंतति अठसपत्तिं ॥
अजलिगत इव तोयं गलत् आयु न पश्यति
अर्जलिगय वँ तोयं। गलंतंमाऽऽउ नै पिछति ॥५॥

अर्थ–(पुरिसा के०) पुरुष अर्थात् मूढ पुरुषो जे ते, (अद्य के०) आज (क

ह्नं के०) काल्य (परं के०) पहोर. एटले आवते वर्ष, (परारि के०) परास्य एटले तेथी पण आवते वर्ष, (अठ के०) अर्थ एटले धन तेनी, (सपत्ति के०) प्राप्ति तेने (चिंतति के०) चिंतवे छे एटले विचारे छे. अर्थात् आज मारे संपत्ति थशे, काल्य म्हारे सपत्ति थशे, पहोर महारे संपत्ति थशे, अथवा परार थशे; एवी आशाये करीने दिवस गमावे छे, परंतु ते पुरुष (अजलिगय के०) अंजलिने विषे रहेलु एवु (तोय व के०) पाणी तेनी पेठे (गलंतं के०) गलतुं. एटले स्त्रवतुं एवु (आउ के०) आउखाने (न पिछंति के०) नथी देखता ॥ ३ ॥

भावार्थ–वली ते मुढ पुरुषो मनमां एम विचारे छे के, महारे आज, काल्य, पहोर अथवा परास्य, धननी घणी प्राप्ति थशे. एम विचार कस्या करे छे परंतु हाथेलिमां रहेला पाणीनी पेठे क्षणे क्षणे नाश पामता एवा पोताना आउखानो विचार नथी करता ॥ ३ ॥

यत् कल्ये कर्त्तव्य तत् अद्य एव कुरुध्व त्वरमाणाः
जं कल्ले कायव्व । तं अज्जं चिय करेह तुरमाणा ॥

वहुविघ्न एव मुहूर्त्त मा अपराह्ण प्रतीक्षस्व

वहुविग्धो हुं मुहुत्तो । मा अवरएहं पमिरकेह ॥३॥

अर्थ–हे प्राणियो ! (ज के०) जे धर्मकार्य (कल्ले के०) काल्य (कायव्व के०) करवा योग्य होय, (त के०) तेने (अज्जचिय के०) आजज (तुरमाणा के०) उतावला (करेह के०) करो केमके, (मुहुत्तो के०) मुहूर्त्त एटले काल विशेष जे ते, (हु के०) निश्चे (वहुविग्धो के०) घणा विघ्नवालो ठे माटे जे धर्मकार्य पहेला पहोरमा करवानु होय तेने (अवरएह के०) अपराह्ण एटले पाठला पहोरे करीशु एम (मा पमिरकेह के०) विलंव न करो ॥ ३ ॥

जावार्थ–हे जव्य जीवो ! जे धर्म संवधी काम काल्य करवानु होय, तेने उतावलथी आजज करो केमके, सारा काम करवानी वखते, निश्चे घणा विघ्न आवी पमे ठे माटे जे धर्मकार्य पाठला पहोरे करवानुं होय, तेने पहेला पहोरमाज करी ट(?) अर्थात् जे धर्मकार्य, जे वखते करवु घटतुं होय, तेने तेज वखते करी ल्यो ॥ ३ ॥

हीतिखेदे संसारस्वभावस्य आचरण स्नेहानुरागरक्ता अपि

हीं संसारसहावं। चरिय नेहाणुरायरत्तावि ॥

ये पूर्वाह्ने दृष्टा ते अपराह्ने न दृश्यते

जे पुव्वण्हे दिट्ठा। ते अवरण्हे न दीसंति ॥४॥

अर्थ-(संसार सहाव चरिय के०) संसारनो जे स्वभाव, तेनु जे आचरण, तेने देखीने हमने, (ही के०) घणो खेद थाय छे केमके, (जे के०) जे (नेहाणुरायरत्तावि के०) स्नेहना अनुरागे करीने रक्त एवा पण, अर्थात् प्रेम बंधने करी बंधायेला एवा पण, स्वजनादिक जे ते (पुव्वण्हे के०) प्रात कालने विषे (दिट्ठा के०) दीठा, (ते के०) तेज (अवरण्हे के०) सांझे (न दीसंति के०) नथी देखाता ॥४॥

भावार्थ-ही इति खेदे!! अहह!!! अहो! आ संसारनो श्यो स्वभाव छे? के, जेना स्वभावनो विचार करतां तरतज खेद उत्पन्न थाय छे!! केमके, जे परस्पर प्रेमबंधने करीने गाढां बंधायेला छे, तेवां स्वजनादिक पण जे प्रात. काले दीठां होय, तेना तेज, स्वजनादिक सांझे देखातां नथी!! एटले स्नेहा

नुरागे करीने गाढपणे बधायेलाने परस्पर विजोग न पम्वो जोइए, तोपण सं सारनो एवो स्वज्ञाव ठे के, जे प्रथम क्षणमा दीतु, ते बीजा क्षणमा तेवुने तेवु नथी देखातु, माटे तेमनो निजोग थाय ठे एटलुज नहिं पण स्थूल वि-जोग पण थया करे ठे ॥ ४ ॥

मा स्वपिथ जागरितव्ये पलायितव्ये कस्मात् विश्राम्यथ

मा सुअह जग्गिअव्वे । पलाइअव्वंमि कीस वीसमेह ॥

त्रय' जना. अनुलग्ना' रोगः च जरा च मृत्यु' एव

तिन्नि जणा अणुलग्गा । रोगो अ जरा अ मच्चू अ ॥५॥

अर्थ–हे लोको! (जग्गिअव्वे के०) जागवाने ठेकाणे अर्थात् धर्म कृत्यने विषे (मा सुअह के०) न सूइरहो अर्थात् धर्म कृत्यने विषे प्रमाद न करो अने (पलाइअव्वमि के०) नासवानी जग्याए (कीस के०) केम (वीसमेह के०) वि-सामो करो ठो? अर्थात् आ ससार नासवानी जग्या ठे, तो तेमा निराते केम वेसी रह्या ठो? केमके, (रोगो के०) रोग (अ के०) वली (जरा के०) वृद्धावस्था

(अ के०) वली (मच्चू के०) मृत्यु (अ के०) एज (तिन्नि जणा के०) त्रण जण जे ते (अणुलग्गा के०) तमारी पूंठे लाग्या छे. एटले तमारी केडे पड्या छे माटे धर्मकृत्यमां प्रमाद न करो ॥ ५ ॥

भावार्थ—हे धर्मार्थि जीवो ! जेम आ ठेकाणे लोकोक्ति एवी छे के, जेनी पासे धन होय, तेमणे लुंटवानी जग्याए जागता रहेवु, अने नासवानी जग्याए वेसी न रहेवु, तेम धर्मकृत्यने विषे प्रमाद न करवो अने नासवा योग्य एवो जे संसार तेमा वेसी न रहेवुं. शाथी के, रोग, जरा, अने मृत्यु ए त्रण दुश्मनो तमारी पूठे निरंतर पकेवाज छे, माटे प्रमाद छोडीने धर्म करणीमा सावधान रहो. ॥ ५ ॥

दिवसनिशाघटीमालया आयुःसलिलं जीवानां गृहीत्वा
दिवसनिसाघडिमालं । आउसलिलं जीओण घित्तूण ॥
चंद्रादित्यबलीवर्दौ कालएवअरहट्टस्तं भ्रामयतः
चंदाइच्चवइल्ला । कालरहट्टं भमाडंति ॥ ६ ॥

अर्थ-(चदाइच्च के०) चद्र सूर्यरूप (वइल्ला के०) वलद जे ते (दिवस निसा घडिमाल के०) दिवस रात्रि रूप घडानी श्रेणियो वडे (जिआण के०) जीवनुं (आउ के०) आउखा रूप (सलिल के०) पाणीने (घित्तूण के०) ग्रहण करीने (कालरहट्ट के०) काल रूप रहेंटने (नमाडति के०) उचे नीचे नमावे ठे अर्थात् उचे नीचे फेरवे ठे ॥ ६ ॥

नावार्थ-चद्र अने सूर्य ए रूप धोलो ने रातो एवा घणा वलवान् वे वलद जे ते दिवस अने रात्रि ते रूप लाल ने काला घडानी श्रेणियोवडे, जीवोनु आउखा रूप पाणीने उलेची नाखवाने, काल रूप रहेंटने फेरवे ठे, माटे हे नव्य प्राणियो! आवु नजरे जोइने पण तमने ससार उपरथी उदास नाव केम नथी थतो? ॥ ६ ॥

सा नास्ति कला - तत् नास्ति औषध तत् नास्ति किमपि विज्ञान शिल्प

सा नंत्थि कला तं नंत्थि । उसंह तं नेत्थि किंपि विन्नाणं ॥

येन ध्रियते कायः खाद्यमानः कालसर्पेण

जेण धरिज्जइ काया । खज्जंती कालसप्पेणं ॥ ७ ॥

अर्थ–हे भव्य जीवो! (काल सप्पेणं के०) काल रूप सर्पे (खज्जंती के०) खावा मांफेली एवी (काया के०) देह जे ते (जेण के०) जेणे करीने (धरिज्जइ के०) धारण करीए. अर्थात् रक्षा करीए. (सा के०) ते. अर्थात् तेवी (कला के०) बहोतेर कला माहिली कोइ पण कला (नत्थी के०) नथी (तं के०) ते. अर्थात् तेवु (उसहं के०) ओषध (नत्थि के०) नथी. (त के०) ते. अर्थात् तेवुं (किपि के०) काइ पण (विन्नाणं के०) विज्ञान. अर्थात् शिल्प चातुरी (नत्थि के०) नथी. अर्थात् पकता शरीरनी रक्षा करे, एवी काइ पण वस्तु नथी. ॥ ७ ॥

भावार्थ–काल रूप सर्प, आ शरीरनु भक्षण करी ले छे, ते कालरूप सर्पने निवारण करे एवी कोइ पण कला नथी. तथा काल रूप सर्पे भक्षेली कायानुं फेर उतारवा समर्थ कोइ पण ओषध नथी, तथा जगतमां अनेक प्रकारनी शिल्प चातुरी छे, पण कोइ शिल्प चातुर्य एवुं नथी के, जेथी काल रूप

सर्पनु झेर लागेज नहीं माटे हे जव्य प्राणियो! मोटा मोटा समर्थ पुरुषोनां वज्र समान शरीरने पण काल रूप सर्प गली गयो छे, तो आपणा रांक जेवानी काची कायानो श्यो जरुसो? माटे शीघ्रपणे धर्मकृत्य करी ल्यो ॥७॥

दीर्घफणीन्द्रएवनाले महीधराएवकेसरे दिशएवमहादले

दीहरफणिंदनाले । महिहरकेसर दिसामहदलिल्ले ॥

ठ इतिपश्चात्तापे पिबति कालएवभ्रमरः जनाएवमकरंद पृथ्वीएवकमले

ठे पीअइ कालजमरो । जणमयरंदं पुहविपउमे ॥ ८ ॥

अर्थ—(ठ के०) ठ इति खेदे! एटले आ घणी खेदकारक वार्त्ता छे. अर्थात् आ वात जे न जाणे तेने पश्चात्ताप घणो थाय छे (काल जमरो के०) कालरूप भ्रमर जे ते (दीहर के०) दीर्घ एटले महोटु (फणिंदनाले के०) शेषनागरूप छे नाल ते जेनु एवु, ने (महिहर केसर के०) महिधर एटले पर्वत ते रूप छे केसरा ते जेने विषे एवु, ने (दिसा महदलिल्ले के०) दिशा रूप छे महोटां पत्र ते जेने विषे एवु (पुहवि पउमे के०) पृथ्वीरूप कमलने

विपे परिभ्रमण करता एवा, ने (विविहकम्मवसगाण के०) नाना प्रकारना कर्मने वश थएला एवा (जीवाण के०) जीवोने (ससारे के०) ससारने विपे (ज के०) जे (सविहाण के०) सविधान, अर्थात् एकेंद्रियादिक नेद (न सभवइ के०) प्राप्त थयेलो नथी सनवतो एम, (त नत्थि के०) ते नथी अर्थात् सर्वे एकेंद्रियादिक नेद ए जीवने थएला सनवे छे ॥ १० ॥

नावार्थ–काल, कर्म, जीव, अने ससार ए सर्वेनु अनादिपणु छे, माटे आ जीव कर्मना वशे करीने अनादि कालनो कालचक्रने विपे परिभ्रमण करता करता ससारने विपे सघला एकेंद्रियादिक नेदने पामी चूक्यो छे पण एवु न कही शकाय के, अमुक नेद नथी पाम्यो माटे हे नव्य प्राणियो! आज तमे अहकार करो छो, पण तमे तो केटलीएक वखत गधेडा पण थया छो, कूतरा पण थया छो, अने वली ज्यारे चोर मूजा मोगरी आदिकनी जातिमा उत्पन्न थया त्यारे तो तमने न्हाना छोकराए पण दाणा साटे वेचाथी लीधा, एटलुज नही पण उपर माग्यामा पण गया यावत् निष्ठाने विपे की-

आपणे पण उत्पन्न थइ चूक्या गो. तेना तेज तमे, आज शेठ शाहूकार बनीने बेठा गो. माटे तमे सर्व प्रकारनु मान मूकीने धर्मकार्यना प्रवर्त्तो. ॥ १० ॥

॥ अनुष्टुप्वृत्तम ॥

बांधवाः सुहृदः सर्वे मातापितरौ पुत्रनार्याः
वंधवा सुहिणो सवे । पिअमाया पुत्तनारिया ॥
प्रेतवनात्श्मशानात् निवर्त्तते दत्त्वामृतमति सलिलाजलिं
पेअवणाउ निअत्तति । दाऊण सलिलंजलिं ॥ ११ ॥

अर्थ–(सवे के०) सर्व एवा (बधवा के०) बांधव (सुहिणो के०) सुहृद एटले मित्रो तथा (पिअमाया के०) माता पिता (पुत्तनारिया के०) पुत्र तथा स्त्री, ते सर्व जे ते, मरी गयेला मनुष्य प्रत्ये (सलिलजलिं के०) पाणीनी अजलीने (दाऊण के०) आपीने (पेअवणाउ के०) श्मशान थकी (निअत्तति के०) पाठा घेर आवे ठे. पण मरेला मनुष्यनी सगाथे कोइपण मनुष्य जता नथी ॥११॥

नावार्थ–हे जीव ! आ सघला देहना संबंधि ठे, पण ए कोइ तहारु

सवधि नथी केमके, स्वजन तथा मित्रो, माता, पिता, पुत्र, अने स्त्री ए कोइ माणस तह्हारा सगा नथी केमके, जे देहनी सगाथे तेमने सवध हतो, ते देहने बाली कूटीने पठी पाणीनी अजली आपीने अर्थात् ते फरीथी पाठा घेर आववाना नथी एवी आशा मूकीने श्मशान थकी पोत पोताना स्वार्थने सजारता पाठा पोत पोताने घेर जाय ठे पण तेमानु कोइ वहालु सगु ते जीवनी साथे जतु नथी. ॥ ११ ॥

॥ आर्यावृत्तम् ॥

वियुज्यते वियुज्यते सुता विघटते बाधवा. वल्लभाः च विघटने

विहमति सुआ विहमति । बंधवा वल्लहा य विहमति ॥

एकः कथमपि न विघटत धर्मः हे आत्मन् जिनभणित

इक्को कहवि न विहमइ । धम्मोरे* जीव जिणभणिउ ॥१२॥

* इहा हे एवु सबोधन न मुकता रे एवु जे अधम सबोधन मुक्यु ठे तेनु ए प्रयोजन ठे के, आ जीवने धर्म विना कोइ पण सहाय्यकारी नथी तोपण तेने मूकीने अज्ञानताथी बीजाने सहाय्यकारी मानी बेठो ठे माटे

अर्थ-(रे जीव के०) हे अज्ञानी जीव! (सुआ के०) पुत्र तथा पुत्रीयो जे ते (विहरुति के०) विघटे छे अर्थात् तेनो विजोग थाय छे तेज रीते (बधवा के०) स्वजन जे ते (विहरुति के०) विघटे छे अर्थात् स्वजननो पण विजोग थाय छे (य के०) वली (वल्लहा के०) वहाली स्त्रीयो पण (विहरंति के०) विघटे छे. एटले तेनो पण विजोग थाय छे एज रीते सर्व वस्तुउनो विजोग थाय छे, पण (इक्को के०) एक (जिणजणिउ के०) जिनपरमात्माये कहेलो (धम्मो के०) धर्म जे ते (कहवि के०) क्यारे पण (न विहरुइ के०) वियोग पामतो नथी ॥ १२ ॥

भावार्थ-हे मुग्ध जीव! तु विचार करव के, आ संसारमा तहारुं कोण छे? केम के, पुत्र, स्वजन, अने वहाली स्त्रीयो इत्यादिक सर्वेनो विजोग थाय छे एटले तेमने मूकीने तु जइश, अथवा तने मूकीने ते जशे माटे ज्या संयोग छे, त्यां निमाये वियोग छेज. पण एक जिनराजनो कहेलो धर्म एटले जीवने दुःखमा पडतां धरी राखे माटे धर्म कहीए, ते धर्मनो कोइ काले पण

विजोग नथी यतो अर्थात् आ जीवने साचु सगपण तो धर्मनुज छे अने बीजु सर्वे सगपण फोगट छे ॥ १२ ॥

अष्टकर्माण्येव पाशास्तैर्बद्धः जीव संसार एव चारके बंदिगृहे तिष्ठति

अठ्ठकम्मपासबद्धो । जीवो संसारचारए ठाइ ॥

अष्टकर्मपाशमुक्त आत्मा शिवमंदिरे तिष्ठति

अठ्ठकम्मपासमुक्को । *आया सिवमंदिरे ठाइ ॥ १३ ॥

अर्थ–हे आत्मन्! (अठ्ठकम्मपासबद्धो के०) आठ कर्म रूप पासे बंधाणो एवो (जीवो के०) प्राणी जे ते (संसारचारए के०) संसार रूप बंधिखानाने विषे (ठाइ के०) रहे छे. ने (अठ्ठकम्मपासमुक्को के०) आठ कर्मरूप पासथी मूकाएलो एवो (आया के०) आत्मा जे ते (सिवमंदिरे के०) मोक्ष म-

* आ जीव ज्यांसुधी कर्म वडे बंधायेलो छे, त्यां सुधी एने महात्मा पुरुषो जीव कहे छे अने जेम जेम कर्मथी मूकातो जाय छे, तेम तेम तेने आत्मा कहीने बोलावे छे तेवी वात जणाववाने माटे आ गाथामां जीव तथा आत्मा एवा बे शब्दो मूकेला छे

दिरने विषे (गाइ के०) रहे ठे एटले एक समयमां बीजा क्षेत्रनें न स्पर्श करतो मोक्षने पामे ठे ॥ १३ ॥

भावार्थ—हे जीव ! तु विचार कस्य के, आ जगत्मां एक पास वमे बधायेलो मनुष्य पण मूकाइ शकतो नथी, तो, तुतो आठ कर्म रूप आठ पास वमे बधायेलो छु, ने तेमा वली संसाररूप बंधिखानाना घरमां पड्यो छुं तोपण तेमा मिथ्या सुख मानी बेठो छु, पण तेमाथी निकलवानो उद्यम नथी करतो, पण ज्यारे ज्यारे, तेमाथी निकलवानो उद्यम करीनें ज्यारे आठ कर्म रूप पासने तोमीश, त्यारेज तु मोक्ष मदिरमा जईश पण ते विनातो तने अविनाशी सुख क्यारे पण मलवानु नथी. ॥ १३ ॥

विभवः सज्जनसगः विषयसुखानि विलासललितानि

विहवो सज्जणसंगो । विषयसुहाइं विलासलंलिआइं ॥

नलिनीदलाग्रेऽघोलनशीलः जललव इव परिचंचल सर्वं

नलिणीदलग्गघोलिर । जललवपरिचंचल सव्वं ॥ १४ ॥

अर्थ-(विहवो के०) विजव एटले लक्ष्मी जे ते, तथा (सजणसंगो के०) माता, पिता, जाई, जार्या, इत्यादिकनो जे संबंध ते, तथा (विलास के०) विलासे करीने (ललिआइ के०) सुंदर एवा (विसय सुहाइ के०) विषय सुख (सव्व के०) ए सर्वे जे ते (नलिणी के०) कमलिनी (पोयणी) तेना (दलग्ग के०) पानकाना अग्र जागने विषे (घोलिर के०) घुमरातु अर्थात् रहेलु एवु (जललव के०) पाणीनो बिंदु तेना जेवु (परिचंचल के०) अतिशे चंचल छे. अर्थात् अल्प वायुथी पण शीघ्रपणे पडी जाय तेवु छे ॥ २४ ॥

जावार्थ-आ जीवे मानी लीधेला एवां जे सुखकारी पदार्थ, जेवा के, लक्ष्मी, सगां, संबंधी, तथा अनेक प्रकारना विलासे करीने शोजतां एवां पंच विषयनां सुख ए सर्वे अतिशे चंचल छे जेम कमलना पानकाना अग्र जागमा रहेलु पाणीनु टीपु थोडी वारमा स्वजावेज नाश पामे छे, तेम ते सघलु सुख पण थोडा कालमा हतु नहोतु थइ जाय छे माटे हे जीव! एवा अतिशे अस्थिर विषयसुखने विषे तु शु आसक्त थाय छे! ॥ २४ ॥

तत् कुत्रगत बलं तत् कुत्र यौवनं अगस्य चंगिमा शोभा कुत्र

तं कत्थ बलं तं कत्थ । जुव्वणं अंगचंगिमा कत्थ ॥

सर्व अनित्य पश्यत दृष्ट पूर्वं नष्ट पश्चात् कृतान्तेन कृत्वा

सव्वमणिच्चं पिच्छह । दिठ्ठंनठ्ठं कयंतेणं ॥ १५ ॥

अर्थ–हे प्राणियो! (तं के०) ते (बल के०) शरीरनु बल (कत्थ के०) क्यां गयुं? वली (त के०) ते (जुव्वणं के०) जवानीपणु (कत्थ के०) क्यां गयुं? वली (अंगचंगिमा के०) शरीरनुं सुंदरपणु (कत्थ के०) क्यां गयुं? ते हेतु माटे (कयंतेण के०) काले करीने (दिठ्ठनठ्ठं के०) प्रथम दीठुं, ने पछी नाश पाम्युं एवुं, (सव्व के०) सर्व वस्तु (अणिच्च के०) अनित्य एवाने (पिच्छह के०) अवलोकन करो. अर्थात् विचारी जुओ ॥ १५ ॥

भावार्थ–केटलाएक पुरुषोने प्रथम जवानीपणामां घणा बलादिके सहित जोइने पछी तेमने वृद्ध अवस्थाना अति निर्बल जोइने उपदेश करे छे के, हे प्राणिन्! तारी जवानीपणानी शोभाये सहित शरीरनुं बलादिक क्यां

गयु? अहो! काले करीने हतु नहोतु थइ गयु!! माटे सर्व वस्तु अनित्य छे, एम जाणी रात्रि दिवस करवा मांडेली एवी शरीरनी शुश्रूषा तेने छांडी करो केमके, तमे गमे तेटलु द्रव्यादिकनु खरच करीने शरीरनी साचवणी करो, तोपण ते शरीरनी जवानी कदि काले तेवीने तेवी रहेवानी नथी माटे जेनी सेवा निष्फल न जाय, एवा धर्मनी सेवामा तत्पर थाओ. ॥ १५ ॥

धनानि कर्माण्येव पाशास्तैर्बद्ध भव एव नगरचतुष्पथानि तेषु विविधा

घणकम्मपासबद्धो । भवनयरचउप्पहेसु विविहाओ ॥

प्राप्नोति विडम्बना. जीव क अत्रमसारे शरण तस्य

पावइ विडम्बणाओ । जीवो को इत्थ सरणं से ॥ १६ ॥

अर्थ–(घणकम्मपासबद्धो के०) निबिड कर्मरूप पासाए एटले गाठ्योए बधायेलो एवो (जीवो के०) जीव जे ते (भवनयर के०) ससाररूप नगरना (चउप्पहेसु के०) चौटाने विषे अर्थात् च्यार गतिरूप चौटाने विषे (विवि-हाओ के०) अनेक प्रकारनी दुःखदाइ एवी (विडम्बणाओ के०) विटबनाने (पा

वइ के०) पामे छे ए हेतु माटे (इह के०) ए संसारने विषे (से के०) ते प्राणीने (को के०) कोण (सरण के०) रक्षण करनार छे? अर्थात् कोइपण नथी ॥ १६॥

भावार्थ–हे प्राणिन्! आ जीव घणा कर्मरूप पासबंधथी बंधायेलो एवो सतो च्यार गतिरूप संसारना चोगानमां (चौटामां) अनेक प्रकारनी शरीरने तथा मनने दुःखदायक बंधनादिरूप विटंबनाने पामे छे, त्यां तने रक्षण करवा कोण समर्थ छे? अर्थात् ते जीवनी रक्षा करनार धर्म वीना बीजु कोइ पण समर्थ नथी ॥ १६ ॥

घोरे गर्भवासे जठरद्रव्यसमूह एव जंबालः कर्दमस्तेनाशुचिबीभत्से

घोरंमि गब्भवासे । कलमलजंबालअसुइबीभच्छे ॥

उषितः स्थितः अनंतकृत्वोऽनंतवारान् जीवः कर्मानुभावेन

वसिओ अणंतखुत्तो । जीवो कम्माणुभावेण ॥ १७ ॥

अर्थ–(जीवो के०) जीव जे ते (घोरंमि के०) घोर एटले भयानक एवो (कलमल के०) पेटमां रहेला द्रव्यनो (पदार्थोनो) समूह ते रूप (जंबाल

वै० २७

के०) कादव तेणे करीने (असुइ के०) अशुचि जरेलो एवो, ने (बीजछे के०) बीजत्स कहेता कमकमाट जरेलो एवो (गप्रवासे के०) गर्जवासने विषे (कम्माणुजावेण के०) शुजाशुज कर्मना प्रजावे करीने (अणत खुत्तो के०) अनतीवार (वसिज के०) रहेलो ठे, पण ते डुःखने नूली जइने फरीथी अनती वार गर्जवासमा डुःख जोगववु पके, एवु कृत्य करे ठे परतु फरीथी गर्जवासमा न आववुं पके, एवो उद्यम नथी करतो ए घणु आश्चर्य ठे ! ॥ १७ ॥

जावार्थ–हे महामुग्ध प्राणिन् !! आ ससारमा सारा माणसनी एवी रीत ठे के, जे जग्याए घणुज डुःख पडयु होय, ते जग्याए फरीथी न जाय पण आ जीवनो तो एवो अवलो स्वजाव ठे के, तेज जग्याए वारवार जवाय एवो उपाय कर्या करे ठे, पण ते थकी विराम नथी पामतो तेने जोइने ज्ञानी पुरुष उपदेश करे ठे के, गर्जवासमा घणुज कष्ट ठे के, जेनुं वर्णन पण बरोबर थइ शकतुं नथी. तोयपण इहा यत्किंचित् कहीए ठीए ते गर्जवास अनेक प्रकारना मलमूत्रनी डुर्गंधथी जरपूर ठे. के, जेमां सारी हवा आव-

श०

वानो तो लेशमात्र रस्तोज नथी. ने अनेक प्रकारना सूक्ष्म जंतुउ ते गर्जना कोमल शरीरने घणी वेदना उपजावे ठे ने, ते गर्जने नाशी जवानी जग्या नथी मलती, तेथी वारवार मूर्छा खाइ तेनी ते वेदना सहन करे ठे वली त्यां अनेक प्रकारनी रूधण थाय ठे तेनी वेदना, तथा जठराग्निथी थयेली उष्ण वेदना, इत्यादिक कमकमाट जरेली अनेक वेदनाउने सहन करतो उधेमाथे नवमास सुधी टटलतो हतो माटे हे जीव! ते डुःखना दिवस ते अनती वार जोगव्या तोपण तुं केम जूली जाय ठे? अने फरीथी पागं तेनां तेज डुःख पामवाना उपाय केम कस्या करे ठे? ॥ १७ ॥

चतुरशीति. किल लोके शास्त्रे योनीना प्रमुखानि शतसहस्राणि लक्षाणि विद्यते

चुलसीइ किर लोए । जोणीण पमुहसयसहस्साइं ॥

एकैकस्या योनौ च जीव. अनतकृत्वः समुत्पन्न

इक्किक्किम्मि अ जीवो । अणंतखुत्तो समुप्पन्नो ॥ १८ ॥

अर्थ–(लोए के०) लोकने विषे (जोणीण के०) जीवनी उत्पत्तिनां स्थानक

(तुलसीइ के०) चोराशी (पमुह के०) प्रमुख (सय सहस्साइ के०) लाख, एटले चोराशी शब्दने प्रमुख कहेता अग्रेसर करीने लाख शब्द जोडवो अर्थात् चोराशी लाख, जीवने उपजवाना स्थानक छे (फिर के०) निश्चे. एटले ए वात शास्त्रमा कहेली छे ते चोराशी लाख योनिने विषे (जीवो के०) जीव जे ते (इक्किक्कम्मि के०) एकेक योनिने विषे (अ के०) वली (अणतखुत्तो के०) अनंतीवार (समुप्पन्नो के०) उत्पन्न थयो छे ॥ १८ ॥

भावार्थ—हे जीव ! तुं चोराशी लाख जीवाजोनीने विषे अनंतीवार भ्रमण करी आव्यो छु ने, ते ते जीवाजोनीने विषे अनेक प्रकारना छेदन भेदनना दुःख, तें अनंतीवार सहन कर्यां, तोयपण ते उत्पत्तिस्थानमाथी कटालो पामीने, धर्मकृत्य करवाने विषे तुं प्रीति केम जोडतो नथी ? ॥ १८ ॥

मातापितृबंधुभि संसारस्थै पूरित लोकः

मायापियवधूहिं । संसारत्थेहिं पूरिओ लोओ ॥

बहुयोनिनिवासिनि' नच ते त्राण पुन' शरण पुनः

बहुजोणिनिवासीहिं । नंय ते ताण चँ सरंणं वें ॥ १ए ॥

अर्थ–(ससारहोहिं के०) ससारने विषे रहेलां एवा, ने (बहुजोणी के०) घणी एवी योनि एटले चोराशी लाख योनि, तेने विषे (निवासीहि के०) निवास करीने रहेला एवां (मायापियबधुहि के०) माता पिता ने बधु, तेमणे करीने (लोउं के०) लोक जे ते (पूरिउं के०) पूरेलो ठे. (ते के०) ते सर्वे (च के०) वली ताहरु (ताण के०) रक्षण करनार, अने (च के०) वली ताहरे (सरण के०) शरण करवा योग्य (नय के०) नथीज केमके जे पोतेज बधनमां पड्या होय, ते सामाने बधनथी शी रीते ठोमावे? ॥ १ए ॥

जावार्थ–हे जीव! आ जगत्मां रहेला सर्वे जतु कदाचित् तहारु पालण पोषण करवा माटे, माता, पिता तथा बधुरूपे थया ठे, ने तेमणे करीने आ सर्व लोक पूरेलो ठे, परंतु ते सर्वेथी पण आज सूधी तहारु रक्षण थइ शक्यु नथी. माटे ते ताहरे शरण करवा योग्य पण नथी. कारण के, संसारना महा

ड स्वरूप प्रवाहमा खेंचाता प्राणियोने, जेमा सारो कर्णधार (नावनो चलाव-नार) छे, एवी नौका (नाव) रूप जिनधर्म जे तेज, शरण करवा योग्य तथा ग्रहण करवा योग्य छे, पण माता पितादिक शरण करवा योग्य नथी ॥ २ए ॥

जीव व्याधिविलुप्तः सफरो मत्स्य इव निर्जले आकुलीभवति

जीवो वाहिविलुत्तो । सफरो इव निज्जले तम्फम्फई ॥

सकल अपि जन पश्यति क शक्तोऽस्ति वेदनाविगम

सयलो वि जणो पिच्छइ । को सक्को वेअणाविगमे ॥३०॥

अर्थ–(वाहि के०) व्याधिये करीने (विलुत्तो के०) उपद्रवालो एवो (जीवो के०) जीव जे ते (निज्जले के०) जल रहित प्रदेशने विषे (सफरो इव के०) माछलानी पेठे (तम्फम्फई के०) तरफडे छे, एटले आकुल व्याकुल थाय छे ते प्रकारना रोगे करीने पीडाता प्राणीने (सयलो वि के०) सकल एवो पण (जणो के०) जन एटले लोक जे ते (पिच्छइ के०) देखे छे. परंतु ते जीवनी (वेअणाविगमे के०) वेदनानो नाश करवाने विषे (को के०) कोण पुरुष (स-

को के०) समर्थ होय? अपितु कोइ पण समर्थ न होय ॥ २० ॥

भावार्थ–आ जीव अनेक प्रकारना व्याधि वडे ग्रस्त थइने ज्यारे जलविनाना माछलानी पेठे तरफडे छे, ते वखत हे मा! हे बाप!! इत्यादिक सामाने अतिशे करुणा उत्पन्न थाय एवा पोकार करे छे, त्यारे तेनी वेदनाने लेशमात्र ओछी करवाने कोइ पण समर्थ थतु नथी उलटा तेना मनने बीजी वेदना उत्पन्न थाय, एवी रीतना करुणा भरेला शब्दो वापरीने अने औषधादिकना घणा खरचमा नाखीने अने आंखोमा आंसु लावीने, उलटा तेने वधारे गभरामणमां नांखे छे, अने पोते ज्यारे निराश थाय छे, त्यारे निसासा मूकीने छेवटे तेने धर्मनुं शरण बतावे छे, पण तेमांथी कोइथी काइपण दुःख लइ शकातुं नथी माटे हे जीव! परिणामे धर्मनुं शरण तो करवुज पडे छे, तो प्रथमथीज तु धर्मनु शरण कर्य कारण के जे धर्मना प्रभावथी तहारे फरीथी एवु दुःख भोगववु पडे नही, माटे तेवा धर्मने कर्य. ॥ २० ॥

मा जानीहि हे जीव त्वं पुत्रकलत्रादि मम सुखहेतुर्भविष्यति

मा जाणसि जीव तुमं । पुत्तकलत्ताइ मज्झ सुहहेऊ ॥

निपुण गाढ बंधन एतत् संसारे संसरताम्

निउणं बंधणमेयं । संसारे संसरंताणं ॥ २१ ॥

अर्थ-(जीव के०) हे प्राणिन्! (पुत्तकलत्ताइ के०) पुत्र तथा स्त्री इत्यादिक जे ते (मज्झ के०) म्हारे (सुहहेऊ के०) सुखनु कारण थशे, एम (तुम के०) तु (मा जाणसि के०) न जाणीश केमके, (संसारे के०) संसारने विषे (संसरताणं के०) नरक तिर्यंच इत्यादि रूपे भ्रमण करता एवा जीवोने (एय के०) ए पुत्र कलत्रादिक जे तेज, उलटा (निउणं के०) अतिशे गाढ एवा (बंधणं के०) बंधनरूपे थाय छे ॥ २१ ॥

भावार्थ-अरे रे जीव! त्हारी शी विपरीत बुद्धि थइ छे? के, दुःखनु कारण छे, तेनेज तु, एकाते सुखनु कारण मानी बेठो छु! केमके, संसारने विषे स्त्री पुत्रादिक एज म्होटु बंधन छे ते बंधनने तुं एम जाणे छे के, एथी म्हारे

सुख थशे, परंतु तेथी कदि॰पर्ण तहारे सुख थवानुं नथी, कारण के, तेमने विपे गाढ प्रीति राखवाथी नरकने विपे जवु पके ठे तथा तिर्यंच गतिने विपे गधेका कूतरादिकना नि शकपणे विपय जोगववाना अवतार धरवा पके ठे अने त्या त्या अनेक प्रकारनां दुःख सहन करवां पके ठे. तेनु कारण एज ठे के, आ महारी स्त्री, आ महारो पुत्र, इत्यादिक ममत्वजाव करवाथी एवा फल मळे ठे ने आ जवमा तेनु पालन पोपण करवामा रात्रि दिवस गमावे ठे पण एम विचार नथी करतो के, आज वधो दिवस गयो, तथा आज वधी रात्री गइ, पण तेमा केटली घमी में महारा आत्मानु साधन कर्यु? एवो विचार तुं केम नथी करतो? ॥ २१ ॥

जननी जवानरे जायते जाया स्त्री जाया माता पिता च पत्र. चकारात्पुनःपिता

जणणी जायइ जाया । जाया माया पिया य पुत्तो य ॥

अनवस्थाऽस्ति ससारे कर्मवशात् सर्वजीवाना

अणवत्था ससारे । कम्मवसा सव्वजीवाणं ॥ २२ ॥

छे, माटे केवल तेमनेज माटे पोतानु धर्मध्यान चूकवु, ते ठीक नही ॥ २२ ॥

आ बावीशमी गाथामा आ जीवने जवांतर आश्रीने अनेक प्रकारना सवध थाय छे, एम कह्यु परतु आने आ जवमाज अनेक प्रकारना सवध थया छे, तेनी कथा नीचे प्रमाणे जाणवी

॥ कथा ५ ॥

मथुरा नगरीने विषे कुबेरसेना एवे नामे एक गणिका (वेश्या) रहेती हती ते एक दहानो पोताने गर्भ उत्पन्न थवा थकी अतिशे खेद पामी, त्यारे तेनी माता कुट्टिनी, तणीए तेने खेदवाली जोइने, तेनी पीमा दूर करवाने अर्थे वैद्यने बोलाव्यो. ते वैद्ये नामी जोइने तेने रोगरहित जाणीने ए प्रकारे कह्यु के, आना शरीरमां कोइपण रोग नथी फक्त पेटने विषे पुत्र पुत्रीरूप जोमलुं उत्पन्न थयु छे. ए कारण माटे एने खेद वर्ते छे. त्यार पछी वैद्यने विदाय करीने ते कुट्टिनी, पुत्री प्रत्ये कहेती हवी. आ गर्भ तहारा प्राणनो नाश करनारो छे, ते कारण माटे राखवा जोग्य नथी. एतो पाकवा जोग्य छे. ते अ-

वसरे वेश्या कहेती हवी क्लेश (दुःख) पण सहन करीश, परंतु मारा गर्भने कुशल रहो एम कहीने पछी ते वेश्याए गर्भने वेदना सहन करीने अवसरे पुत्र पुत्रीरूप जोड्लु प्रसव्यु त्यारे वली कुट्टिनी कहेता तेनी मा, कहेती हवी हे पुत्री! आ छोकरानुं जोड्लु तहारा जवानीपणाने नाश करनारु थशे, ए कारण माटे आ जोड्लु विष्टानी पेठे त्याग करीने, आजीविकानु कारण एवुं पोतानु जवानीपणुं राख्य. त्यारे वेश्या कहेती हवी. हे मातः! जो एम छे तो दश दिवस सूधी विलंब करो, पछी तमारुं कहेलु करीश. त्यार पछी तेनी माताए आज्ञा आपी. त्यार पछी ते वेश्याए दश दिवस सूधी धवरावीने ते बालकोनु सम्यक् प्रकारे प्रतिपालन करीने अगीयारमे दिवसे, एक जणनु कुबेरदत्त, अने एक जणीनु कुबेरदत्ता ए प्रकारे बे जणना नाम पाडीने पछी तेमना नाम सहित एवी बे वींटीयो करावीने ते बे जणनी आंगलीयोमा घालीने पछी एक लाकडानी पेटीमा ते बे जणने मांही मूकीने संध्या समये यमुना नदीना प्रवाहने विषे ते पेटीने वहेती मूकी दीधी. त्यार पछी ते पेटी

वै० जलमा वहेती थकी अनुक्रमे करीने दिवसनो उदय थए सते, शौर्यपुर नगरे शा०
३३ आवी. त्या स्नान करवाने अर्थे आवेला एवा बे शेठना पुत्रो ते पेटीने आवती
देखीने, तत्काल लेइने एक जणे तेनी मध्ये एक बालक अने बालिकाने जो-
इने, तेमनी मध्ये जे पुत्रनो अर्थि हतो, तेणे पुत्र लीधो. अने बीजो पुत्रीनो
अर्थि हतो, तेणे बालिका लीधी ए प्रकारे ते एक एक बालक लेइने पोत
पोतानी स्त्रीने आप्यु पछी मुद्रिकामा लखेला अक्षरने अनुसारे तेमनु नाम
पाड्यु त्यार पछी ते कुवेरदत्त अने कुवेरदत्ता एवे नामे बे बालक, ते शाहु-
कारोने घेर अतिशे उद्यमे करीने महोटा थया. पछी अनुक्रमे करीने जोवन
अवस्था पाम्या, त्यारे ते बे बालकोनु सरखु रूप जाणीने, ए बे शाहुकारो ते
बे जणनो माहो माहे पाणीग्रहणनो उत्सव करता हवा एटले लग्ननो उत्सव
कर्यो. त्यार पछी ते स्त्री भरतार, एक दहाडो सोगटाबाजी रमवा बेठा, ते
अवसरे कुवेरदत्तना हाथथकी ते नामांकित मुद्रिका कोइक प्रकारे निकली
ने कुवेरदत्तानी आगल पडी त्यार पछी तेणीए ते मुद्रिका पोतानी मुद्रि- ३३

काना साथे सरखी आकृतिवाली, अने एक देशमा थयेली, अने सरखा नामवाली एवी देखीने मनने विषे कुबेरदत्तने पोतानो भाई छे, एम निश्चे करीने ते वे वींटीयो कुबेरदत्तना हाथमा घाली ते अवसरे कुबेरदत्त पण ते वींटी जोवा थकी तेमज तेने पोतानी बहेन छे, एम निश्चे करीने अतिशे खेद पाम्यो त्यार पछी ते वे जणे पण पोताना विवाहना कार्यने अकार्य माननां एटले आ खोटु थयु ! एम जाणता एवा पोतानो संदेह निवारवाने माटे पोत पोतानी माताने सम खवरावीने अतिशे आग्रहे करीने पोतपोतानुं स्वरूप पूछ्यु ते अवसरे तेमनी माताउए ते वे जणनी आगल मंजूषामांथी (पेटीमाथी) कहाड्या त्याथी माडीने सर्व पण वृत्तात कह्यु. त्यार पछी कुबेरदत्त माता पिताने कहेवा लाग्यो के, तमे अमने जोडलं जन्मेला जाणीने पण आवुं अकार्य केम कर्युं ? त्यारे ते कहेवा लाग्या के, तहारा सरखी कन्या अने तेना सरखो वर क्याहि अमने मल्यो नही, तेथी सरखा शोभादि गुणवालां तमने जाणीने तमारा बेनोज माहोमाहे विवाह कर्यो परंतु हजु सुधी काइ

पण वगरयुं नथी जे कारण माटे तमारा वेनु एक करपीरुनज थयु ठे एटले फक्त एक हाथनोज मिलाप थयो ठे, पण मैथुनकर्म थयु नथी ते माटे तु खेद न करीश तने वीजी कन्या परणावीशु त्यार पठी कुवेरदत्ते कह्यु त-मारु वचन महारे प्रमाण ठे, परतु हमणा तो हु व्यापार करवाने माटे पर-देश जवानी इछा राखुं तु ए कारण माटे मने आज्ञा आपो त्यार पठी ते शेठ शेठाणीए आज्ञा आपी पठी कुवेरदत्त, ते वृत्तान पोतानी वहेनने कही ने, घणाक क्रियाणा लेइने, दैवयोग थकी पोताने उत्पत्तिनु स्थानक एवी मथुरा नगरीए गयो त्या ते निरतर पोताने उचित व्यापार करतो सतो, एक दहाडो कोइक माठा कर्मना जोगथकी अद्भूतरूपे करीने शोभायमान एवी, पोतानी माता कुवेरसेना वेश्याने देखीने, कामे पीडीत थयो सतो, ते वेश्याने वहु द्रव्य आपीने, पोतानी स्त्री करीने निरतर तेनी सगाथे विषय सवधी सुख जोगवतो हतो त्या अनुक्रमे करीने तने एक पुत्र थयो. हवे शौर्यपुरने विषे ने कुवेरदत्ता, माताना मुखथको मूत्रथकी पोतानी ते प्रवृत्ति

लाभलान, तत्काल वैराग्य प्रत्य पामी सती आर्या (साध्वी) नो संजोग थये सते दीक्षा ग्रहण करीने, घणा महोटां तप करीने, विशुद्ध अध्यवसायना योग थकी थोडा कालमांज, तेणीए अवधिज्ञान उत्पन्न कर्युं त्यार पछी ते साध्वी, अवधिज्ञानना बले करीने पोताना भाईनु स्वरूप जोती सती मथुरा नगरीने विषे पोतानी माता संगाथे लागेलो एवो, अने पुत्रसहित एवो, तेने देखीने कर्मनी गतिने धिक्कार करती एटले धिक्कार पडो कर्मने !!! एम कहेती सती पोताना भाईने अकारजरूप महोटा पापरूप कादव थकी उद्धारवाने एटले काढवाने, पोते मथुरा प्रत्ये आवीने, कुबेरसेना वेश्यानेज घेर जइने, धर्मलाभरूप आशिष देइने तेनी पासे पोताने उतरवानु स्थानक माग्युं. ते अवसरे कुबेरसेना पण ते आर्याने नमस्कार करीने एम कहेती हवी हे महासती! हु वेश्या छु, पण हमणां एक भरतारना संजोगथकी निश्चे कुलस्त्री थइ छु ते कारण माटे तमे सुखे करीने महारा घरनी समीपे पापरहित एवा आश्रयने ग्रहण करीने, अमने रूडा आचारमां प्रवर्तावो त्यार पछी कुबेरदत्ता सा

स्त्री पण, पोताना परिवारसहित तेणीए आपेला उपाश्रयमा रही हवे ते वेश्या, निरंतर त्या आवीने, ते बालकने साध्वीनी आगल भूइ उपर लोटतो मूकती हवी ते अवसरे अवसरनी जाण एवी जे साध्वी, ते आगामी कालमा लाभ जाणीने ते बालकने आ प्रकारे बोलावती हवी हे बालक! तु म्हारो भाई छु ॥ १ ॥ तु म्हारो पुत्र छु ॥ २ ॥ तु माहारो दीयर छु ॥३॥ तु म्हारा भाईनो पुत्र छु, एटले भत्रिजो छु ॥ ४ ॥ तु म्हारो काको छु ॥५॥ तु म्हारा पुत्रनो पण पुत्र छु ॥ ६ ॥ तथा जे त्हारो पिता छे, ते म्हारो भाई छे ॥ १ ॥ अने म्हारो पिता छे ॥ २ ॥ अने म्हारा पितानो पिता, एटले म्हारो वडाउन्न छे ॥ ३ ॥ माहारो भरतार छे ॥ ४ ॥ म्हारो पुत्र छे ॥ ५ ॥ अने म्हारो ससरो पण छे ॥ ६ ॥—तथा जे त्हारी माता छे, ते म्हारी माता छे ॥ १ ॥ अने म्हारा पितानी माता छे ॥ २ ॥ अने म्हारा भाईनी स्त्री छे ॥ ३ ॥ अने म्हारी वहु छे. ॥ ४ ॥ अने म्हारी सासु छे ॥ ५ ॥ अने म्हारी शोक्य पण छे ॥ ६ ॥ ए रीते कहीने साध्वी ते

वालकने वारवार बोलावे छे त्यार पछी एक दहाडो कुबेरदत्त तेनुं वचन सांजलीने, आश्चर्य पाम्यो मतो, ते साध्वीने कहेतो हवो. हे आर्ये! वारवार आवु अजुक्त शु बोलो छो? त्यारे साध्वी कहेती हवी हुं अजुक्त नथी बोलती जे कारण माटे आ बालक एक मातापणा थकी जाई छे, एटले तेनी अने म्हारी एक माता छे, तेथी म्हारो जाई थाय छे ॥ १ ॥ अने म्हारा जरतारनो पुत्र छे, माटे म्हारो पुत्र थाय छे ॥ २ ॥ अने म्हारा जरतारनो न्हानो जाई छे, माटे म्हारो दीयर छे ॥३॥ अने म्हारा जाईनो पुत्र छे, माटे म्हारो जत्रीजो छे ॥ ४ ॥ अने म्हारी माताना पतिनो जाई छे, माटे म्हारो काको लागे छे ॥ ५ ॥ अने म्हारी शोक्यना पुत्रनो पुत्र छे, माटे म्हारो पौत्रो लागे छे ॥ ६ ॥—ए प्रकारे बालकनो सगाये पोताना छ संबंध देखाडीने, वली कहेती हवी जे आ बालकनो पिता छे, ते म्हारे एक मातापणा थकी जाई छे, एटले तेनी अने म्हारी एक माता छे, माटे जाई थाय छे ॥ १ ॥ अने म्हारी मातानो जरतार थयो, तेथी म्हारो पिता थाय छे ॥ २ ॥ अने

मह्रारा काकानो पिता थयो, तेथी मह्रारो वडाउत थयो ॥ ३ ॥ अने प्रथम मने परण्यो छे, माटे मह्रारो भरतार थाय छे ॥ ४ ॥ अने मह्रारी शोक्यनो पुत्र थाय छे, माटे मह्रारो पुत्र पण थाय छे ॥ ५ ॥ अने मह्रारा दीयरनो पिता थाय, माटे मह्रारो ससरो छे ॥ ६ ॥—ए प्रकारे बालकना पिता कुबेरदत्तनी साथे पोताना छ सबध कह्हीने, वळी कहेती हवी जे आ बालकनी माता छे, ते मने पण जणनारी छे, माटे मह्रारी पण माता छे ॥ १ ॥ अने मह्रारा काकानी माता छे, तेथी मह्रारी दादी लाग छे ॥ २ ॥ अने मह्रारा भाइनी स्त्री थइ, तेथी मह्रारी भोजाइ थाय छे ॥ ३ ॥ अने मह्रारी शोक्यना पुत्रनी स्त्री थइ, माटे मह्रारी वहु थइ ॥ ४ ॥ अने मह्रारा भरतारनी माता थइ, तेथी मह्रारी सासु थइ ॥ ५ ॥ अने मह्रारा भाइनी बीजी स्त्री थइ, माटे मह्रारी शोक्य थइ ॥ ६ ॥ ए रीते आ बालकनी माता कुबेरसेना वेश्यानी साथे पोताना छ सबध देखाड्या. ए प्रकारे आ अढार सबध कह्हीने ते साध्वी, ते सबधोनी खातरी करवाने अर्थे, पोते व्रत ग्रहण कर्युं ते अवसरे राखे

णी पोतानी वींटी कुबेरदत्तने आपती हवी त्यार पछी कुबेरदत्त पण ते वींटी देखीने सर्व सबधनु विरुद्धपणु जाणीने, तत्काल वैराग्य पामीने, पोतानी निंदा करतोसतो पोतानी शुद्धिने अर्थे, चारित्र ग्रहण करतो हवो अने घटी महा तप करतो हवो तथा कुबेरसेना वेश्या पण ते प्रवृत्ति सांभलवा थकी प्रतिबोध पामी सती श्रावकनो धर्म अंगीकार करती हवी त्यार पछी कुबेर-दत्ता साध्वी, ए प्रकारे तेमनो उद्धार करीने पोतानी प्रवर्तिनी पासे गइ, ए-[illegible] पोतानी गुरुणी पासे गइ अनुक्रमे ए सर्व जीवो, पोतानो धर्म सम्यक् प्रकारे आराधन करीने सद्गतिना भजनार थया अर्थात् रूडी गतिमा गया. [illegible] कुबेरदत्तनु दृष्टांत कह्यु. आ एक भवने आश्रीने [illegible] अपेक्षामां तो प्राणे करीने [illegible] जी [illegible] थया छे. ते प्रमाणे [illegible]

तसो के०) अनतीवार (न आ[illegible]

).तथी मरण पाम्या, एवी (सा के०) ते अर्थात् तेवी काइ (जाइ क०)

भाईपणे करीने, बहेनपणे करीने, स्त्रीपणे करीने, पुत्रपणे करीने, पुत्रीपणे करीने, पुत्रनी स्त्रीपणे करीने, सामान्यथकी शत्रुपणे करीने, वैरिपणे करीने एटले शत्रुभावना अनुबंध सहितपणे करीने, घातकपणे करीने एटले मारनारपणे करीने, अने ताडन करनारपणे करीने, प्रत्यनीकपणे करीने एटले प्रतिकूलपणे करीने, अने कार्यना उपघातपणे करीने, एटले अमित्रसहायीपणे करीने, राजापणे करीने, जुवराजपणे करीने, यावत् शार्थवाहपणे करीने, दासपणे करीने एटले घरनी दासीना पुत्रपणे करीने, प्रेष्यपणे करीने एटले चाकरपणे करीने, भृतकपणे करीने एटले डुकालादिकने विषे अन्न साटे लीधेला तेपणे करीने, कर्षणादि लाभना भाग ग्राहकपणे करीने, अन्य पुरुषोए उपार्जन करेला अर्थना भोगकारी नरपणे करीने, वली कला शीखववा जोग्यपणे करीने, अने वली दूध करवा जोग्यपणे करीने पूर्वे उत्पन्न थयो छे ? ए रीते गौतमस्वामीए भगवंतने पूछ्युं त्यारे भगवंत कहेता हवा हे गौतम ! हा ! अनेकवार अथवा अनंतीवार आ जीव सर्व जीवोनी

माता थइ, पिता थयो, भाइ थयो, ए रीते उपर कह्या प्रमाणे पूर्वे सर्व संबंध करी चूक्यो छे एज प्रकारे सर्व जीवो पण आ जीवना मातादिकपणे करीने, अनेकवार, तथा अनंतीवार पूर्वे उत्पन्न थया छे. ए रीते सर्व जीवोने माहो मांहि सर्व संबंध थइ चूक्या छे इति संसारनी अनवस्था उपर कुबेरसेना गणिकानुं दृष्टांत तथा श्री भगवती सूत्रना पाठनो अर्थ जाणवो.

॥ अनुष्टुपवृत्तम् ॥

न सा जातिः न सा योनिः न तत् स्थान न तत् कुलम्

न सा जाइ न सा जोणी । न तं ठाणं न तं कुलं ॥

न जाताः न मृताः यत्र सर्वे जीवा. अनन्तशः

न जाया न मुआ जत्थ । सव्वे जीवा अणंतसो ॥ ९३ ॥

अर्थ –(जत्थ के०) ज्यां (सव्वे के०) सर्व (जीवा के०) जीव जे ते (अणंतसो के०) अनंतीवार (न जाया के०) नथी उत्पन्न थया, तथा (न मुआ के०) नथी मरण पाम्या, एवी (सा के०) ते अर्थात् तेवी कोइ (जाई के०)

नाईपणे करीने, बहेनपणे करीने, स्त्रीपणे करीने, पुत्रपणे करीने, पुत्रीपणे करीने, पुत्रनी स्त्रीपणे करीने, सामान्यथकी शत्रुपणे करीने, वैरिपणे करीने एटले शत्रुजावना अनुबध सहितपणे करीने, घातकपणे करीने एटले मार नारपणे करीने, अने ताडन करनारपणे करीने, प्रत्यनीकपणे करीने एटले प्रतिकूलपणे करीने, अने कार्यना उपघातपणे करीने, एटले अमित्रसहा यीपणे करीने, राजापणे करीने, जुवराजपणे करीने, यावत् शार्थवाहपणे करीने, दासपणे करीने एटले घरनी दासीना पुत्रपणे करीने, प्रेष्यपणे करीने एटले चाकरपणे करीने, जृतकपणे करीने एटले डुकालादिकने विषे अन्न साटे लीधेला तेपणे करीने, कर्पणादि लाजना जाग ग्राहकपणे करीने, अन्य पुरुषोए उपार्जन करेला अर्थना जोगकारी नरपणे करीने, नवी कला शीखववा जोग्यपणे करीने, अने नवी रूप करवा जोग्यपणे करीने पूर्वे उत्पन्न थयो छे ? ए रीते गौतमस्वामीए जगवतने पुछ्युं त्यारे जगवत कहेता हवा. हे गौतम ! हा ! अनेकवार अथवा अनंतीवार आ जीव सर्व जीवोनी

अर्थ-(जछ के०) जे स्थानने विषे (जीवा के०) जीव जे ते (सुह डुरक परपर के०) सुख डुःखनी परपराने (वहुसो के०) घणीवार (न पत्ता के०) नथी पास्या (त के०) ते अर्थात् तेवुं (किपि के०) कोइ पण (लोए के०) लोकने विषे (वालग्ग के०) वालनो अग्र तेनो (कोकिमित्तपि के०) प्रांतजाग मात्र पण, अर्थात् किंचित्मात्र पण (ठाण के०) स्थान जे ते (नह्नि के०) नथी. अर्थात् आ जीव, सर्व स्थानकमा जइ आव्या छे. ॥ ३४ ॥

जावार्थ-व्यवहार राशीने पामेला जीवोने अनतो काल थइ गयो छे, माटे ते जीवोने सर्व जाति आदिकने विषे अनतीवार उत्पत्ति थइ ज हशे? एम सजावना करीए ठीए केमके, ए अजिप्राय तो वहुश्रुतनेज गम्य छे. अर्थात् ते अजिप्राय तो वहुश्रुत जाणे. हे जीव! तु अनतीवार सारी मारी जातिमा तथा सारी सारी योनिमा उत्पन्न थयो छे, अने सारा सारा स्थानमा तथा सारा सारा कुलमा उत्पन्न थयो छे, अने तुं त्या अनेक प्रकारे जन्म मरण पास्यो छे, परन्तु विचारी जोता तो तु जेवो छे, तेवोने तेवोज छे. एटले त

जाति जे ते (न के०) नथी अने (सा के०) ते अर्थात् तेवी कोइ (जोणी के०) योनी जे ते (न के०) नथी, अने (त के०) ते अर्थात् तेवु कोइ (ठाण के०) स्थान जे ते (न के०) नथी अने (त के०) ते. अर्थात् तेवु कोइ (कुल के०) कुल जे ते (न के०) नथी एटले सर्वे जीवोने पूर्वे कहेला सर्वे स्थानको अनतीवार थया छे ॥ २३ ॥

वली आ अधिकारने विशेषे जाणवानी मरजी होय तो, श्री भगवती सूत्रना बारमा शतकना सातमा उद्देशामाथी वोकमानु द्रष्टांत जोइ लेज्यो.

॥ आर्यावृत्तम् ॥

तन् किमपि नास्ति स्थान लोके वालाग्रकोटीमात्रमपि

त किंपि नत्थि ठाण । लोए वालग्गकोडिमित्तपि ॥

यत्र न जीवा बहुशः सुखदुःखपरपरा प्राप्ता.

जत्थ न जीवा बहुसो । सुहदुक्खपरपर पत्ता ॥ २४ ॥

अर्थ-(जह के०) जे स्थानने विषे (जीवा के०) जीव जे ते (सुह दुख्क परंपर के०) सुख दुःखनी परंपराने (बहुसो के०) घणीवार (न पत्ता के०) नथी पाम्या (त के०) ते अर्थात् तेवुं (किपि के०) कोइ पण (लोए के०) लोकने विषे (वालग्ग के०) वालनो अग्र तेनो (कोडिमित्तंपि के०) प्रांतभाग मात्र पण, अर्थात् किंचित्मात्र पण (ठाण के०) स्थान जे ते (नत्थि के०) नथी. अर्थात् आ जीव, सर्वे स्थानकमा जइ आव्या छे ॥ २४ ॥

भावार्थ-व्यवहार राशीने पामेला जीवोने अनंतो काल थइ गयो छे, माटे ते जीवोने सर्व जाति आदिकने विषे अनंतीवार उत्पत्ति थइ ज हशे? एम संभावना करीए छीए केमके, ए अभिप्राय तो बहुश्रुतनेज गम्य छे. अर्थात् ते अभिप्राय तो बहुश्रुत जाणे. हे जीव! तु अनंतीवार सारी मारी जातिमा तथा सारी सारी योनिमा उत्पन्न थयो छे, अने सारा सारा स्थानमा तथा सारा सारा कुलमां उत्पन्न थयो छे, अने तुं त्यां अनेक प्रकारे जन्म मरण पाम्यो छे, परंतु विचारी जोता तो तु जेवो छे, तेवोने तेवोज छे. एटले त

ज्ञान स्वरूप तो निश्चे नयमते करीने अछेद्य, अभेद्य, अजर, अमर, ज्ञानरूप, सुखरूप अने सत्तारूप एवु छे तेने तु विसरी जइने, देहादि परभावमा आसक्त थइने पंच प्रकारना विषयसुख भोगववानी तृष्णा हजु सूधी तने जती नथी परंतु तु एम वांछा राखे छे के हु सारी सारी जाति आदिकमा जइने सारा सारा विषय भोगवु पण ते विषयना सुख तें अनंतीवार भोगवी ने वमन कर्यां छे, तोपण तेने तेज भोगवी इछा राखीने वाताशी (वमन करेलाने खानारो) केम थाय छे? वळी ए विषयसुखने भोगवीने काइ तृप्त थवातु नथी, पण उलटी तेनी तृष्णा जेम बळता अग्निमा घी होमे, ने तेनी ज्वाला वृद्धि पामे, तेम विषयतृष्णा वृद्धि पामशे. माटे हे जीव! तु एम विचार के, हु सर्व ठेकाणे जइने सर्व जातिना सुख दुःख अनंतीवार भोगवी आव्यो छु, पण कोइ ठेकाणे नथी जइ आव्यो एम नथी. एवु विचारी विषय सुखथी विराम पामीने तु तहारा आत्मस्वरूपना अविनाशी सुखमा मग्न था. आ बे गाथानो भेगो भावार्थ छे ॥ २३ ॥ २४ ॥

॥ आर्यावृत्तम ॥

सर्वा ऋद्धयः प्राप्ता सर्वेऽपि स्वजनसंबन्धाः

सव्वाउ रिद्धीउ । पत्ता सव्वेवि सयणसंबंधा ॥

संसारे तस्मात् विरम ततःऋद्धयादिभ्य यदि जानासि तदा आत्मानं सुखिन

संसारे तो विरमसु । तत्तो जइ मुणसि अप्पाण ॥२५॥

अर्थ–(संसारे के०) संसारने विषे (सव्वाउ के०) सर्व एवी (रिद्धीउ के०) ऋद्धियो जे ते. तथा (सव्वेवि के०) सर्व एवा पण (सयणसंबंधा के०) स्वजन संबंध जे ते (पत्ता के०) पाम्यो छे (तो के०) ते कारण माटे (जइ के०) जो (अप्पाण के०) आत्माने (मुणसि के०) जाणे छे, तो (तत्तो के०) ते ऋद्धिआदिक थकी (विरमसु के०) विराम पाम्य अर्थात् निवृत्ति पाम्य ॥ २५ ॥

भावार्थ–हे आत्मन्! संसारने विषे अनादि कालथी भ्रमण करता आ जीवे देव मनुष्यादिकनी सर्वे समृद्धियो पामी छे, तथा सर्वनी साथे पोतानो माता पिता भाई भार्यादिक संबंध जोडायो छे, माटे तेमां तहारे मोह रा-

खवो यटतो नथी केम के, जे स्त्री ठे, ते परात्मनु स्थानक ठे. तथा जे वधुजन ठे, तेज वधन ठे तथा जे विपयसुख ठे, तेज त्रिप ठे (झेर ठे) ए प्रकारे जे तहारा शत्रु ठे, तेनेज तु मित्र जाणीने तेने विपे मोह राखीने वेठो ठे ते कारण माटे एक पोताना आत्म स्वरूपनुज साचु सुख मानीने, ते ऋद्धि, स्वजन, इत्यादिकनु कल्पित सुख मानीने अर्थात् तेने दुःखरूप जाणीने ते सर्व थकी निवृत्ति पाम्य ॥ २५ ॥

एक बध्नाति कर्म एक वधवधमरणव्यसनानि
एगो वधइ कम्मं ॥ एगो वहवधमरणवसणाइ ॥
विपहते जये प्रयाति एक एव कर्मोन्निर्वेजित' सन्
विसहइ जयमि जरमइ । एगुच्चिअ कम्मवेलविओ ॥२६॥

अर्थ–(एगो के०) एकलो अर्थात् सहाय्य रहित एवो जीव जे ते (कम्म के०) ज्ञानावरणीआदि कर्मने (वधइ के०) आत्मानी सगाथे वाधे ठे. तथा (एगो के०) एकलोज जगातरने विपे (वह के०) ताडन. अने (व

ध के०) वधन, अने (मरण के०) प्राणनो वियोग, अने (वसणाइ के०) आपत्ति, तेमने (विसहइ के०) सहन करे छे. वळी (एगुच्चिय के०) एकलोज आ जीव (कम्मवेलविउ के०) कर्मवडे ठगायो सतो (नवमि के०) संसारने विषे (नमडइ के०) नमे छे ॥ २६ ॥

नावार्थ-हे जीव ! जे वखत तहारो जन्म थयो, ते वखत तें एकलेज घणुज कष्ट सहन कर्युं, पण ते वखत तहारुं दुःख मटाडवाने माटे, तने कोइए सहाय्य करी नहीं अने जे वखते तुं मरण पामीश, ते वखते ते मरणनी वेदना पण, तहारे एकलानेज सहन करवी पडशे अने पछी ज्यारे नरकादिक नवांतरने विषे जईश, त्यारे त्यानी वेदना पण, तहारे एकलानेज सहन करवी पडशे; पण जेने अर्थे एटले देहने अर्थे, स्त्रीने अर्थे, पुत्रने अर्थे, तथा सवधीने अर्थे तें अनेक प्रकारना पाप कर्यां छे, परंतु, तेमांनु कोइ पण तहारी वेदनानो नाग लेवाने आवशे नही एवीज रीते बीजा नवोमां पण कर्मवडे ठगायेलो तु, एकलोज कष्ट नोगवीश. अर्थात् तहारां

करेवा इच्छयने तुज जोगवीश पण ते कष्ट जोगववाने बीजो कोइ पण आवशे नही ॥ २६ ॥

अन्य न कुरुत अहित हितमपि आत्मा करोति नैव अन्य
अन्नो न कुणइ अहियं । हियंपि अप्पा करेइ नहु अन्नो ॥

आत्मकृत सुखदुःख भुनक्ति तत कस्मादऽसि दीनमुख
अप्पकय सुहदुक्खं । जुंजसि तां कीस दीणमुहो ॥ २७ ॥

अर्थ–हे प्राणिन्! (अन्नो के०) अन्य जे ते (अहियं के०) अहित (अनिष्ट) ने (न कुणइ के०) नथी करतो, परंतु आत्माज करे छे अने (हियंपि के०) हितने पण, ते (अप्पा के०) आत्माज (करेइ के०) करे छे, पण (अन्नो के०) अन्य कोइ (नहु के०) नथीज करतो (ता के०) ते कारण माटे (अप्पकय के०) आत्मानु करेलु जे (सुहदुक्ख के०) सुखदुःख, तेने (भुजसि के०) पोते आत्माज जोगवे छे, माटे तु (दीणमुहो के०) दीनमुख वालो (कीस के०) केम थाय छे? अर्थात् तु बीजाउनो दोष शु करवा देखे छे? ॥ २७ ॥

भावार्थ—हे जीव! तु एम विचारे छे के, फलाणाये म्हारु बगाड्युं, एम धारीने तेना उपर द्वेष करे छे. अने फलाणाये म्हारुं सुधार्युं, एम धारीने तेना उपर राग करे छे, पण तेमांनु कोइ त्हारु बगाडतुं पण नथी, ने सुधारतु पण नथी, परंतु ते बगाडनारो अने सुधारनारो, ते त्हारो आत्माज छे. अर्थात् सुख पण त्हारो आत्मा करे छे, अने दुःख पण त्हारो आत्माज करे छे, माटे दुःख आव्ये सते दीनमुखवालो थइने, बीजानो दोष शु करवा देखे छे? वली श्री उत्तराध्ययन सूत्रना वीसमा अध्ययनमा कह्यु छे के, वैतरणी नदीनो पमाडनार पण आ आत्माज छे, अने कूटशाल्मलि वृक्षनी वेदनाने पमाडनारो पण आ आत्मा छे, अने कामधेनु गायने पमाडनारो पण आ आत्मा छे, अने नंदनवन तथा देवलोक अने मोक्ष तेने पमाडनारो पण आ आत्माज छे. वली आ आत्मा कोइ अपेक्षाये कर्त्ता छे, अने कोइ अपेक्षाये अकर्त्ता छे एज रीते सुख दुःखनो कर्त्ता अकर्त्ता पण आत्माज छे. वली मित्र तथा अमित्र पण आत्माज छे, अने सदाचार अने दुराचारने करनारो

पण आ आत्माज छे. एम जाणीने कोइना उपर राग द्वेष करवो नहीं ॥२७॥

बहुआरम्भेण उपार्जित वित्त अनुभवंति हे जीव स्वजनगणा

बहुआरंभविढत्तं । वित्तं विलसंति जीव सयणगणा ॥

तेन आरम्भेण जनित पापकर्म अनुभविष्यसि नरके पुनः त्वं एव

तज्जणियपावकम्मं । अणुहवसि पुणो तुमं चेवं ॥ २८ ॥

अर्थ–(जीव के०) हे प्राणिन् ! (सयणगणा के०) माता, पिता, जाइ, स्त्री, पुत्रादिक स्वजननो समूह जे ते, (बहुआरंभ के०) ते खेती आदिक घणा आरंभे करीने (विढत्त के०) उपार्जन कर्युं एवुं, जे (वित्त के०) धन, ते प्रत्ये अर्थात् ते धने करीने, तेउ (विलसंति के०) विलास करे छे अर्थात् ते धननुं फल ते स्वजनादिक जोगवे छे. (पुणो के०) वली (तज्जणिय के०) ते आरंभे करीने उत्पन्न थयुं एवुं, जे (पावकम्मं के०) पापकर्म, तेने (तुम चेव के०) तुं एकलोज (अणुहवसि के०) अनुभव करीश अर्थात् नरकादिकने विषे ते पापनुं फल तुं एकलोज जोगवीश ॥ २८ ॥

भावार्थ—हे जीव! ते अनेक प्रकारे जीवहिंसा तथा कूडकपट छलभेद प्रपंचादिक केटलाक अनर्थ करी, तथा नीच सेवादिक घणा अकर्त्तव्य करी, तथा अनेक प्रकारे परदेशमा भमीने, तथा लडाइ प्रमुखमां मरणांत कष्ट माथे लेइने, तथा पोताना स्वधर्मनो पण त्याग करीने तथा रात्रि दिवस शरीरनुं सुख पण न गणीने, धन उपार्जन कर्युं; परंतु ते धनने स्वजन तथा ज्ञाति आदिक लोक, तहारो उपकार न गणतां, उलटा तने दबावीने तथा तने तिरस्कार करीने, तथा मेहेणा मारीने, अने अनेक प्रकारनी युक्तिवडे करीने, एटले उदरनी पेठे फूकी फूकीने तेउ खाइ जाय छे. अर्थात् धोले दहाडे भर्या शेहेरमां ते स्वजनादिक चोर, तने लूटी ले छे. अने ते धन उपार्जन करतां जे पाप थयुं, तेना फलने तो नरकादिकने विषे, तुं एकलोज भोगवीश पण वीजुं कोइ भोगववा आवशे नही. माटे हे भव्य प्राणिन्! कांइक विचार करीने न्यायथी धन उपार्जन करीने तेने कांइक तो सारा मार्गमा वापरय॥२७॥

८

अथ उखिता तथा दुःखिता इति यथा चिंतिता किन्ना

अहं डुक्खिआइ तह नु । क्किआइ जह चिंतिआइ डिंनाइ ॥

तथा स्तोकमपि न आत्मा विचिंतित अतस्त्वा हे जीव किं जणीमः

तह थोवपि न अप्पा । विचिंतिउ जीव किं जणिमो ॥ १७ ॥

अर्थ—(जीव के०) हे जीव! तु मोहने वश थइने (जह के०) जेम (डिंनाइ के०) आ म्हारा बालक जे ते एटले म्हारा ठोकरा जे ते (अहं के०) हवे (डुक्खिआइ के०) दुःखिया ठे एटले टाहाड्यमा ठंढना पाथरणादिक वस्त्र नथी, तेथी पीडा पामे ठे (तह के०) तेमज (तुक्खिआइ के०) म्हारा बालक भूख्या ठे एम (चिंतिआइ के०) ते बालकोनुं तुं रात्रि दिवस चिंतवन करे ठे, परंतु (तह के०) तेवी रीते, तें (अप्पा के०) आत्मा जे ते (थोवपि के०) थोडो पण (न विचिंतिउ के०) नथी चिंतवन कर्यो. माटे तने (किं जणिमो के०) शुं कहीए? अर्थात् हे मूर्ख! तने केटलो ठपको देइए? एटले तें थोडो पण आत्मानो विचार नथी कर्यो. के, म्हारा आत्मानी शी गति थशे? एवो

विचार लगारमात्र पण तुं करतो नथी. ॥ २ए ॥

भावार्थः—हे जीव तुं मोहने वश थइने रात्रि दिवस पारकी चिंता कर्या करे ठे. के, आ म्हारां बालक, तथा आ म्हारी स्त्री इत्यादिक स्वजन भूख्यां ठे, तरप्यां ठे, तथा तेमने अन्न वस्त्रादिकनुं दुःख ठे. इत्यादि अनेक प्रकारनी चिंताने रात्रि दिवस कर्या करे ठे, परंतु तु त्हारा आत्मानी चिंता करतो नथी के, में म्हारा आत्मानुं साधन केटलुं कर्युं? एटले आत्मा परजवे सुखी थाय, एवुं काम में रात्रि दिवस मध्ये केटली घडि कर्युं? एवो थोडो पण त्हारा स्वार्थनो विचार तुं करतो नथी, केवल रात्रि दिवस पारकुंज वैतरुं कूट्या करे ठे, माटे तु मूर्ख ठे; तेथी तने केटलो उपदेश देइए? केम के, उपदेश तो योग्यनेज थाय ठे. ॥ २ए ॥

क्षणभंगुरं शरीरं जीवः अन्यः च शाश्वतस्वरूपः

खणजंगुरं सरीरं । जीवो अन्नो अ सासयसरूवो ॥

कर्मवशात् अनयो सबंध । निर्बंधो भवा अत्र शरीरे का तव

कम्मवसा सबंधो । निब्बधो इह को तुज्झ ॥३०॥

अर्थ—हे आत्मन्! (खणत्तगुर के०) क्षणभंगुर एटले क्षणमा नाश पामवाना स्वभाववालु एवु (शरीरं के०) आ शरीर छे. (अ के०) वली (अन्नो के०) शरीर थकी जूदो एवो, अने (सासयसरूवो के०) शाश्वतुं छे स्वरूप ते जेनु, एवो (जीवो के०) जीव छे, तेने (कम्मवसा के०) कर्मना आधीनपणाथी शरीरनी साथे (संबधो के०) संयोग थयो छे, माटे (इह के०) ए शरीरने विषे (तुज्झ के०) तहारे (को के०) श्यो (निब्बधो के०) अनुबंध छे? एटले ए शरीरने विषे तहारे शी मूर्छा छे? ॥ ३० ॥

भावार्थ—हे जीव! तु अछेद्य, अभेद्य, अजर, अमर, ध्रुव, अनंत ज्ञानमय, अनंत दर्शनमय, अनंत चारित्रमय, अनंत वीर्यमय, ज्योतिःस्वरूप, पवित्र, अलिंग, अव्यक्त, निर्लेप, निरंजन, अने आनंदमय एवो तु निश्चे नय मते छे, परंतु अनादि कालथी कर्मना वशे करीने, अनित्य अने अशा-

श्वेत एवुं; अने त्वचा, मास, हाडकां, रुधिर, नसो, मेद एटले हाडकां उपर रहेली चामडी, अने मज्जा एटले हाडकामा रहेलु मास, अने मल मूत्र; ने दुर्गंध, ने विजीरस (विष्ठामणी) एवी वस्तुए जरेला चामडाना कोथला रूप आ शरीर छे, तेवा शरीरने विषे हे जीव! तुं कर्मना वशथकी बधाएलो छे. तेने विषे महारापणु मानी लेइने, एटले आ शरीर ते हुं छुं. एम धारीने, तेना उपर ममत्वजाव राखीने शु करवा मिथ्या हेरान थाय छे? इहां प्रसंगानुसारे शरीर उपरथी मूर्छा उतरवाने माटे, विचारवा जेवुं एक दृष्टांत लखीए छीए – जेम कोइ पुरुषे सरकारनो अपराध कर्यो होय, तेणे करीने तेने सकत मजूरी साथे, मदा दुःखदाइ बंधीखानामां, अमुक वर्षनी टीप मारीने पूर्यो होय, तेम तने पण, तहारा कर्मे, पूर्वे लखेली अशुचि वस्तुए करीने जरेलो, अने दुर्गंधमय शरीररूप पुरुषनी आकृतिवालो तथा स्त्रीनी आकृतिवालो चामडानो कोथलो, तेमां तने अमुक मुदत सूधी पूर्यो छे; तो पण तेवा शरीरने विषे तु एवो ममत्व धारण करे छे के, हुं शेठ, हु शेठाणी, हुं राजा, हुं राणी,

हुं ब्राह्मण, हुं ब्राह्मणी, इत्यादिक कल्पित नाम ठरावीने तथा ते कोथळानो, रंग, कालो धोलो देखीने तेमां रूपवान् कुरूपवाननी कल्पना करीने, तुं मोह पामे छे, परंतु एम नथी विचारतो के, आ म्हारा शरीरमां शेठ ते कियो? हाथ शेठ? पग शेठ? के माथुं शेठ? एम खरी रीते विचारीश, तो सर्व कल्पना मात्रज मालम पडशे, माटे एवी रीते वस्तुगते विचारीने तुं शरीर उपरथी मूर्छा उतारय. किं बहुना? आ अधिकारने विषे श्री आचारांगजी सूत्रमां विशेष प्रकारे कह्युं छे, त्यांथी जोइ लेवुं. ॥ ३० ॥

कुत आगतं कुत्र चलितं त्वमपि कुतः आगतः कुत्र गमिष्यसि

कह आयं कह चलियं । तुमपि कह आगउ कहं गमिही ॥

अन्योन्यमपि युवां न जानीथः हे जीव कुटुम्बमिदं कुतः तव अन्तःकरणात्

अन्नुन्नंपि न याणह । जीव कुडुंब कओ तुज्झ ॥ ३१ ॥

अर्थ-(जीव के०) हे आत्मन् (कुडुंब के०) आ माता पिता भाइ स्त्रीयादि कुटुंब (कह आयं के०) क्यांथी आव्युं छे? अने (कह चलियं के०)

क्या गयु? एटले अहिंथी मरीने क्या गयु? अने (तुमपि के०) तुं पण (कइ आगउे के०) क्यांथी आव्यो? अने (कइ गमिहि के०) क्या जइश? एम (अन्नुन्नंपि के०) परस्पर एटले एक बीजाने पण (नयाणह के०) नथी जाणतो माटे (तुज्झ के०) तहारुं कुटुंब (कउे के०) क्याथी? अर्थात् एक बीजाने जाण्या वगर आ कुटुंब महारु छे, एम मानी बेठो छु, ते मिथ्या छे. ॥ ३१ ॥

भावार्थ–हे जीव! जेना उपर तने घणो मोह छे, ने महारा महारां करे छे, ते तहारां माता पिता स्त्रीयादिक केइ गतिमाथी आव्यां छे? ने केइ गतिमा जशे? अने तुं पण केइ गतिमांथी आव्यो छे? ने केइ गतिमां जइश? ते संबंधी तने काइ पण खबर नथी. एटले जेम परबने विषे कोइ क्याथी आव्युं, ने कोइ क्यांथी आव्युं; ए रीते ते सर्वे आवीने एकठां मले छे. पछी तेनु पाणी पीने सउ सउने मार्गे वेराइ जाय छे. तेम आ भवरूप परबने विषे कुटुंबरूप सर्व लोक पण, कोइ नारकीमांथी, कोइ तिर्यंचमाथी, कोइ मनुष्यमांथी अने कोइ देवलोकमाथी, एम सउ सउनी गतिमाथी आवीने भेगा

वांकीनां पशुनां जेवो निरर्थक जाणवो; एटले जेम पशु छे, ते आहार, भय अने मैथुन तेणे करीने पोतानो जन्मारो गमावे छे, तेम तहारो पण व्यर्थ जन्मारो गयो जाणवो ॥ ३२ ॥

॥ अनुष्टुप्वृत्तम् ॥

जन्मदुःखं जरादुःखं रोगाः च मरणानि च

जन्मदुस्कं जरादुस्कं । रोगा य मरणाणि य ॥

अहो आश्चर्यं दुःखरूपः निश्चये संसारः यत्र संसारे क्लिश्यति जनः

अहो दुस्को हु संसारो । जत्थ कीसति जंतुणो ॥३३॥

अर्थ—(अहो के०) अहो इति आश्चर्ये एटले आ वात आश्चर्यकारी छे अथवा (अहो के०) हे जीव (ए प्रकारे जीवनुं संबोधन करवुं.) आ संसारमां पर्यटन करता प्राणियोने कोइ एवो पदार्थ नथी के, जे दुःखदायक न होय अर्थात् सर्व पदार्थ दुःखदायक छे. शुं शुं दुःखदायक छे, ते देखाडे छे. (जन्म दुस्कं के०) जन्म संबंधी दुःख, एटले आ जीवने जन्मती वखते

घणुंज दुःख थाय छे. तथा (जरा दुक्ख के०) वृद्धावस्था संबंधी दुःख, एटले घरूपणमां अनेक प्रकारना दुःख प्राप्त थाय छे (य के०) वली (रोगा के०) अनेक प्रकारना व्याधि उत्पन्न थाय छे. (य के०) वली (मरणाणि के०) अनेक प्रकारे मरणनी वेदना थाय छे, माटे (हु के०) निश्चे (जच्छ के०) जे संसारने विषे (जंतुणो के०) प्राणी जे ते (कीसंति के०) क्लेश पामे छे, ते (संसारो के०) संसार जे ते (दुक्खो के०) केवल दुःखरूपज छे. अर्थात् आ संसारमां कांइ पण सुख नथी. ॥ ३२ ॥

भावार्थ—हे आत्मन्! तुं विचार करय के, आ जीव ज्याथी जन्मे छे, त्याथी ते मरणपर्यंत केवल दुःखमांज वर्त्ते छे केमके, जन्मती वखते दुःख घणुं पडे छे. ते विषे शास्त्रमां कह्युं छे के, अग्निवर्ण तपावीने लाल चोल करेली साडात्रण क्रोड सोयो, शरीरमां रहेली एवी साडात्रण कोटि रोमराय तेने विषे चांपता जेटली वेदना थाय, तेथी आठगुणी वेदना गर्भने विषे थाय छे. तथा जन्मती वखतनी वेदना तो, कांइ कही शकाय तेवी नथी.

तथा आखे पूरु देखातु नथी, काने पूरुं सजलातु नथी, नाकमाथी लीट नि-
तरे ठे ने दात पण हाली ऊठे ठे तथा पडी पण जाय ठे, तथा खासी, श्वास
अने शरीरनु निर्बलपणु वधे ठे, अंग जागे ठे, तुटे ठे अने फाटे ठे वली मु-
खेथी बराबर चोखु बोली शकातु नथी, अने लोकने पण अनादर करवाजोग्य
तथा हासी करवा जोग्य थाय ठे, तथा दिवसे दिवसे ज्ञान पण ठंडु थतु जा
य ठे तोयपण वधा काममा डहापण डोहोलवा घणो जाय ठे, त्यारे पोतानी
स्त्री तथा वहालो पुत्र अने पुत्री विगेरे, ते डोसाने तिरस्कार करीने एम कहे
ठे के, तमे ठाना माना खाटलामा पड्या रहोने! नकामो लवारो शु करवा
करो ठो! तमारु हैयु फूटी गयु ठे पण काइ अमारु फूटी गयु नथी के, तमारु
कह्यु करीए!! वली घरना खूणाने विषे खासी खातो खातो एक तूटमूट खा
टलीमा पड्यो रहे ठे वली जवानी अवस्थामा पुत्रादिकने पालन पोषण करे
ला, ते एवी आशाए के, तेउ वृद्धावस्थामा महारी चाकरी करशे, तोयपण
ते स्त्री, पुत्र, पुत्रनी स्त्रीयो, इत्यादि ते पण ते डोसाथी न सहन थाय तेवो

परानव करे ठे, अने वली मोढेथी बोले ठे के, आ डोसो मरतोए नथी, ने माचो मूकतो पण नथी; वली ते डोसानी घरमां रहेला माणसोज निंदा करे ठे, एटलुज नहीं परंतु ते वृद्ध पोतेज, पोताना देहनी निंदा करे ठे ते उपर टीकामा लखेलु काव्य तथा तेनो अर्थ लखीए ठीए.

॥ वैतालीयवृत्तम् ॥

वलिसततमस्थिशेषितं शिथिलस्नायुधृतं कलेवरम् ॥
स्वयमेव पुमान् जुगुप्सते किमु कान्ता कमनीयविग्रहा ॥ १ ॥

अर्थ —वृद्धावस्थाथी जेना वधा शरीरनी त्वचा (चामडी) मां करचोलीयो पडी गई ठे, तथा शरीरमां केवल हाडकांज देखायठे अने नाडियो पण शिथिल थई गई ठे, एवा बेडंगा कलेवरने जोई, ए वृद्ध पोते पोतानी मेलेज ते शरीरनी निंदा करे ठे; तो जेनुं शरीर सुंदर ठे एवी स्त्रीयो निंदे, तेमां तो शुंज कहेवु? ॥ १ ॥

वली ते वृद्धावस्थाना दुःख उपर टीकामां कथा लखेली ठे, तेनो अर्थ लखीए ठीए

सने वदल,

कथा ३

कौशाम्बी नगरीने विषे घणा धनवालो, अने घणा पुत्रवालो एवो, एक धनो नामे सार्थवाह हतो तेणे एकलेज नाना प्रकारना उपाये करीने, धन उपार्जन कर्युं ने ते सघलु धन, ढु खवाला बंधुजन, तथा स्वजन, तथा मित्र, तथा स्त्री, अने दाइ आदिक सर्वे संबधीओना जागने अर्थे वापर्यु त्यारपछी ते धनो, कालना परिपाकपणाथी वृद्धअवस्थाने पाम्यो 'तेना सघला पुत्रो तेनु सारी रीते पालन पोषण करवानी योग्य कलामा कुशल हता. ससार सबधि सघला कामनी चिंतानो भार तेणे ते पुत्रो उपरज नाख्यो हतो, तोयपण ते पुत्रो एम बोले छे के, अमने आ पिताजीएज आवी सुदर अवस्थाने पमाड्या छे, तथा सर्वे लोकना अग्रेसर कर्या छे, तथा तेमणे अमारो वहु उपकार कर्यो छे ए रीते पोतानु सारु कुलीनपणु, ते पुत्रो जणावता हता. पछी कोइ कार्य प्रसगे, ते वृद्धनी स्त्रीयो पोताना स्वामीनी चाकरी करती हती. तेमा पण शरीर चोलीने स्नान कराववुं, तथा भोजन कराववु, इत्यादिक जे काले ५०

जेम करवुं घटे, ते तेम निरंतर करती हती तेम करतां करता केटलाएक दिवस गया पछी वृद्धपणु वृद्धि पाम्यु, एटले आखा शरीरनी इंद्रियो स्वाधिन न रही, अनें सर्व अग कपवा लाग्या, अने नेत्रादिकमांथी पाणी गलवा मांड्युं त्यारे हलवे हलवे ते स्त्रीयादिकोए, ते वृद्धनी चाकरी घटाडवा मांडी केमके, वृद्धपणु तो वधवा लाग्यु माटे वली ते वृद्ध वित्तना अभिमान वडे करीने, वृद्धावस्थाना दुःखरूप समुद्रमां पड्यो. वली ते वृद्धना दीकरानी स्त्रीयो एम कहे छे के, आ डोसानु वस्तरु कूटवानुं ते अमारा कर्ममां क्या सूधी घाली मूक्यु हशे? ते काइ मालम पडतुं नथी. त्यारे तेमना स्वामीउ (डोसाना पुत्रो) वली ते स्त्रीयोने समजावीने डोसानी चाकरीमां वलगाडे छे. त्यार पछी एक दिवस ते सर्व स्त्रीयो, संप करीने पोत पोताना भरतारने कहे छे के, तमारा पितानी अमे घणी घणी चाकरी करीए छीए, तोयपण ते वृद्धपणामा बुद्धिनी विकलताथी, अमारी करेली चाकरीना जसने वदले, उलटो अपजस आपे छे, माटे तमने जो अमारु कह्यु मानवामां

न आवतु होय, तो बीजा कोई माणस पासे ते कोमानी चाकरी करावो, एटले खबर पडशे पछी ते पुत्रोए तेमज कर्युं त्यार पछी केटलाएक दिवसे पुत्रे पुछ्यु क, हे पिताजी ! केम हवे सारी रीते चाकरी थाय छे? त्यारे ते कासो बोल्यो के, नाइ ! शुं कहुं !! महारु मन जाणे छे, काइ कहेवानी वात नथी एवी रीने ते कोसानु बोलवु साभळीने, ते सर्वे स्त्रीयो पोताना पतिने कहेवा लागी के, तमे अमारु कह्यु प्रथम नहोता मानता, पण हवे जगमा रीने मान्यु !! इत्यादिक रीते बोलीने, ते कोसाना अवगुण पोताना पतिना हृदयमा सारी रीते ठसाव्या ते पुत्रो पण ते स्त्रीयोनु कहेवु मान्य करीने, पोताना पिताने तिरस्कार करवा लाग्या ए रीते ज्यारे तरफनु दु:ख जोगुं थवाथी, ते कोसाए पोको मूकवा मांडी ते सांभळीने ते स्त्रीयो बोली के, आपणा ससराने अन्न पचतु नथी, ने वगर विचार्युं खा खा करे छे, तेथी चूक आवती हशे, माटे लावो ! देवताऊ शेकीए. पछी ते स्त्रीयो पण लुगडाना डुचा सारी पेठे उना करीने जेम काम दे, तेम कोसाने शेके छे, तेथो

ते डोसाने घणी पीडा थवाथी डोसो ना ना कहेतो जाय छे, तोपण पराणे पराणे शेके जाय छे, अने मनमा विचारे छे के, आ डोसाए लोकमा अमारी वहु फजेती करी छे, माटे फरी फरीने आवो लाग मलवानो नथी. एम विचारीने ते डोसाने वहु परानव करे छे त्यार पछी ते डोसो पण आर्त्तध्याने करी थोडा दिवसमां मरण पाम्यो. ए रीते वृद्धावस्थानु दुःख जाणवु

वली ते वृद्धावस्थाना दुःखना वर्णननुं बीजुं काव्य, टीकामा लख्यु छे, ते लखीए छीए

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

गात्रं संकुचित गतिर्विगलिता, दन्ताश्च नाश गता ॥
दृष्टिर्भ्रश्यति रूपमेव ह्रसते, वक्त्र च लालायते ॥
वाक्य नैव करोति बान्धवजन पत्नी न शूश्रूषते ।
धिक् कष्ट जरयाभिभूतपुरुषं, पुत्रोऽप्यवज्ञायते ॥ २ ॥

अर्थ.–वृद्धावस्थामां शरीर संकोचाइ जाय छे, एटले शरीरे करचोलीन

वळी एज अधिकारने विशेष जाणवाना अर्थि पुरुषोए, आ आचारा गनी सूत्रमाथी जोइ लेवु वळी गाथामां च शब्दनु ग्रहण कर्यु छे तेथी द्रव्य सवथी पण घणुज दु ख छे–ते देखाडे छे.

अर्थानामर्जने दु खमर्जितानां च रक्षणे ॥
आये दु खं व्यये दु खं धिगर्थं दु.खसाधनम् ॥ ४ ॥

अर्थ –आ ससारने विषे मनुष्योने बे प्रकारना प्राण छे तेमा एक अत प्राण, ने बीजो बहि प्राण तेमा अत.प्राणतो प्रसिद्ध छे, अने बहि·प्राण ते धन छे केमके प्राण जता जेवु दु ख थाय छे, तेवुज दु ख धन जता पण थाय छे एटलाज माटे ज्ञानी पुरुषोए आ दु.खनी पक्तिमां धनने पण गण्यु छे केम के, (अर्थाना कं०) धन मेळववा पण दु ख छे, तेमज उपार्जन करेला धनने साचववामा पण दु ख छे, माटे धन आव्ये पण दु ख छे, अने धन गये पण दु ख छे अर्थात् ते धनज दु·खदायक छे माटे दु खनु साधन एवा धन ने धिक्कार थाओ ! ! ॥ ४ ॥–ए रीते जन्म, जरा, रोग, मरण अने धन, ते

सवधी ु खनो विचार करवो, पण अधपरपराए न चालवुं ए उपदेश

॥ आर्यावृत्तम् ॥

यावत् न इन्द्रियाणां हानिः यावत् न जराराक्षसी परिस्फुरति

जाव न इंदियहाणी । जाव न जररक्खसी परिप्फुरई ॥

यावत् न रोगविकाराः यावत् न मृत्युः समाश्लिष्यति

जाव न रोगविआरा । जाव न मच्चू समुल्लिअई ॥ ३४ ॥

अर्थ —हे जीव! (जाव के०) ज्यां सूधी (इंदियहाणी के०) इंद्रियोनी हानी, एटले इंद्रियोनु क्षीणपणु (न के०) नथी थयु, तथा (जाव के०) ज्यां सूधी (जररक्खसी के०) जरारूप राक्षसी (न परिप्फुरई के०) नथी प्रकट थइ, तथा (जाव के०) ज्यां सूधी (रोगविआरा के०) रोग विकार (न के०) नथी प्रकट थया, तथा (जाव के०) ज्यां सूधी (मच्चू के०) मृत्यु जे ते (न समुल्लिअई के०) नथी उदयमां आव्यु, त्यां सूधीमां शक्तिने न गोपवता तहाराथी बने तेटलु धर्मसाधन करी ले, नहि तो पछीथी तने घणोज पश्चाताप थशे. ॥ ३४ ॥

भावार्थ –हे प्राणिन् ! ज्या सूधी तहारी इंद्रियोनी शक्ति भरपूर छे, अने ते शक्तिने जरारूप राक्षसीए नष्ट नथी करी, अने ज्या सूधी रोग विकाररूप शत्रुए, कायारूप नगरमा घेरो नथी घाल्यो, अने ज्या सूधी कालना सपाटामा बरोबर नथी आव्यो, त्या सूधी तु जेटलु आत्मसाधन करवु धारीश, तेटलु बनी शकशे माटे जेम बने तेम प्रमाद मूकीने जलदी थी धर्मसाधन करव ॥ ३४ ॥ वली भर्तृहरिये पण कह्युं छे के –

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

यावत् स्वस्थमिद कलेवरगृहं, यावज्जरा दूरतो[1] ।
यावच्चेन्द्रियशक्तिप्रतिहता, यावत् क्षयो नायुष ॥
आत्मश्रेयसि तावदेव विदुषा, कार्यं प्रयत्नो महान् ।
प्रोद्दीप्ते[2] भवने हि कूपखनन, प्रत्युद्यम कीदृश ॥ १ ॥

अर्थ –(यावत् के०) ज्या सूधी आ शरीररूप घर साजु छे, तथा ज्यां सूधी

१ यावच्च दूरे जरा   २ सदीप्त

जरा नथी आवी, तथा ज्यां सूधी इंद्रियोनी शक्ति नाश नथी पामी, तथा ज्यां सूधी आउखुं पूरु नथी थयुं, त्यां सूधी पंडित पुरुषे पोताना कल्याणने अर्थे महोटो प्रयत्न करवो. अर्थात् रात्रि दिवस परलोके सुख थाय, एवा ज साधनमां प्रवर्त्तवुं. केम के, कोइ एवुं विचारे के, हाल तो जवानी अवस्था छे, माटे हालमां संसारनां सुख जोगवीने, पछी वृद्धावस्थामां धर्मसाधन करीशुं. पण हे सज्जनो! जेम (प्रोदीप्ते के०) घर अतिशे बलवा मांड्युं, त्यारे जे कूवो खोदवानो उद्यम करवो, ते केवो कहेवाय? एटले घर बलवा मांड्या पछी कूवो खोदी पाणी कहाडी घर होलवायज नहीं. तेम वृद्धावस्थामां वधु धर्मसाधन करीशुं, एम धारवुं ते सिद्ध थायज नहीं. केम के, वृद्धावस्थाना स्वाभाविक दुःखथी, धर्मसाधन बनी शकवुं घणुंज कठण छे; माटे धर्मसाधन करवामां प्रमाद न करवो ॥

वली एज वातने मूल ग्रंथकार पण जणावे छे.

यथा गेहे प्रदीप्ते कूपं खानयितुं न शक्नोति कोऽपि
जह गेहंमि पलित्ते । कूवं खणिउं नें सक्कए कोई ॥
तथा समाप्ते मरणे धर्मः कथं क्रियते हे जीव
तह संपत्ते मरणे । धम्मो कह कीरए जीवं ॥३५॥

अर्थ—हे जीव! (जह के०) जेम (गेहंमि के०) घर (पलित्ते के०) बलता माड्ये सते (कोइ के०) कोइ पण, एटले समर्थ होय ते पण (कूव के०) कूवाने (खणिउं के०) खोदवाने अर्थात् कूनो खोदी पाणी काढीने, बलता घरने होलववाने (न सक्कए के०) न समर्थ थाय (तह के०) तेम (जीव के०) हे जीव! (मरणे के०) मरण (संपत्ते के०) प्राप्त थए सते एटले मरण नजीक आव्ये सते (धम्मो के०) धर्म जे ते (कह के०) किये प्रकारे (कीरए के०) करी शकाय? ॥ ३५ ॥

भावार्थ—हे आत्मन्! ज्यारे (जवानी अवस्थामां) तहारे धर्म करवानो अवसर हतो; त्यारे तुं बीजे चाले चढी गयो; एटले विषयी जीवनी संगते

पशुनी पेठे फोगट अवस्था गमावी. अने हवे ज्यारे शरीरनी शक्ति क्षीण थवाथी नकामा जेवो थयो, अने वली ज्यारे तने कूतरानी पेठे तहारा स्त्री पुत्रादिके तिरस्कार कर्यो, त्यारे तु पराणे धर्मसाधन करवाने तत्पर थयो, पण हे मूढ जीव! तुं एटलुं विचारतो नथी के, हवे महाराथी शुं बनवानु छे? जेम च्यारे तरफथी घर बलवा मांडयुं, ने तेने होलववाने माटे, जाणे कूवो खोदी पाणी काढीने, ते बलतुं घर होलवुं. इत्यादिक विचार जेम फोगट छे, तेम शरीरनु सामर्थ्य गया पछी, धर्मसाधन करवानो विचार ते व्यर्थ छे - एम देखी तुं विचारय के, धर्मसाधन तो नानपणमांथीज, अन्यथा स करता करतां प्राये घणे कालेज सिद्ध थाय छे. जेम कूवाना काठा उपर पाणी काढवानी जग्याए पथरो अथवा लाकडुं पडयु होय, तेमां पण कोमल एवा दोरडावडे घणे काले करीने घसाराथी ऊंडा कापा पडे छे, पण तेवो कापो पाडवाने, कदापि लोढानी सांकळथी आखो दिवस घसे, तोय पण तेवो कापो न पडे, तेम तुं बाल्यावस्थाथीज विषय कषाय ओछा करवाने

माटे धर्मसाधनमा वर्त्तवानो अभ्यास करव ॥ ३५ ॥

रूपं अशाश्वत एतत् विद्युल्लताचञ्चलं जगति जीवितं
रूवमसासयमेयं । विज्जुलयाचंचलं जए जीअं

सन्ध्यानरागसदृशं क्षणरमणीयं च तारुण्यं
संझाणुरागसरिसं । खणरमणीअं चं तारुन्नं ॥ ३६ ॥

अर्थ —हे आत्मन्! (एयं के०) आ (रूव के०) शरीरनु सुंदरपणुं जे ते (असासयं के०) अशाश्वतु छे. केम के, रोगादिके करीने सनत्कुमार चक्रवर्त्तिना शरीरनी पेठे नाश पामे छे. वली (जए के०) जगत्ने विषे (जीअं के०) जीवित जे ते (विज्जुलयाचचल के०) वीजलीरूप लतानी पेठे चचल छे एटले जेम वीजली क्षणमात्र देखाइने पछी नाश पामे छे, तेम जीवित पण थोडा कालमा नाश पामे छे अने (च के०) वली (तारुन्न के०) जवानीपणु जे ते (सझाणुरागसरिस के०) सध्याकालना नाना प्रकारना रग सरखुं, एटले सध्याकाले आकाशमा पचवर्णा अभ्रपटलना रग उत्पन्न थाय छे, तेना जेवुं

(खणरमणीअं के०) क्षणमात्र सुंदर देखाय तेवुं छे ॥ ३४ ॥

भावार्थ—जेम सध्याकाले अनेक प्रकारना वादलांना रंग थाय छे, ते क्षण मात्र देखाइने वायुना प्रयोगथी नाश पामे छे. वली जेम जलकमल (पुंडरीकादि कमल) अने स्थलकमल (गुलाबनां फूल आदि) केवां सुंदर प्रफुलित देखाय छे? परतु तेज फल, बे त्रण दिवसमां एवां करमाइ जाय छे के, तेनी काइ पण शोभा रहेती नथी, तेम जवानी अवस्थामा पण शरीर, पुष्पनी पेठे खीलेलु देखाय छे. अर्थात् मोहनु कारण थइ पडे छे. परंतु तेनुं तेज शरीर, वृद्धावस्थामा एवु नठारु थइ जाय छे के, तेना सामुं जोवुं पण बहुधा गमे नहीं! माटे एवी तरुणावस्थामा शरीरनो शो मद करवो? ॥३६ ॥

आ शरीरनी सुदरतानो अहंकार न करवा आश्री सनत्कुमार चक्रवर्त्तिनी कथा टीकामा जणाव्याथी लखीए छीए.

कथा. ४

जरतचक्रवर्त्तिना जेवी रुद्धिवालो सनत्कुमारनामा चक्रवर्ती राजा हतो.

सनत्कुमारनो वर्ण अने रूप अनुपम हता. एक वेला सुधर्मसभामा ते रूप
नी स्तुति थई, ते वात कोइ बे देवोने रुची नही पछी तेओ ते शका टाल
वान विप्ररूपे सनत्कुमारना अंत पुरमा गया सनत्कुमारनो देह ते वेला
खेलभर्यो हतो, तेने अगे मर्दनादिक पदार्थोनु मात्र विलेपन हतु, एक न
हानु पंचियु पहेर्यु हतु, अने ते स्नानमज्जन करवा माटे बेठो हतो तेवामा
विप्ररूपे आवेला देवता, तेनु मनोहर मुख, कंचनवर्णी काया अने चद्रना
जेवी कांती, जोइने बहु आनद पाम्या जरा माथु धुणाव्यु, एटले चक्रवर्त्ति
ए पूछ्यु तमे माथु केम धुणाव्यु? देवोए कह्यु अमे, तमारु रूप अने वर्ण
निरीक्षण करवा माटे बहु अभिलाषी हता, स्थले स्थले तमारा वर्णरूपनी
स्तुति साभली हती आज ते वात अमने प्रमाणभूत थइ, एथी अमे आ
नद पाम्या, माटे माथु धुणाव्यु के, जेवु लोकोमा कहेवाय छे, तेवुज रूप
छे एथी वली विशेष छे, पण ओछु नथी सनत्कुमार, शरीरना वर्णनी स्तु
तिथी प्रभुत्व लावी बोल्यो तमे आ वेला मारु रूप जोयु तो भले, परतु

हुं ज्यारे राजसभामां वस्त्रालंकार धारण करी केवल सज्ज थइने, ज्यारे सिंहासन उपर बेसुं छुं, त्यारे म्हारुं रूप अने म्हारो वर्ण जोवायोग्य छे. अत्यारे तो हु खेलभरी कायाए बेठो छु जो ते वेला तमे म्हारुं रूप वर्ण जुओ तो अद्भूत चमत्कारने पामो, अने चकित थइ जाओ. पछी देवोए कह्यु. त्यारे अमे राजसभामां आवीशुं, एम कहीने त्यांथी चाल्या गया. त्यार पछी सनत्कुमारे उत्तम अने अमूल्य वस्त्रालंकारो धारण कर्यां, अनेक उपचारथी जेम पोतानी काया विशेष आश्चर्यने उपजावे तेम करीने ते राजसभामां आवी सिंहासन उपर बेठो. आजुबाजु समर्थ मंत्रियो, सुभटो, विद्वानो अने अन्य सभासदो योग्य आसने बेसी गया छे, राजेश्वर, चामरछत्रथी अने खमाखमाथी विशेष शोभी रह्यो छे. (वधाइ रह्यो छे) त्यां पेला देवताओ पाछा विप्ररूपे आव्या अद्भुत रूप वर्णथी आनंद पामवाने बदले जाणे खेद पाम्या छे! एवा स्वरूपमां तेओए माथु धुणाव्युं. चक्रवर्त्तिए पूछ्यु. अहो ब्राह्मणो! गइ वेला करता आ वेला तमे जुदा रूपमां माथु धुणाव्यु,

पनु शु कारण छे? ते मने कहो अवधिज्ञानानुसारे विप्रे कह्यु, के, हे महा
राज! ते रूपमां अने आ रूपमा भूमी अने आकाश जेटलो फेर पडी गयो
छे चक्रवर्तिए ते वात स्पष्ट समजवा पूछ्यु, त्यारे ब्राह्मणे कह्यु अधिराज!
प्रथम तमारी कोमल काया अमृततुल्य हती, पण आ वेलाए झेररूप छे तेथी
ज्यारे अमृततुल्य अग हतु, त्यारे आनद पाम्या हता आ वेला झेरतुल्य छे,
त्यारे खेद पाम्या अमे कहीए छीए ते वातनी सिद्धता करवी होय तो,
तमे हमणा तावुल थुको, तत्काल तेना उपर मक्षिका बेसशे अने ते परधाम
प्राप्त थशे सनत्कुमारे ए परीक्षा करी तो सत्य ठरी. पूर्व कर्मना पापनो जे
भाग, तेमा आ कायाना मद सबंधनु मेलवण थवाथी ए चक्रवर्तिनी काया
झेरमय थइ गइ विनाशी अने अशुचिमय कायानो आवो प्रपच जोइने
सनत्कुमारना अत करणमा वैराग्य उत्पन्न थयो के, केवल आ ससार तज
वा योग्य छे आवीने आवी अशुची स्त्री, पुत्र, मित्रादिना शरीरमां रहेली
छे. ए सघलु मोहमान करवायोग्य नथी. एम बोलीने, ते छ खडनी प्रभूता

नो त्याग करीने चाली निकळ्यो, एवुं जाणीने अहं ममत्व न करवो.

गजकर्णवञ्चला॰ लक्ष्म्यः त्रिदशचापसदृशं चंचलं

गयकन्नचचलाउ । लच्छीउ तिअसचावसारिछ ॥

विषयसुख जीवानां बुध्यस्व रे जीव मा मुह्यस्व

विसयसुह जीवाणं । बुज्झसु रे जीव मा मुज्झ ॥ ३७ ॥

अर्थ.–(जीवाणं के॰) जीवोनी (लच्छीउ के॰) लक्ष्मीयो जे ते (गयकन्न चचलाउ के॰) हाथीना कान जेवी चचल छे. अने (विसयसुहं के॰) विषयसुख जे ते (तिअसचावसारिछ के॰) इंद्रनां धनुष (आकाशमा लीलां पीळा धनुषनी आकृतिवाळां वादळां देखाय छे ते). सरखा चंचळ छे. ए हेतु माटे (रे जीव के॰) हे मूढ जीव! (बुज्झसु के॰) बोध पाम्य. अने (मामुज्झ के॰) मोह न पाम्य. केम के, फरीथी आवी मनुष्य देहादिक सामग्री मळवी घणीज दुर्लभ छे; माटे धर्मने विषे बोध पाम्य. ॥ ३७ ॥

भावार्थ.–रे आत्मन्! जे लक्ष्मीयोने देखीने तुं अहंकार धारण करे छे

के, आ लक्ष्मी जीवता सूधीमां महारी पासेथी जवानीज नथी; परतु ए शा०
लक्ष्मीयो हाथीना काननी पेठे चचल छे. केम के, योना काल उपर तें जे
उने मोटा धनाढ्य दीठा हता, तेउज कर्मना वश थकी थोडा कालमा दरि
द्र थएला तहारा जोवामा आवे छे, माटे लक्ष्मीयोनु स्थिरपणु नथी वली
जीवोना शब्दादिक विषयसुख पण इद्रधनुपनी पेठे एटले आकाशना
लीला पीला रगनी पेठे शीघ्र नाश पामे तेवा छे एटले वस्तुगते विषयनां
सुख झाजवाना पाणी जेवा, तथा धूमाडाना बाचका जेवा असत्य छे. माटे
हे जीव ! मनथी मानी लीधेला विषयसुखने तथा लक्ष्मीने असत्य जाणी,
श्री जबूकुमारनी पेठे धर्मसाधन करवाने तत्पर था '' ॥ ३७ ॥

कथा ५

राजगृही नगरीने विषे ऋषभदत्त नामा शेठ तेनी धारणी नामे नार्यानी
कूखमा जबुस्वामीनो जीव, जे पूर्व भवे पांचमा ब्रह्मदेवलोकने विषे तिर्यक्
जृभक जातिमा महर्द्धिक देवता हतो, ते त्याथी (देवलोकथी) चवीने, पुत्र

पणे आवीने उपन्यो. त्यार पछी माताए स्वप्नमा जंबूवृक्ष दीठो, पछी ज्यारे ते कुमारनो जन्म थयो, त्यारे तेनो जन्ममहोत्सव करीने जंबूकुमार एवु नाम दीधुं. अनुक्रमे युवान अवस्था पाम्यो, त्यारे सुधर्म गणधरनी पासे धर्म देशना सांभळीने वैराग्य पाम्यो. त्यारे श्री सुधर्मस्वामीने कह्युं के, हे जगवन्! हु चारित्र लेइश, पण म्हारा माता पिताने पूछी आवुं. एम कहीने पाछो घर तरफ आवे छे, एटलामा मार्गमां आवता जंत्रथी उपडेलो पत्थर, पोतानी पासेथी निकळ्यो देखीने विचारवा लाग्यो के, हमणां जो मने आ तोपनो गोलो लागी जात, तो हु अव्रतिपणामा मरण पामत! एवुं जाणी श्री सुधर्मस्वामीनी पासे पाछो आवीने, ते कुमारे समकित मूळ जे बार व्रत छे, ते बारे व्रत लीधां. एटले अंगिकार कर्या तेमां चोथा व्रतमा एटली मर्यादा राखी के, कदापि माता पिताना कहेवाथी स्त्रीयो परणवी पडे तो तेने परणुं, पण ते स्त्रीयोनी साथे जोग जोगवु नही. एवो त्याग करीने, फरी घेर आवी माता पिताने कह्यु के, हे माता! हे पिता! मने आज्ञा आपो, हु श्री सुध

मंस्वामी पासे दीक्षा लेजे. त्यारे माता पिताए कह्यु के, हे पुत्र ! दीक्षा पालवी घणी डुक्कर छे एवी रीते घणो घणो समजाव्यो, तोपण जंबूकुमारे मान्यु नही. त्यारे माता पिताए कह्यु के, हे पुत्र ! आठ कन्याउ साथे तहारुं सगपण करेलु छे, माटे तेने परणीने पछी दीक्षा लेजे. ते सांजळी जंबुकुमार मौनपणुं धारण करी रह्या. त्यार पछी माता पिताए, आठ कन्याउना पिता उने कह्यु के, अमारो पुत्र वैराग्यवान् थयो छे, माटे तमारे दीकरीयो परणाववानी मरजी होय तो जले परणावो. पण ते कन्याउनो त्याग करीने जो दीक्षा ले, तो अमारो दोष कहाडशो नही ते सांजळी सर्व शेठिया कहेवा लाग्या के, अमे नही परणावीए. पण ते शेठियाउनी दीकरीउए कह्युं के, अमे तो जंबुकुमारनेज परणीशुं, पण बीजाने परणवानो त्याग छे. त्यारे शेठियाउए पोतानी पुत्रीउने कह्यु के, एतो दीक्षा लेशे. तोपण दीकरीयोए कह्यु

वीश त्यारे लोको कहेवा लाग्या के, आ देशमा पाणी नथी, माटे शेलडी श0
थशे नही. तेम छता जो तने शेलडीज वाववानी इछा होय तो, एक-
वार जे आ घउनी खेती करेली छे ते कपावी ले, पछी शेलडी वनावजे एवु
लोकोनु कहेवु तेणे मान्यु नही, अने शेलडी वावी, ते थोडी उगी, एटलामा
कूवानु पाणी खूटी पड्यु, तेथी जे उगेली शेलडी हती ते पण सुकाइ गइ
त्यारे पश्चात्ताप करवा लाग्यो तेम हे स्वामिन्! तमे पण हतु सुख मूकीने
वीजा नवा सुखनी चाहना करो छो तो पछी पस्ताशो!! एवी स्त्रीयोनी वाणी
सांभली जंबूकुमारे कह्यु के, पूर्वोक्त दृष्टांते पश्चात्ताप नही करु परतु जो नही
समजशो तो तमेज पस्तावो करशो हु तो ललितांग कुमारनी पेठे तमारा
फंदमा नही पडु तेनी कथा कहु छु ते सांभलो एक नगरमा एक शेठनो
पुत्र ललिताग कुमार एवे नामे महा रूपवंत पुत्र हतो, तेने एक दिवसे ते
नगरना राजानी रूपवती नामा राणी छे, तेणीये दीठो त्यारे एकाते बोला
वीने तेनी साथे ससार सवधी भोगविलास करवा लागी एटलामां राजा ६१

पण त्या आव्यो त्यारे जयभ्रांत थइने, राणीए ते ललितांग कुमारने, खालमां उतार्यो. अने विचार्युं के, पछी कहाडीश हवे राणीतो राजानी साथे रमवा लागी गइ, अने ललितांग खालमा भूखे मरतो कोइ अन्य आवीने एठवाडो नाखे ते खाय, अने एठनु पाणी पडे ते पीए. एवी रीते च्यार महिना पर्यंत खालमा पडी रह्यो. इहां कोइ छ महिना सूधी पडी रह्यो एम पण कहे छे. "तत्व केवली गम्य" त्यार पछी ललितांगना मावापे घणोये जोयो, पण जड्यो नही, तेथी शोक करवा बेठां एटलामां वर्षाद आव्यो तेथी खालमा पाणी भराणुं, ते पाणी कहाडवा सारु खाल उघाडी, ते खालना पाणीनी साथे ललितांग पण तणातो तणातो नगरनी महोटी खालमां जइ पड्यो तेने लोकोए देखीने तेना माता पिताने जइ कह्यु. माता पिता जइ खालमाथी कहाडी घेर लइ गया, त्या मूर्छा लाइने पडी रह्यो. शरीर पीलु पडी गयुं, हाडका नीकली आव्यां, माता पिताये घणा प्रकारना तैलादिक मसली जागतो कर्यो, त्यारे कांइक सावचेत थयो. पछी औषधोपचार करता

बिंदुआ समान छे, तेनी लालचे जीव संसारमा रुळे छे जेम कोइ एक [1]पुरुप भूलथी उजड [2]अटवीमा जइ पड्यो, तेनी पछवाडे एक [3]हाथी दोड्यो, त्यारे ते हाथीना भयथी नासतो भागतो, एक वडनी [4]शाखामा जइ लटकी रह्यो हवे ते शाखानी नीचे एक [5]कूवो छे, तेमा च्यार [6]सर्प पोतानुं मोंढु फाडीने बेठा छे, तथा एक [7]अजगर पण मोंढु फाडीने बेठो छे, तथा ते वडना थडने हाथी धुणावी रह्यो छे, तथा जे शाखामा ते पुरुप लटके छे, ते शाखाने एक [8]कालो अने बीजो [9]धोलो एवा बे उंदरो कापी रह्या छे वली तेनी उपर एक मधमाखीनो मधपुडो छे, तेनी [10]मक्षिकाउं उडी उडीने ते पुरुपना शरीरने चटका मारी रहेली छे एटलामा ते मधपुडामाथी मधनुं एक [11]टींपु टबक्यु, ते पेला पुरुपनी जीभने जइ लाग्यु, त्यारे ते पुरुपे उचुं जोवा माड्यु

१ जीव २ संसाररूप अटवी ३ कालरूप हाथी ४ आउखारूप शाखो ५ नरकरूप कूवो ६ च्यार कपायरूप सर्प ७ नरकरूप अजगर ८ रात्री ९ दिवस एहवा बे उंदरो १० मव कुटुंबरूप मक्षिकाउं ११ विषयसुखरूप मधनुं टींपु

तो तेणे दीठु के मधपुडामांथी ए मधुबिंदु पडे छे; एवुं जाणीने ते टींपानी नीचे म्होडु उघाडु राखीने लटक्यो, अने टींपाना स्वादमां मग्न थयो थको पोताना उपर पूर्वोक्त अनेक जातना दुःख पड्या छे ते सर्वे भूली गयो एट-लामा एक [१२]विद्याधर आवीने कहेवा लाग्यो के, हे पुरुष! त्हारुं दुःख दे-खीने मने दया आवे छे, माटे आव्य! म्हारा [१३]विमानमा बेशी जा. हुं तने दुःखमाथी काढवा वाछु छु त्यारे ते पुरुष बोल्यो. हे विद्याधर! आ एक टीं पु मधनुं म्हारा मुखमा आववा द्यो, पछी हु आपनी साथे विमानमा बेशी चालु, एम एक टीपु आव्यु. वली पण कह्यु के, आ बीजु टींपुं आवे तो चा लुं. ए रीते एकेक टींपाना स्वादमां लोभाणो थको ते भिकट स्थानने छोडे नही, त्यारे विद्याधरे जाण्यु के, एतो एवोज मूर्ख छे, लोभी छे, ए कांइ दुःख माथी निकलशे नही एवु जाणी तेने त्यांज मूकी विद्याधर चाल्यो गयो तेम हे भव्यो! आ अवसर चूक्या तो फरी ससारमा पड्या, ने मनुष्य अव

१२ सुगुरुरूप विद्याधर १३ जिनधर्मरूप विमान

किये गामथी आवीने नेगा थाय छे, पछी त्या थोडीवार विश्राम करीने, ए टले जातु खाइने पाछा सर्वे पोत पोताना योग्य स्थानक प्रत्ये जता रहे छे, पण तेज एक ठेकाणे बेशी रहेता नथी, तेम आ ससारी जीव पण, कोइ कयि गतिमाथी, कोइ कयि गतिमाथी आवीने एकठा थाय छे त्यां पोत पोताना कर्मानुसारे सुख दु ख जोगवीने, पछी पाछा पोत पोताने योग्य ग तिमा जता रहे छे पण कोइ कोइना काथ्या रहेता नथी. वली जेम चारे दि शाएथी आवेला मनुष्योना नाम जूदा जूदा छे, तेमा चारे गतिमाथी आ वेला अने एक घरमा रहेला एवा जीवोना नाम पण जूदा जूदा कल्प्या छे तेमा कोइ माता कहेवाय छे, कोइ पिता, कोइ जार्या, कोइ जाइ, कोइ पुत्र, कोइ पुत्री, इत्यादि कल्पनाए करीने नाम ठराव्या छे तेमा तु म होटो मोह धारण करे छे, अने तेने सुखे सुखी, अने तेने दु खे दु खी थाय छे परतु हे मूढ जीव! तुं एटलु विचारतो नथी के, आ जूठा सबधने साचो सबध मानीने शु करवा हेरान थाउ छु? माटे हे जीव! एवा जूठा संबधने

जूर्गं मानीने, तेना उपरथी मोह उतारीने, आरम साधन करवाने विष उद्यमवंत था ! ॥ ३० ॥

॥ उपजातिवृत्तम् ॥

निशाविरामे जागरितः सन् परिज्ञावयामि गृहे प्रदीप्ते किं अहं स्वापिमि

निसाविरामे परिन्नावेयामि । गेहे पलित्ते किंम ऽहं सुयामि ॥

दह्यत आत्मान उपेक्षे एव धर्मरहिता दिवसान् गमयामि तत्

रूप्पतम ऽप्पाणमु वरकेयामि । जं धम्मरहिउ दिअहा गमामि॥३९

अर्थ –हे जीव! तने एवो विचार केम नथी आवतो के, हुं (निसाविरामे के०) रात्रि विराम पामे सते एटले पाछली चार घडी रात्री रहे सते जागीने (परिन्नावयामि के०) आवो विचार करुं के (जं के०) जे हुं (धम्मरहिउ के०) धर्म रहित थयो सतो (दिअहा के०) दिवसोने (गमामि के०) फोकट केम गमावुं छुं!!! अने वली (गेहे के०) शरीररूप घर (पलित्ते के०) बलवा मांडे सते (अहं के०) हुं (किं के०) श्या माटे (सुयामी के०) सूइ रहुं छुं! अने

ते सडी जाय, पडी जाय, यावत् विध्वंस थइ जाय तेवो छे अने जे आत्मा छे ते तेथी उलटो छे. एटले सडी जाय तेवो, पडी जाय तेवो, यावत् विध्वंस थइ जाय तेवो नथी एवी रीते आत्मानु अने देहनु स्वरूप जूदु समजीने तें जे देहने विषे मिथ्या अहपणु मान्यु छे, ते तथा देह संबंधी पदार्थोंने विषे मिथ्या ममत्व मानेलो छे, तेने खोटो जाणीने ते बेनो त्याग करवाने विषे प्रयत्नवंत था. ए उपदेश

॥ अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

या या व्रजति रजनी न सा प्रतिनिवर्तते
जा जा वच्चइ रयणी । न सा पडिनियत्तइ ॥

अधर्मं कुर्वतो जन्तोः अफला यान्ति रात्रयः
अहम्मं कुणमाणस्स । अहला जंति राइउ ॥४०॥

अर्थ—हे आत्मन्! (जाजा के०) जे जे (रयणी के०) रात्री (वच्चइ के०) जाय छे, (सा के०) ते ते (पडिनियत्तइ के०) पाछी आवती (न के०) नथी.

आ जग्याए दिवस ग्रहण नथी कर्यो, तोपण उपलक्षणथी ग्रहण करवो एटले गया दिवस पण पाठा आवता नथी. केमके (अहम्मं के०) अधर्मने (कुणमाणस्स के०) करतो एवो जे तुं, ते तहारी (राइ्ड के०) रात्रीयो जे ते (अहला के०) अफल, एटले निष्फल (जंति के०) जाय ठे. अर्थात् अधर्मे करीने तहारा मनुष्यजवना रात्री दिवस व्यर्थ जाय ठे. ॥ ४० ॥

जावार्थ —आ जीवनो जेटलो वखत धर्मसाधन करवामां जाय ठे, तेटलोज वखत ज्ञानी पुरुषोए सफल गएयो ठे, अने बाकीनो रात्री दिवसनो जे काल एटले धर्मसाधन विनानो जे काल, ते पशुनी पेठे निष्फल जाय ठे. केमके, पशुने विषे आहार, निद्रा, जय अने मैथुन विगेरे जेवी रीते ठे, तेवीज रीते तहारे विषे पण ठे. माटे तहारो जन्मारो पण धर्मसाधन विनानो पशु जेवो समजवो.

यस्य अस्ति मृत्युना सख्य यस्य च अस्ति पलायन मृत्योः सकाशात्
जस्स ऽत्थि मच्चुणा सक्खं । जस्स ट ऽत्थि पलायणं ॥

यो जानाति-न मरिष्यामि-केवलिनावुपलं म. निश्चये काङ्क्षति श्व धर्म. स्यादितिनान्वै.कार्य
जो जांणे नै मरिस्सामि । सो हुं कंखे सुए सिया ॥४१॥

अर्थ—हे जीव! (जस्स के०) जे पुरुषने (मच्चुणा के०) मृत्यु सगाथे (सक्खा के०) मित्रता (अत्थि के०) छे (व के०) वली (जस्स के०) जे पुरुषने (पलायण के०) मृत्युथी नासी जवु (अत्थि के०) छे, वली (जो के०) जे पुरुष (जाणे के०) एम जाणे छे के, (मरिस्सामि के०) हु मरीश (न के०) नही. (सो के०) ते पुरुष (हु के०) निश्चे (सुए के०) श्वः एटले आवती काले धर्मसाधन करीश, ए प्रकारे (सिया के०) स्यात् एटले कदाचित् (कंखे के०) आकाङ्क्षा करे. एटले इच्छा करे, अर्थात् ते एवी इच्छा करे, ते प्रमाणे छे, परंतु एवी रीते कोई पुरुषने कोई दिवस पण थयु नथी के, म्हारे मृत्युनी साथे मित्रता छे, माटे म्हारे तो कदि पण मरवु नही पडे! तथा कोई पुरुषने एम थतु नथी के, हु बलवान छु माटे मृत्युथी नाशीने बचीश तथा कोईना मनमा एम नथी थतु के, हु क्यारे पण नही मरु तो पण ते प्राणी धर्म संबधी कार्यना

शीघ्रता करवाने ठेकाणे आवती काले थशेज तो! एवी रीते प्रमाद, केम करतो हशे ! ! ॥ ४१ ॥

भावार्थ.–इहा अद्भूत उपमा अलंकारे करीने उपदेश करे छे. एटले आवी वस्तु कोइ दिवस निपजी नथी, ते कदाचित् जो निपजे, तो ते आश्चर्यकारक कहेवाय. आ जीवना मनमा एम थाय छे के, आजतो धर्मसाधन नही करीए, पण आवती काले करीशुं पण केम जाण्युं के, तु आवती काल्य सूधी जीवीश? माटे आवती काले जीववानुं तो कोण मनमां जाणे के, जेने मृत्युनी साथे खरी भाईबधी होय, एटले ते मृत्युने पोतानी आज्ञामां राखी शकतो होय, तो ते पुरुष कदापि एम धारे के, आजनुं काल्य करीशुं, तो ते युक्त छे. तथा कोई बलवान् पुरुष, मृत्युना झपाटामा न आवतां; एवी कोई पर्वतनी गुफामा पेशी जाय के, ते मृत्युना हाथमाज न आवे ! जो एवो शक्तिवान् होय, तो ते पुरुष कदापि आज करवानुं काल्य करीशुं, एम विचारे तो ते युक्त छे. तथा कोइ पुरुषे कोइ केवलज्ञानी महाराजनी पासेथी जाण्युं होय

के, हु तो कोइ काले मरवानोज नथी, तो ते पुरुष कदाचित् एम धारे के, हु आज करवानुं काव्य करीश, तो ते पण युक्त ठे. परंतु उपर लखेली सर्व वातो कोइ काले थई नथी, वर्त्तमान कालमा थती नथी, अने आगामी कालमा थशे पण नही तोयपण एनी मिथ्या कल्पना मनमा करीने, हे जडबुद्धि जीव! तु बीजा ससारना कामनो प्रमाद करवो गेडी दइने, फक्त धर्म साधन करवामा केम प्रमाद करे ठे? ॥ ४१ ॥

॥ आर्यावृत्तम् ॥

दंडेन सूत्रोवेष्टन यथा कुर्वतस्तथा प्रजाति निश्चये रात्रय' च दिवसा च

दंडकलिअं करित्ता। वच्चति हुं राइउ य दिवसा य ॥

आयु' लघुकुर्वन गताअपि न पनः निवर्त्तते

आउस संविल्लता । गयाविं नैं पुणो निवत्तंति ॥४२॥

अर्थ —हे आत्मन्! (दडकलिअ के०) दड जेम सूत्रनी कलना (करित्ता के०) करे ठे एटले कोलिआदिक नीच लोको फालका उपर घदेला सूत्रने

जेम लांबा दंडवडे करीने उकेले छे, अर्थात् लुगडुं वणवाने माटे लांबो ताणो करवाने अंत्यज लोको फालका उपर चढेला सूत्रने लांबा दंडना लसरकावडे करीने ऊपाटाबंध उकेले छे, तेम (आउस के०) आउखाने (सन्निल्लता के०) उकेलता एवा (राइउ के०) रात्रीयो (य के०) अने (दिवसा के०) दिवसो जे ते (वच्चति के०) जाय छे (य के०) अने वली (गयाव्रि के०) गया एवा जे दिवसो तथा रात्रीउं, ते (उ के०) निश्चे (पुणो के०) फरीथी (नियत्तति के०) पाछां आवतां (न के०, नथी. ॥ ४९ ॥

भावार्थ —एक कालरूप चंडाल छे, ते दिवस रात्रीनुं जवुं आववुं ते रूप, दंडना लसरकावडे करीने मनुष्यना आउखारूप सूत्रना पिंडने शीघ्रपणे उकेले छे एटले आउखाने जलदी घटाडे छे. माटे हे आत्मन्! ते आउखामांथी गयेला रात्री दिवस कदीपण पाछा आवता नथी. जेम आ ग्रंथ छपावीने प्रसिद्ध थयानी तिथि विक्रम संवत् १९४७ ना कार्त्तिक शुदि ५ (ज्ञान पांचम) ने सोमवार हतो. हवे ते वर्षनी एज तिथि, वार, आखा जन्मारामां

फरीथी आवनानो नथी तेम हे भव्य जीवो! आ गएला दिवस रात्री पण, तेनी पेठे पाछा आववाना नथी एटले गया ते तो गयांज!! एवुं जाणीने आ धर्मकार्य तो काले करीशुं, एम नहीं करता, ते धर्मध्यान प्रमादरहित पणे आजज करवुं ए उपदेश ॥ ४२ ॥

॥ उपजातिवृत्तम् ॥

यथा इहलोके सिंह इव मृग गृहीत्वा मृत्युः नरं नयति निश्चयेन अन्तकाले
जेहे हे सीहो व मियं गहाय। मच्चू नरं णेइ हु अतकाले ॥
न तस्य माता च पिता च भ्राता काले तस्मिन् जीवितनाशधारका भवन्ति
न तस्स माया व पिया व भाया। कालंमि तंमि ऽसहरा भवंति॥ ४३

अर्थ–(इह के०) आ लोकने विषे (जह के०) जेम (सीहो के०) सिंह जे ते (मय के०) मृग जे तेने (व के०) जेम (व शब्दनो इव अर्थ जाणवो) (गहाय के०) ग्रहण करीने, एटले पकडीने नाश करे छे, तेम (हु के०) निश्चे (मच्चू के०) मृत्यु जे ते (नरं के०) मनुष्यने (अंतकाले के०) आयुष्य पूरुं थये

(णेइ के०) लेइ जाय छे. (तस्स के०) ते माणसने (तंमि के०) ते (कालमि के०) समयने विषे एटले मरणना वखते (माया के०) माता जे ते (व के०) वली (पिया के०) पिता जे ते (व के०) वली (भाया के०) भाई जे ते (असहरा के०) अंशमात्र पण धारण करवाने, एटले लगारमात्र पण रक्षण करवाने (न न-वति के०) समर्थ नथी थता. ॥ ४३ ॥

भावार्थ —हे जीव गमे तेवो धीरजवालो मनुष्य होय, तोपण अंतकाले मरणनी घणी वेदनाथी ते माणस मृग जेवो निर्बल थइ जाय छे, त्यारे तेने सिंहरूप काल पकडीने लेई जाय छे. ते वखतें ते मनुष्यनां माता, पिता, भाई, इत्यादि कोइ पण लगारमात्र राखवा समर्थ थतां नथी. एटले गमे तेटला उपाय करे, तोपण तेने क्षणमात्र राखी शकता नथी. ॥ ४३ ॥

॥ आर्यावृत्तम् ॥

जीवित जलबिंदुसम, संपत्तयः तरंगलोलाः

जीअं जलबिंदुसमं । संपत्तीउ तरंगलोलाउ ॥

स्वप्नसमं च प्रेम, एवं जानीष तत्तथा कुरुष्व

सुमिणयसम चे पिम्मं । जं जाणसु तं करिज्जसु ॥ ४४ ॥

अर्थ—हे आत्मन्! (जीअ के०) जीवतु (जलबिंदुसम के०) जलबिंदु जेवु छे एटले डाभना अग्रभाग उपर रहेला, जलना बिंदुसमान चचल छे. तथा (सपत्तिउ के०) सपत्तियो जे ते (तरगलोलाउ के०) समुद्रना तरंग जेवी चचल छे एटले एक ठेकाणेथी वीजे ठेकाणे शीघ्र जती रहे तेवी छे. (च के०) वली (पिम्म के०) स्त्रीयादिकनो प्रेम जे ते (सुमिणयसमं के०) स्वप्न समान छे एटले क्षणमा नाश पामे तेवो छे ते कारण माटे (जं के०) जो (जाणसु के०) ए प्रकारे खरी रीते, जो अत करणथी अस्थिरपणु जाणतो होय, तो (करिज्जसु के०) जाण्या प्रमाणे कर्य एटले अप्रमादपणे धर्मसाधन कर ॥ ४४ ॥

ज्ञानार्थ.—लोकमा चालतु घणुं पोपटियु ज्ञान देखीने ग्रथकार उपदेश करे छे हवे पोपटियु ज्ञान एटले शुं? जेम कोइ माणसे एक पोपटने नणाव्यु के, बिल्लि (बिलाडी) आवे तो तरत उडी जवु, एवी रीते शिखव्युं. त्यार

पछी ते पोपट पण ते वाक्यनो वारंवार अभ्यास करीने, ते रीते बोलवा लाग्यो. परंतु ते विचाराने एम खबर नथी के, बिल्लि ते शुं? अने उडी जवुं ते शुं? पछी एक दिवस ते पोपट जेवो पांजरामांथी निकल्यो, तेवोज बिलाडीए झाल्यो. तोयपण ते पोपट पूर्वे शिखवेला वाक्यने बोले जतो हतो, ते वखतेज ते पोपटनी डोकी मरडी नाखी. माटे हे भव्य जीवो! कहो! ते पोपटनुं ज्ञान केवु कहेवाय? तेम आ सर्वे लोको मूखे एम बोले छे के, जीववुं जलना बिंदु जेवु चंचल छे. एवु बोले छे तोयपण, जीववाने माटे अनेक प्रकारना न करवाना योग्य एवा घणा उपाय करे छे. अने वली एम बोले छे के, आ संपत्तियो पण पाणीना तरंगनी पेठे अस्थिर छे. परंतु तेज संपत्तियोने राखवाने माटे, सन्मार्गने विषे वापरवामा घणुज कृपणपणुं करे छे, अने वली इम बोले छे के, स्त्रीयादिकनो जे प्रेम छे, ते स्वप्न समान छे, एवी रीते बोले छे. परंतु ते स्त्रीयादिक पदार्थोनो ज्यारे नाश थाय छे, त्यारे खरा अंतःकरणथी लावे रागे पोको मूकीने रुदन करे छे, माटे हे भव्यप्राणियो! तमे विचारो के, आ

ज्ञान केवुं कहीए? माटे ग्रंथकार एम कहे छे के, जो एम तमे जाणो छो, ए-
टले पूर्वे कहेली त्रण वस्तुने अतिशे जो चपल जाणो छो, तो पूर्वे कहेला
पोपटिया ज्ञानने मूकीने, तमे खरा अंत करणथी अनुजव ज्ञान करो एटले
तमारा कह्या प्रमाणे तमे वर्त्तो अर्थात् ते खोटाने खोटुं जाणीने, अने एक
जिनराजना धर्मने साचो जाणीने, तेने विषे उद्यम करो.

॥ रथोद्धतावृत्तम् ॥

संध्यारागश्च जलबुद्बुदश्च तदुपमे जीविते च जलबिंदुचपल

सऊरागजलबुब्बुउवमे । जीविएँ यें जलबिंदुचंचले ॥

यौवने च नदीवेगसन्निभे पापजीव किमिदं न बुध्यसे

जुव्वणे यें नइवेगसन्निभे । पावजीव किमियं न बुज्झसे ॥४५॥

अर्थ –(सऊराग के०) संध्या समयनो रंग, तथा (जलबुब्बु के०) पाणीनो
परपोटो (उवमे के०) ए बेनी छे उपमा ते जेने एवु, (य के०) अने (जलबिंदु
चंचले के०) डाजना अग्रजाग उपर रहेला पाणीना बिंदु जेवुं चपल एवु,

(जीविए के०) जीवित सते (य के०) वली (नइवेगसंनिन्ने के०) नदीना वेगने तुल्य एवु, (जुवणे के०) यौवन सते (पावजीव के०) हे पापजीव ! (न बुझसे के०) तु नथी वोध पामतो (इय के०) ए ते (किं के०) शु !! एटले ए ते केटलुं वधु आश्चर्य छे !!! ॥ ४५ ॥

जावार्थ.—आ संसारमा वधी आशाउ करतां जीववानी आशा घणी महोटी छे. केमके, आ जीवने ज्यारे छेलीवारे श्वास उपडे छे, अने डचका आवे छे, तोपण हजु हुं जीवीश, हजु हु जीवीश, एवी आशा रह्या करे छे, माटे कोइ विद्वान पुरुषनु आवुं वचन छे के.—

जीर्यंते जीर्णवयसः । पुंसः केशरदावपि ॥
जीविताशा धनाशा च । कुमारीव निवर्द्धते ॥ १ ॥

अर्थ.—जीर्ण थइ छे अवस्था ते जेनी, एवा पुरुषना केश तथा दांत जीर्ण थाय छे. एटले वृद्धावस्थामां माथाना केश धोला थाय छे. एटलुंज नहि पण केटलाक नाश पण पामे छे. अने दात पण शिथिल थाय छे. एटलुंज नहि

पण पडी जाय ठे त्यारे पोतानु जवानीपणुं देखाडवाने माटे, मूठोमा ज्यारे पलियां आवे ठे, त्यारे तेने खुटावी नाखे ठे एम करता ज्यारे वधारे धोला आवे ठे, त्यारे तेने गलेफ चढावे ठे एटले कालारग वडे रगे ठे तथा दात पडी जाय ठे, त्यारे जवानीपणु देखाडवाने माटे जनावरना हाडकाना वनावेला दातनी वत्रीशी मुखमा घलावे ठे एम करीने पराणे पराणे जवानीपणु लाववा जाय ठे, तोपण जवानी पाठी आवती नथी अने न गमतु एवु वृद्धपणु प्राप्त थाय ठे, त्यारे पण जीववानी आशा तथा धननी आशा, कुमारी कन्यानी पेंठे दिन दिन प्रत्ये वृद्धि पामे ठे. एटले तेने कोइ डोसो कहीने वोलावे, तो ते वचन माथु कांप्या जेवु लागे ठे शाथी के, एने जीववानी आशा घणी ठे माटे एटलाज माटे मूल ग्रथकार घणा दृष्टात आपी जीवितनु तथा जवानीपणानु अतिशे अस्थिरपणु देखाडे ठे. के, सध्याकालना लाल, लीला, पीला, जलकादार रंगना जेवु जीवित जणाय ठे पण ते रंग घडि वें घडिमां नाश पामे ठे, एवुं जीवित अस्थिर ठे वली तेथी वधारे अस्थिरपणुं

देखाडवाने माटे बीजु दृष्टांत कह्युं छे. के, पाणीना परपोटा जेवु जीवित अस्थिर छे, एटले ते थोडीवारमां नाश पामे तेवु छे तथा तेथी पण डाभना अग्राग उपर रहेलुं जल, तेथी पण थोडीवारमां नाश पामे छे, माटे तेना जेवु जीवित कह्यु छे तेमज जवानीपणु नदीना वेग जेवुं चंचल कह्युं. एटले नदीनुं पाणी जे आपणे नजरे जोयु, तेज पाणी विचारीने जोइए तो केटले छेटे जतु रह्यु अने आपणे तो जाणीए छीए के, तेनु तेंज आ पाणी छे तेम क्षणे क्षणे पलटातु जवानीपणु, तेने आपणे जाणीए के, तेनुं तेंज छे; परतु जे गइ काले हतु, ते जवानीपणु आज नथी. वली जवानी आवतां पहेला मावाप विगेरे एम जाणे छे के, म्हारो दीकरो जवान-थशे एटले म्होटो थशे, एम समजे छे, परतु वास्तविक रीते विचारीए तो, ते दिवसे दिवसे न्हानो थाय छे केम के, तेणे जेटलु आयुष्य बांध्युं छे, तेमांथी तेटलो काल ओछो थयो एज रीतना विपरित ज्ञानना वेगे चढी जवा । आ जीव समजतो नथी, माटे ग्रथकार कहे छे के, हे पापजीव! एटले हे ...रूप थइ गयेला प्राणिन्! आ

कह्यु तेवु अस्थिरपणु देखीने पण तु इजु केम बूझतो नथी ? ॥ ४५ ॥

॥ आर्यावृत्तम् ॥

अन्यत्र अन्यगतौ सुता अन्यत्र गेहिनी परिजनोऽपि अन्यत्र

अन्नेह सुआ अन्नेह । गेहिणी परिअणोऽवि अन्नेह ॥

भूतेभ्यो बलिरिव कुटुंबं गमितम् हतकृतांतेन

भूअबलिव कुडुंबं । पक्खित्तं हयकयंतेण ॥४६॥

अर्थ –(हयकयतेण के०) निंदा करवा जोग्य एवा जे यमराज (मातु कर्म) तेणे (कुडुंब के०) आगल कहेशे एवा, सर्व कुटुंबने (भूअबलिव के०) भूतने जेम बलिदान आपे, एटले जेम बाकला टुटा टुटा फेंके, तेम (सुआ के०) पुत्र पुत्रीयोने (अन्नत्र के०) अन्य गतिने विषे तेमज (गेहिणी के०) वल्लभ स्त्रीने पण (अन्नत्र के०) अन्यगतिने विषे तेमज (परिअणोऽवि के०) परिजनने. एटले परिवारने पण (अन्नत्र के०) अन्यगतिने विषे (पक्खित्तं के०) पहोंचाड्याछे अर्थात् पुत्र, पुत्री, स्त्री, अने परिजनादिक सर्वने जूदी जूदी गतिमा फेंकी दीधा छे.

'नावार्थ.—हे आत्मन्! आ संसाररूप चकडोल उपर चढीने, तुं एम विचार करे छे के, सघलुं कुटुंब म्हारा जेवुं सदायकाल एक स्थितिमां रहे, पण आ सर्व कुटुंबनो म्हारे कोइ दिवस वियोग पडे नही, एवा उपायमां तुं रात्री दिवस मडेलो छु, परंतु तुं एम विचार नथी करतो के, जे स्वभावेज अस्थिर वस्तु छे, ते सेंकडो उपाये पण स्थिर थवानी नथी. केम के, जे सर्वे कुटुंबी माणसो छे, ते सर्वेना कर्म जूदां जूदां छे. परंतु एकरुप नथी. तेथी करीने पुत्र, पुत्रीयो, स्त्री अने परिवार इत्यादिक पोतपोतानां कर्मानुसारे नाना प्रकारनी गतियोमांथी जे रीते आव्यां हता, तेवी रीते पाछा नाना प्रकारनी गतियोमां चाल्या जाय छे ते केवी रीते चाल्या जाय छे? तो के, जेम कोइ भूत देवताने वलिबाकला फेके छे, ते वलिबाकला पराधीनपणे जूदी जूदी जग्याए जइ पडे छे, तेम आ विचारा पुत्रादिक कर्माधीनपणाथी अनेक प्रकारनी गतियोमां जइ पडे छे. त्यां तथा आ भवना सुख दुःखादिकमां पण, तहारो कोइ उपाय चाली शकवानो नथी तोपण मिथ्या ममत्व बांधीने, जेम

चालता गाडातले कूतरु चालतुं होय, ते कूतरु एम विचारे के, आ सघलो गाडानो भार हु खेचु छु तेम तु पण एम समजे छे के, आ सर्व कुटुंबनु भरण पोषण पण हुज करु छु, एवो तु मिथ्या ममत्व करे छे परतु एम नथी जाणतो के, मनें कर्माधीन छे, तेमा हुं शु करी शकवानो छु ! ! एम विचारीने तेवा खोटा ममत्वने छोडी दइने, काइकतो आत्मसाधन करवानो अवकाश लाव्य ! ! ॥ ४६ ॥

जीवेन भवे भवे जन्मनिश मिलिता देहा ये त्यक्ता समारे

जीवेण भवे भवे । मिलिपाइ देहाइ जाइ ससारे ॥

तेषा न सागरोपमै क्रियते सख्या अनतैः

ताण नें सागरेहिं । कीरइ सखा अणतेहिं ॥ ४७ ॥

अर्थ –हे आत्मन् ! (ससारे के०) ससारने विषे (जीवेण के०) जीव जे तेणे (भवेभवे के०) भव भवने विषे (जाइ के०) जे (देहाइ के०) देह (मिलिपाइ के०) मेलव्या छे, एटले कर्या छे (ताण के०) ते देहनी (अणतेहि के०)

अनत एवा (सागरेहि के०) सागरे करीने एटले अनंता सागरना पाणीना बिंडुए करीने अथवा अनता *सागरोपम काले करीने पण (सख्या के०) सख्या जे ते (नी के०) नथी (कीरइ के०) करी शकाती ॥ ४७ ॥

भावार्थ –हे प्राणिन्! जे शरीरने अर्थे तु अनेक प्रकारनां पाप करे छे, देहना स्वरूपनो विचार कस्य के, तें केटलां शरीर करी करीने मूकी दीधां छे? ते देहनी सख्या, अनता सागरना बिडुवडे पण थइ शकती नथी, अथवा अनंता सागरोपमना काले करीने पण थइ शकती नथी. केमके, शास्त्रमा कह्यु छे के, जीवे जेटलां शरीरनो त्याग कर्यो छे, तेटला शरीरनो जो ढगलो करीए तो त्रणभूवनमा पण माइ शके नही केमके, ते शरीर अनतां छे. ते कारण माटे हे भव्यजीव! तु एम विचार कस्य के, जगत्मां देह समान कोइ बीजी अशुचि वस्तु प्राये छेज नही. कारण के, गमे तेवी सारी सारी वस्तु होय, ते पण देहना सबधथी बगडी जाय छे जेम सारामां सारा

* आ सागरोपमनु प्रमाण ग्रंथने अते जणाव्यु छे

मेवा मिठाइ इत्यादि, देहमा नाखीने तत्काल पाछुं काढीने जोइए, तो तेना सामु पण जोइ शकातु नथी, एवु नठारुं थइ जाय छे वली गमे एवा अत्तर चदनादि सुगधीदार वस्तु, देहनो सबध पामीने दुर्गंधमय थइ जाय छे ते-मज गमे तेवा सारामा सारा अने बहु मूल्यना वस्त्र पण, देहना सबधे क-रीने मलमलिन थइने गधाइ उठे छे एवी अशुचिनु पात्र आ देह छे, तेवा देहनीज रात्री दिवस छछेर (घणाज सेवा) करवामा काल गमावे छे तथा ते देहने माटे अधर्म अन्यायादिक करतां पण डरतो नथी, पण तेवा देहतो तें अनता धारण कर्या, ने मूकी दीधा. जेम शरीर उपर पहेरेलां वस्त्र जूना थएथी काढी नाखीने नवा धारण करे छे, ए न्याये तें च्यारे गतिमा अनेक प्रकारनां शरीर धारण कर्या छे माटे ते शरीर उपरथी मूर्छा उतारीने, जेम अशरीरी थवाय, तेवो उद्यम कर्य ॥ ४७ ॥

नयनोदकमपि तामा सागरसलिलात् बहुतर भवति

नयणोदयपि तासि । सागरसलिलाउ बहुयरं होई ॥

गलित रुदतीनां मातृणां अन्यान्यासां

गलियं रुअमाणीणं । माऊणं अन्नमन्नाणं ॥ ४८ ॥

अर्थ—हे आत्मन् (तासिं के०) ते (रुअमाणीणं के०) रडती एवियो ने (अन्नमन्नाण के०) अपर अपर जन्मने विषे थयेलीयो एवी (माऊण के०) मातानुं (गलिय के०) शोकथी निकलतां एवां (नयणोदयपि के०) नेत्रनां आसु पण (सागरसलिलाउ के०) समुद्रना पाणी थकी (बहुयर होइ के०) अतिशे अधिक होय छे. अर्थात् समुद्रना पाणीवडे पण आंसुना जलनु परिमाण थइ शकतुं नथी. ॥ ४८ ॥

जावार्थ—केटलाएक पुरुषो स्त्रीयादिक पदार्थथी वैराग्य पामीने दीक्षा लेवाने तैयार थया होय, परंतु तेन फक्त माता पितानो घणो स्नेह देखीने अने तेमने रोता कलकलता देखीने, तेना प्रणाम पाछा हठी जता जोइने ज्ञानी महाराज तेने उपदेश देवाने अर्थे कहे छे. के, हे जव्य जीव! तुं एक जवना माता पिताने रोतां कलकलता जोइने दिलगीर केम थाय छे? परंतु त्रि

चार करय के, तें कर्मना वशे करीने अनंता जन्मना अनता माता पिताने, रोता कलकलता मूकीने तु आ जन्ममां आव्यो छुं ते माता पिताउनी आंख माथी निकलतां आसुनी संख्या करवा बेशीए तो, समुद्रना पाणीथकी पण अतिशे अधिक थाय छे. त्यारे हवे तु कियां माता पिताने संतोप पमाडीश? माटे वस्तुताये विचार करय के आत्मानी माता कोण छे? पिता कोण छे? अर्थात् आत्माना माता पिता छेज नही एवुं विचारीने साहसिकपणे धर्म साधन करय ॥ ४८ ॥

यत् नरके नैरयिका दुःखानि माप्नुवंति घोराण्यनतानि च

जं नरए नेरइया । दुहाइ पावंति घोरणंताइ ॥

ततः अनन्तगुणित निगोदमध्ये दुःख जवति

तत्तो अणंतगुणियं । निगोअमझे दुहं होई ॥४९॥

अर्थ –(नरए के०) नरकने विषे (नेरइया के०) नारकी जे ते (जं के०) जे (घोरणंताइ के०) महाघोर, ने अनंता एवा (दुहाइ के०) दु खने (पावंति के०)

पामे छे (तत्तो के०) ते थकी (नीगोअम्मे के०) निगोद मध्यने विषे (अणंत गुणिय के०) अनतगुण (डुहं के०) डु:ख जे ते (होइ के०) होय छे. अर्थात् नरकना डु:खथी पण निगोदने विषे अनंतगुण डु:ख होय छे ॥ ४ए ॥

जावार्थ—नारकीना डु:खनुं वर्णन घणा सिद्धांतोमां प्रसिद्ध छे, तथा निगोदनुं स्वरूप निगोद छत्रीशी विगेरे प्रकरणथी जाणवु परंतु ते डु:खना वर्णनने इहां दिशमात्र देखाडीए छीए इहां नारकीना डु:खथी निगोदनु डु:ख अनतगुण शाथी कह्युं? ते कहीए छीए दृष्टांत—सातमी नरकमां उत्कृष्टायु तेत्रीश सागरोपमनु छ, ते तेत्रीश सागरोपमना जेटला समय थाय, तेटलीवार कोइ जीव सातमी नरकमा पूर्ण तेत्रीश तेत्रीश सागरोपमने आउखे उपजे, त्यारे तेने असख्याता जव नरकना थाय. ते असंख्याता जवमां सातमी नरकने विषे, ते जीवने जेटलुं छेदन जेदननु डु:ख थाय, ते सर्वे डु:ख एकठुं करीए, तेथी पण अनतगुण डु:ख निगोदीया जीव एक समयमां जोगवे छ वळी एक औदारिक शरीरमा अनंता जीव जेगा रहे छे. ते जेगा

भावार्थ —हे आत्मन्! तुं जिनराजनो धर्म पाम्या पछी निश्चय अने व्यवहार ए बे प्रकारे ते धर्मनुं करवुं, ते मूकी दइने, उलटो तेने बदले जेथी फरीथी पण संसाररूप आधला कूवामां पडाय, एवा निद्रा विकथादिक प्रमादने केम सेवे छे? केम के, मनुष्यनो जन्म, अने श्री जिनधर्मनी प्राप्ति, ए बेनो योग मळवो तो चिंतामणी रत्ननी पेठे महा दुर्लभ छे ॥ ५२ ॥

उपलब्ध जिनधर्म, न च अनुचीर्ण सेवित. प्रमाददोषेण

उवलद्धो जिणधम्मो । नय अणुचिण्णो पमायदोसेण ॥

हा इति खेदे हे जीव हे आत्मवैरिन् च बुबहु परतोऽग्रे वेत्स्यसे शोचिष्यसे

हा जीव अप्पवेरि अ । सुबहुं परउ विसूरिहिसि ॥५३॥

अर्थ —(जीव के०) हे जीव! तें दैवयोगथी (जिणधम्मो के०) जिनधर्म जे ते (उवलद्धो के०) पाम्यो परतु (पमायदोसेण के०) आलस्यादिक दोषे करीने (अणुचिण्णो के०) सेव्यो (नय के०) नथी (हा के०) आ घणी खेदकारक वार्त्ता छे. (अ के०) वळी (अप्पवेरि के०), हे आत्माना वैरि! (परउ

के०) परलोकने विषे तु (सुबहु के०) अतिशे घणुं (विसूरिहिसि के०) खेद पामीश. अर्थात् घणोज पश्चात्ताप करीश. ॥ ५३ ॥

भावार्थ —हे आत्मन्! सर्व सुखनी प्राप्तिनु कारण एवा जैनधर्मने पामीने, केवल प्रमाद दोषथीज, ते धर्मनु सेवन तें कर्यु नही. माटे तुं त्हारी मेलेज त्हारा आत्मानो म्होटो शत्रु थयो. एटले आत्मानी हत्या करनारो थयो माटे तुं मरण पामीने परलोकमां शशिप्रभराजानी पेठे घणोज शोक करीश. ॥ ५३ ॥ ते शशिप्रभराजानी कथा नीचे प्रमाणे जाणवी.

कथा ६ ठी.

सावत्थी नगरीने विषे शूरप्रभ, अने शशिप्रभ एवे नामे बे भाई राज्य भोगवता हता तेवामा एकदा समयने विषे, ज्ञानी गुरु श्री धर्मघोषसूरि नगरीनी बहार उद्यानने विषे पधार्या वनपालके जइ राजाने वधामणी दीधी. राजाये वनपालकने घणु द्रव्य आप्यु. पछी बे बांधव, श्री गुरु पासे गया. त्यां विधिपूर्वक वंदन करी उचित स्थानके बेठा गुरुए पण अवसर जाणी

धर्मदेशना दीधी जेम के—

॥ शिखरिणीवृत्तम् ॥

सदापाय कायः, प्रणयिषु सुखं स्थैर्यविमुखं ।
महारोगा जोगा, कुवलयदृशः सर्पसदृशा ॥
गृहावेशः क्लेश, प्रकृतिचपला श्रीरपि खला ।
यम स्वैरी वैरी, परमिह हित कर्त्तुमुचितम् ॥ १ ॥

अर्थ—आ शरीर निरंतर अपायरूप छे एटले कष्टरूप, दोषरूप, अने पापरूप एवु महामलिन आ शरीर छे तथा स्नेहिनु सुख पण अस्थिर छे एटले स्थिरताथे करीने रहित छे अर्थात् ते क्षणमात्रमा स्नेही पण थाय छे, अने तेज स्नेही क्षणमात्रमा वैरी पण थाय छे अने विषयजोग जे ते, महारोगरूप छे एटले विषयजोगथी अनेक प्रकारना रोग उत्पन्न थाय छे, अने स्त्रीयो जे ते, सर्प समान छे एटले जेम सर्प करडे, ने फेर चडे, ने प्राणनो नाश थाय तेम स्त्रीना ससर्गथी विकार उत्पन्न थाय छे, अने तेथी अनेकप्रकार

जन्म मरण थाय छे; माटे जे गृहस्थाश्रममा रहेवुं, ते केवल क्लेशरूप छे. अर्थात् ऊंटना उपर बेसवा जेवो गृहस्थाश्रम छे एटले जेम ऊटनां अढारे वांका होय छे, तेम गृहस्थाश्रम वालाने अनेक प्रकारना वाकां आवी पडे छे, पण कोइ वातनु पाशरु पडतु नथी. एटले गमे तेवी कठण कम्मर बांधीने दृढपणे ऊंट उपर बेठो होय, तोपण ते पुरुष हाल्या विना रहे नहि. तेम सुझे तेवो खबरदार, ससारमा कहेवातो होय तोपण तेने कोइ प्रकारनुं लांछन (पाप) लाग्या विना रहे नही अने लक्ष्मी पण स्वभावे चंचल छे, अने खल छे. एटले छेतरनारी छे अने वैरी एवो काल जे ते, स्वेछाचारी छे. एटले पोतानी मरजीमां आवे ते वखते जीवने पकडीने लेइ जाय छे, माटे आ नवमा उत्कृष्ट आत्मानु हित करवु घटे छे. एटले परलोकमां हितकारी एवुं धर्मसाधन करवुज योग्य छे ॥ १ ॥

इत्यादि धर्मदेशना सांभली बन्ने भाई घेर आव्या घेर आवीने शूरप्रभ पोताना भाई शशिप्रभ प्रत्ये कहेतो हवो. हे भाई! म्हारे राज्यनो खप

नथी त्यारे शशिप्रने कह्युं के, श्यामाटे तह्मारे राज्यनो खप नथी? त्यारे शूरप्रने कह्यु. हे जाई! राज्यने,ठेडे नरक पामीए माटे मह्मारे राज्यनो सर्वथा प्रकारे खप नथी. त्यारे शशिप्रजे कह्यु जाई! मनुष्यजव पामीने एहे शु करवा गमावे ठे? ए सर्वे बालकने विह्वामणरूप करी मूक्यु ठे माटे खाउ, पीउ, वावरो काया वालवाथी हाथमा शु आवशे? कोण जाणे परलोक ठे के नथी! अने प्रत्यक्ष सुख मूकीने परोक्ष सुखने शु करवा राठे ठे माटे हे जाई! मह्मारु कहेवु मानीने आ राज्य जोगवो परतु उतावला थइने जो संसार मूकशो, तो पठीथी घणोज पश्चात्ताप करशो! अने, वली पठी तमे कहेशो के, जाईए कह्यु नहोतु माटे हालमा सांसारिक सुख जोगवीने पठी वृद्धावस्थामा सयम लेज्यो एवी रीते शशिप्रजे कह्यु त्यारे शूरप्रज कहेतो हवो अरे जाई! ए तमे शु कह्यु? ॥ धर्मस्य त्वरिता गति. ॥ एटले धर्म तो प्रमाद मूकीने जलदीथीज करवो माटे आ राज्य ल्यो. एवी रीते कहीने बलात्कारे पोताना जाईने राज्य आपी शूरप्रज राजाये श्रीगुरु पासे जइ दीक्षा लीधी.

पछी घणा तप जप करी अंते अनशन करी, समाधिसहित काल करीने पांचमा ब्रह्मदेवलोकने विषे देवतापणे उपन्या. हवे शशिप्रभराजा राज्य भोगवी, *सात व्यसन सेवी मरीने त्रिजी नरकने विषे नारकीपणे उपन्यो. हवे शूरप्रभ देवताये अवधिज्ञानना बले करी जोयुं, त्यारे पोताना भाई शशिप्रभने त्रिजी नरकने विषे दीठो. देखीने विचार्युं के, एणे महारु कहेवुं न मान्युं, माटे नारकी थयो, ने घणुं दुःख भोगवे छे. तोयपण हुं ते दुःख टालुं. एम धारी ते देवता मोहनो लीधो नरकावासामां आव्यो. आवीने पोताना भाईने घणो घणो ताणवा माड्यो, तेम तेम ते घणीज वेदना पामवा लाग्यो. पछी देवता कहे के, भाई! तें महारु कहेवुं न मान्युं, भूंडा में तने घणुए कह्युं हतुं, तोपण तुं समज्यो नही. माटे हवे शुं करीश? त्यारे ते नारकी कहे के भाई! हवे शुं करु? पछी शूरप्रभ देव, परमाधर्मिने जलामण दइ पाछो दे-

* १ जुगटु, २ मांसभक्षण, ३ सुरापान, ४ वेश्यागमन, ५ आहेडीकर्म (मृगयाकरवी) ६ चोरीकरवी, ७ परस्त्रीसेववी.

अर्थ –(अणाहो के०) अनाथ पणे, (जीवो के०) जीव जे ते (धण धन्न हरणाइ के०) धन, धान्य, अने आभरणोने तथा (घरसयणकुडुंब के०) घर, स्वजन, अने कुटुंब जे तेमने (मिल्लेवि के०) मूकीने पण (कम्म वाय हओ के०) कर्मरूप वायुए करीने हणायो सतो (डुम्मस्स के०) वृक्षना (पुप्फ व के०) पुष्पनी पेठे (जाइ के०) जाय छे अर्थात् हेठे पडे छे ॥ ५६ ॥

भावार्थ –जेम वायुथी पराधीन थयेलुं पुष्प, थोडीवारमां नीचे पडी जाय छे, तेम आ जीव पण कर्मे प्रेर्यो सतो धन, धान्य, कुटुंब परिवार, घर, हाट, हवेली अने म्होटी म्होटी इमारतो, तथा सारा सारा घरेणां इत्यादिक साहबी मूकीने, अनाथ एटले रांक जेवो थइने, नरकादिक दुर्गतिने विषे जाय छे त्यां गया पछी पूर्वे कहेली कोइ पण वस्तु ते जीवने खप लागती नथी माटे हे जीव! परिणामे जे वस्तु त्हारी साथे नथी आवती, तेवी वस्तु उपरथी मोह ममत्वनो त्याग करीने, जे परभवने विषे साथे आवीने सुख करे छे, तेवा ज्ञानदर्शन चारित्रादिक धर्मनुं आराधन करय ॥५६॥

कदापि अपित समुद्रमध्ये

वसियं गिरीसु वसियं । दरीसु वसियं समुद्दमज्झंमि ॥

वृक्षाग्रेष च अपित समारे संसरता कदाचित्

रुक्खग्गेसु य वसियं । संसारे संसरंतेणं ॥ ५७ ॥

अर्थ.—हे आत्मन्! (संसारे के०) संसारने विषे (संसरंतेण के०) पर्यटन करतो एवो जे तुं, तेणें (गिरीसु के०) पर्वतोने विषे (वसिय के०) निवास कर्यो छे तथा (दरीसु के०) पर्वतोनी गुफाने विषे पण (वसियं के०) निवास कर्यो छे तथा (समुद्दमज्झंमि के०) समुद्रनी मध्ये (वसियं के०) निवास कर्यो छे (य के०) वली क्यारेक (रुक्खग्गेसु के०) वृक्षना अग्रने विषे (वसिय के०) निवास कर्यो छे अर्थात् पूर्वे कहेला सर्व स्थानकोमां तुं अनंतीवार निवास करी आव्यो छे. माटे तहारु निवासस्थान एक ठेकाणे नथी. ॥ ५७ ॥

भावार्थ—कोइ शिष्यने पोताना देशनुं, तथा पोताना गामनुं, तथा पोताने रहेवानी ईमारतनुं, तथा पोतानी उत्तम ज्ञातिनुं, तथा पोताना प्रसिद्ध

कुलनु, तथा पोताना उत्तम वर्णनु, इत्यादिक अभिमानने धारण करतो जो इने, गुरु उपदेश करे छे. के, हे शिष्य! तु मिथ्या अभिमान शु करवा करे छे? परतु तु विचार कर के, आ ससारमा भ्रमण करता केटलीएक वखत तुं पर्वतने विषे पत्थररूपे थइ आव्यो छे. तथा केटलीएक वखत पर्वतनी गुफामा पण सिंहादिक पशुरूपे थइ आव्यो छे, तथा केटलीएक वखत समुद्रने विषे जल जतु रूपे थइ आव्यो छे, तथा केटलीएक वखत वृक्षोना अग्रभागमां कागडा प्रमुख पक्षिरूपे निवास करी आव्यो छे इत्यादिक घणीक जग्याए निवास करी आव्यो छे. माटे म्हारुं कीयु एक निवासस्थल छे? अर्थात् एक पण छे काणे निवास करवाना स्थाननो त्हारो निश्चय नथी. तोपण म्हारुं म्हारु करीने मिथ्या अभिमान शु करवा करे छे? ॥ ५७ ॥

देवः नैरयिकः इति च कीटः पतगः इति मानुषः एव

देवो नेरइउ त्ति य। कीडे पयंगु त्ति माणुसो एसो॥

रूपीरूववान् य विरूपः सुहभागी दुःखभागी य
रूवंस्सी ये विरूवो । सुहभागी दुखभागी य ॥५८॥

अर्थ.—हे जीव! तु केटलीएक वखत (देवो के०) देव थयो छे, तथा (नेरइउ के०) केटलीएक वखत नारकी ए प्रकारे थयो छे, (य के०) वली (कीड के०) केटलीएक वखत कमियादिक कीडो थयो छे, तथा (पयगुत्ति के०) केटलीएक वखत पतंगियो ए प्रकारे थयो छे वली (माणुसो के०) केटलीएक वखत मनुष्य थयो छे. वली (एसो के०) एज तु (रूवस्सी के०) केटलीएक वखत रूपवंत थयो छे. (य के०) वली एज तु (विरूवो के०) केटलीएक वखत कुरूपवंत थयो छे. (य के०) वली (सुहभागी के०) केटलीएक वखत सुखनो जोगवनारो थयो छे. अने वली (दुखभागी के०) केटलीएक वखत दुःखनो जोगवनारो पण थयो छे

भावार्थ —आ जीवे नटवानी पेठे जूदां जूदां रूपे करीने आ संसाररूपी रंगभूमिमा अनेक प्रकारना नाटक कर्यां छे. जेम के, कोइक वखत देवतानो

वेश नजव्यो, त्यारे एवु विचार्युं के, जगत्मा म्हारा जेवो कोइ सुखीयो नथी तथा कोइक वखत नारकीनो वेश नजव्यो, त्यारे एवुं विचार्युं के, जगत्मा म्हारा जेवो कोइ दु खीयो नथी तथा कोइक वखत निर्यचनो वेष नजव्यो, त्यारे एवु विचार्युं के, जगत्मा म्हारा जेवु कोइने पराधीनपणानुं दु ख नथी वली कोइक वखत मनुष्यनो वेष नजव्यो, त्यारे एवु विचार्युं के, जगत्मा कोइ म्हारा जेवो श्रेष्ठ बुद्धिवालो नथी एमज कोइक वखत पोताना पुद्गलना रूपनो अहंकार कर्यो के, म्हारा जेवो जगत्मा कोइ रूपालो नथी तथा ज्यारे कुरूपवान् थयो, त्यारे एवु विचार्युं के, म्हारा जेवो जगत्मा कोइ कुरूपवान् नथी एम माकडानी पेठे कोइ वखत सुखी थइने नाच्यो, अने कोइ वखत दु खी थइने नाच्यो माटे हे आत्मन् ! ए सर्व वेशने असत्य जाणीने, फरीथी तेवा वेश धारण करवा पडे नहीं, तेवो उद्यम कर ॥ ५८ ॥

राजा इति च द्रमकः इति च एष श्वपाक इति एष वेदवित्

राउत्ति य दमगुत्ति य । एस सवागुत्ति एस वेयविऊ ॥

स्वामी दास॰ पूज्य॰ खन इति अधन॰ धनपतिरिति

सामी दासो पुज्जो । खलोत्ति अधणो धणवइत्ति ॥५९॥

नापि अत्र कोपि नियमः स्वस्यकर्मतस्यविनिवेशः तस्यमदृशीकृताचेष्टायेनसः

नवि इत्थ कोइ निअमो । सकम्मविणिविठसरिसकयचेठो ॥

अन्यान्यरूपवेष॰ नटइव परावर्त्तते जीव॰

अन्नुन्नरूववेसो । नडुव्व परिअत्तए जीवो ॥६०॥ युग्मम् ॥

अर्थ —हे जीव ! तुं केटलीएक वखत (राउत्ति के०) राजा ए प्रकारे थयो (य के०) वली (दमगुत्ति के०) भीखारी ए प्रकारे थयो (य के०) वली (एस के०) एज तुं (सवागुत्ति के०) चंडाल ए प्रकारे थयो वली (एस के०) एज तु (वेयविऊ के०) वेदनो जाण थयो वली (सामी के०) स्वामी थयो अने (दासो के०) दास थयो. (पुज्जो के०) पूज्य थयो अने (खलोत्ति के०) खल ए प्रकारे थयो वली (अधणो के०) निर्धन थयो अने (धणवइत्ति के०) धनपति ए प्रकारे थयो. ॥ ५९ ॥—(इत्थ के०) एमा. एटले पूर्वे कह्युं तेमा (कोइ

के०) कोइ प्रकारनो (निअमो के०) नियम जे ते (नवि के०) नथीज. केम के, (सकम्म के०) पोताना ज्ञानावरणीयादिक जे जे कर्म, तेनी (विणिविठ के०) विनिवेश एटले प्रकृति, स्थिति, अनुभाग अने प्रदेश ते रूप जे रचना, तेना (सरिस के०) सरखी (कयचिट्ठो के०) करी छे चेष्टा ते जेणे, एटले देवादिक पर्याय रूपनो अभ्यास (आश्रव)रूप व्यापार ते जेणे एवो सतो (नडुव के०) नटनी पेठे (अन्नुन्न के०) अन्य अन्य छे (रूववेसो के०) रूप अने वेश ते जेनो एवो (जीवो के०) जीव जे ते (परिअत्तए के०) पर्यटन करे छे ॥ ६० ॥

भावार्थ –हे आत्मन्! तु चौदराज लोकरूप चौटामा, राजा प्रजादिकरूपे स्त्री पुरुषोना वेश लइने, नटुआनी पेठे अनेक प्रकारे निष्फल नाच्यो, पण तेमाथी तने कोइ प्रकारनो अविनाशी सरपाव मल्यो नही. उलटो च्यार गतिमां भ्रमण करवारूप सरपाव मल्यो, तोपण ते भ्रमण करवाना अभ्यास थकी निवृत्ति पामतो नथी. जेम कोइ अफिण प्रमुखनो व्यसनी होय, ते व्यसनी ते अफिणने एम जाणे छे के, आ अफिण खावाथी घणा माणसोना

॥ अनुष्टुप्वृत्तम् ॥

अत्रमानात्परिभ्रंशाद्वधबन्धधनक्षयात् ॥

प्राप्ता रोगाश्च शोकाश्च जात्यन्तरशतेष्वपि ॥ १ ॥

अर्थ–अपमानथी, तथा उंची पदवीथी पडवाथी, तथा वध बंध अने धननो क्षय ते थकी शेकडो जातिमा रोग ने शोक, आ जीवे जोगव्या छे ॥१॥ आ अधिकार संबंधी श्रीआचारांगजी सूत्रमा विशेष प्रकारे कह्यु छे, त्याथी जोइ लेवु

नरकेषु वेदना अनुपमा असातप्रचुरबहुलपासुना

नरएसु वेअणाउ । अणोवमाउ असायबहुलाउ ॥

रेजीव त्वया प्राप्ता अनन्तकृत्व बहुविधा.

रेजीव तए पत्ता । अणंतखुत्तो बहुविहाउ ॥ ६१ ॥

अर्थ –(रे जीव के०) हे जीव! (तए के०) ते (नरएसु के०) रत्नप्रभादिक सात नरकने विषे (अणोवमाउ के०) उपमा रहित एवीया (असायबहुलाउ के०) दुःखे करीने भरेली एवीयो, एटले अशाता वेदनीय कर्मथी उत्पन्न

थएली एवीयो, अने (बहुविहाउ के०) बहु प्रकारनी (वेअणाउ के०) वेदनाउ जे ते (अणतखुत्तो के०) अनतीवार (पत्ता के०) पामो ठे. अर्थात् तु जोगवी चूक्यो ठे ॥ ६१ ॥

भावार्थ.—हे आत्मन्! तें बीजी गतियोमा तो अनेक प्रकारना दुःख नोगव्यां, परंतु रत्नप्रनादिक नरकोना दुःख तो कही शकाय तेवा ठेज नही! केम के, तेने विषे अनती शीत वेदना ॥ १ ॥ तेमज अनती उष्ण वेदना, एटले आपणे अहिंना आकरा धखधखना खेरना अंगारा होय, तेना उपर ते उष्ण वेदनीवाला नारकीना जीवने सुवाडे, तो तेने घणीज निद्रा आवी जाय. ॥ २ ॥ तथा एवीज रीतनी अनती क्षुधा वेदना, एटले जगत्मा रहेला सर्व घृतादिक पुजलो ते नारकीना जीवने खवरावीए, तोपण तेनी क्षुधा पूरी न थाय. ॥ ३ ॥ तेमज अनती तृषा वेदना, एटले जगत्मा रहेला सर्व समुद्रोनां पाणी ते नारकीना जीवने पाइए, तोपण ते नारकीना जीवनी तृषा ठीपे नही. ॥ ४ ॥ तेमज अनती खरज वेदना, एटले अनेक प्रकारनां तर-

वार प्रमुख शस्त्रवडे करीने, ते नारकीना जीवने घर्षण करे, तोपण तें नारकीना जीवनी खरज मटे नहीं ॥ ५ ॥ तेवी रीते अनती परवशपणानी वेदना एटली वधी ठे के, आखा जगत्ना परवशपणानी वेदना एकठी करीए, तोपण तेना बरोबर न थाय. ॥ ६ ॥ तेवी रीते ज्वर ॥ ७ ॥ दाह ॥ ८ ॥ जय ॥ ए ॥ अने शोक ॥ १० ॥ ए चारनी वेदना आखा जगत्नी एकठी करीए, ते थकी पण एकेक वेदना अनतगुणी जाणवी आवी अनंतगुणी वेदनाउ, सात व्यसननो सेवनार प्रमुखने जोगववी पडे ठे जेम के, कोइए परस्त्री सग कस्यो होय, तेने त्या (नरकमा) तेज स्त्रीना आकार जेवी लोढानी पुतली बनावीने, अने तेने अग्निवडे सारी पेठे लालचोल धग्धधखती करीने, ते स्त्रीनी साथे ते परमाधार्मियो अनेकवार ते पुरुषने बलात्कारे आलिंगन करावे ठे. इत्यादिक नरकने विषे अनतगुणी वेदना शास्त्रमा कही ठे. तेने विचारीने हे मदमते! काइक तो पाप करता पाठो ऊसरय! ॥ ६१ ॥

आ नरकना उःखना अधिकारने विशेषे जाणवानी मरजी होय तो श्री

सूयगडांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना पांचमा नरक विजक्ति अध्ययनने विषे जाइ लेज्यो.

देवत्ते मनुजत्वे पराभियोगत्व उपगतेन

देवत्ते मणुअत्ते । पराजिउंगत्तणं उवगएणं ॥

जीषणडुःख बहुविध अनंतकृत्व: समनुभूत

जीसणडुहं बहुविहं । अनंतखुत्तो समणुजूअं ॥ ६१ ॥

अर्थ –हे जीव! (देवत्ते के०) देव जवने विषे, तथा (मणुअत्ते के०) मनुष्य जवने विषे (पराजिउंगत्तण के०)परतंत्रपणाने (उवगएण के०) पाम्यो एवो तु जे तेणें (बहुविह के०) बहु प्रकारनुं (जीसणडुह के०) जयानक डुःख जे ते (अणंतखुत्ता के०) अनंतीवार (समणुजूआ के०) अनुजव कर्युं ठे ॥ ६१ ॥

जावार्थ –हे आत्मन्! विशेष ज्ञानवंत एवा देव जवने विषे, तथा मनुष्य जवने विषे पण, स्वतंत्रपणुं मूकीने परतंत्रपणा वडे, एटले परवशपणे रहीने, अर्थात् इंडियोने वश थइने, महामहा कष्ट अनंतीवार जोगव्यां ठे.

एटले इंद्रियोए जेम जेम तने नचाव्यो, तेम तेम तुं नाच्यो, ने तेथी नरक त्रया नक डुःखने पाम्यो, परंतु तें इंद्रियोने त वश न करी माटे ज्यारे त्यारे पण, ते इंद्रियोने वश करीने आत्मसाधनमां वर्त्तिश, त्यारेज तहारु कल्याण थशे ॥६२

तिर्यग्गतिं अनुप्राप्तः भीममहावेदना अनेकविधाः

तिरियगइ अणुपत्तो । जीममहवेअणा अणेगविहा ॥

जन्ममरणारघट्टे अनन्तकृत्वः परिभ्रान्तः

जम्मणमरणरहट्टे । अणतखुत्तो परिभ्रमिउ ॥ ६३ ॥

अर्थ –हे आत्मन्! तुं (तिरियगइ के०) तिर्यंच गतिने (अणुपत्तो के०) पाम्यो छे त्यां (अणेगविहा के०) अनेक प्रकारनी (जीममहावेअणा के०) नय-कर एवी महोटी वेदनाउने सहन करतो सतो (जम्मण मरण रहट्टे के०) जन्म मरणरुप रहेंटने विषे (अणतखुत्तो के०) अनंतीवार (परिभ्रमिउ के०) परिभ्रमण करी आव्यो छे ॥ ६३ ॥

भावार्थ –हे जीव! तुं तिर्यंच गतिने विषे गयो, त्यां आगल गधेडादिपणे:

अवतरीने कुंभारादिकना हाथनां घणा डफणां खाइ आव्यो छे. वळी घोडा प्रमुखना अवतार धारण करीने घणा कोरडादिकना प्रहार सहन करी आव्यो छे अने हाथी प्रमुख थइने अंकुशना प्रहार सहन करी आव्यो छे. वली वलद प्रमुखना नवमा घणी परुणीनी आरोना प्रहार खाइ आव्यो छे. वली माकडा प्रमुखना नवमा घेरघेर शलामो करी नाचीने रोटलाना टुकडा पराणे पामवानु कष्ट सहन करी आव्यो छे वली बोकडा प्रमुखना नवमां मरणातकष्ट सहन करी आव्यो छे. वली पोपट प्रमुखना नवमां पांजरादिकने विषे बधनकष्टने सहन करी आव्यो छे अर्थात् एवुं कोइ दुःख नथी के, जे दुःखने तें सहन नथी कर्युं ।। ए प्रकारे अनंतीवार घोर महा नयानक दुःख तें सहन कर्या छे माटे हवे एवु धर्मसाधन कर्य के, जेथी तेवां दुःख नोगवत्रा पडे नही ॥ ६३ ॥

यावंति कान्यपि दुःखानि शारीराणि मानसानि च संसारे

जावंति केवि दुक्खा । सारीरा माणसा वै संसारे ॥

मास' अनन्तकृत्व जीव ममारकतारे
पत्तो अणतखुत्तो । जीवो ससारकतारे ॥ ६४ ॥

अर्थ –(जीवो के०) जीव जे ते (ससारे के०) ससारने विषे (सारीरा के०) शरीर सबधी (य के०) वली (माणसा के०) मन सबधी (जावंति के०) जेटलां (केवि के०) कोइ पण (दुक्खा के०) दुःख छे, तेने (ससारकतारे के०) ससाररूपी अटवीने विषे (अणतखुत्तो के०) अनतीवार (पत्तो के०) पाम्यो छे एटले ससाररूप अटवीमा परिभ्रमण करता था जीव सर्वे दुःख सहन करी आव्यो छे ॥ ६४ ॥

भावार्थ –आ संसारने विषे दुःख बे प्रकारना छे एक शरीर सबधी रोगादिके करीने दुःख छे, अने बीजु मन सबधी इष्ट वस्तुना वियोगादिक थकी दुःख छे ते सर्वे दुःख आ संसाररूप अटवीने विषे भ्रमण करता, आ जीवे अनतीवार भोगव्या छे. ॥ ६४ ॥

तृष्णा अनतकृत्वः संसारे तादृशी तव आसीत्नरके

तण्हा अणतखुत्तो । मसारे तारिसी तुमं आसी ॥

यां तृष्णां प्रशमितु सर्वोदधीना उदक न तारीकुयात् र समर्थजतेत्

जं पसमेउ संवो । दहीणमुदय न तिरीज्जा ॥६५॥

अर्थ —हे जीव! (तुमं के०) तने (तण्हा के०) तृष्णा अर्थात् तृषा (तारिसी के०) ते प्रकारनी (अणतखुत्तो के०) अनतीवार (ससारे के०) नरकरुप ससारने विषे (आसी के०) उत्पन्न थइ हती (ज के०) जे तृषाने (पसमेउं के०) शमाववाने अर्थे (सव्वोदहीण के०) सर्व समुद्रोनुं पण (उदय के०) जल जे ते (तीरिज्जा के०) न समर्थ थाय !!!॥ ६५ ॥

आ प्रकारनो अर्थ प्रथम नरकनी वेदनामा कही गया छीए, माटे पुनरुक्ति दोषनु निवारण करवा माटे आ प्रकारनो भावार्थ जाणवो के, हे जीव! तने अनती तृष्णा उत्पन्न थइ छे, ते तृष्णा शमाववाने माटे, सर्व समुद्रोना पाणी ना बिंदु जेटला वनादिकवडे पण तहारी तृष्णा पूरी थाय तेम नथी कह्यु छे के:—

यत्पृथिव्या व्रीहियव । हिरण्य पशव स्त्रिय. ॥
नालमेकस्य तत्सर्व । मिति पश्यन्न मुह्यति ॥ २ ॥

अर्थ—सघली पृथ्वीमा उत्पन्न थएली अनेक प्रकारनी डांगेर तथा अनेक प्रकारना घउ अने जव विगेरे सघलु धान्य, जो एक जणने प्राप्त थाय, तो पण तेने धान्य सबधनी तृष्णा पूरी न थाय तेमज सघला जगत्मा रहेलु हीरा, माणेक, मोती, सोनु, रूपु विगेरे धन, एक पुरुषने प्राप्त थाय, तोपण ते पुरुषनी धन सबधिनी तृष्णा पूरी न थाय. तेमज जगत्ने विषे जेटला हाथी, घोडा, उट, बलद, गायो, भैंशो विगेरे चतुष्पद जीवो छे, ते जो एक जणने प्राप्त थाय, तोपण ते पुरुषनी चतुष्पद सबधिनी तृष्णा पूरी न थाय तेमज जगत्ने विषे रूपालीमा रूपाली देवागनाउ तथा महोटा महोटा राजानी राणीयो तथा महोटा महोटा धनाढ्यनी स्त्रीयो जेवी के, अत्यत लावण्यवाली, अत्यत रूपवाली, अत्यत गुणवाली अने सुदर सुगधीवाली एवी जवान स्त्रीयो जो एक पुरुषने प्राप्त थाय तोपण, ते पुरुषनी स्त्री सबंधि तृष्णा

पूरी न थाय ए प्रकारनो विचार करीने जे डाह्यो पुरुष वैराग्यने पामे छे, तेज पुरुष संसारने विषे मोह पामतो नथी ॥ १ ॥

माटे हे आत्मन्! उपर कह्या प्रमाणे तुं अनंतीवार विषयो जोगवी चूक्यो छे, परंतु जे सुखनो तें एक वखत पण अनुजव नथी कर्यो, एवा आत्म सुखनी प्राप्तिने विषे उद्यम कर! ॥ ६५ ॥

आसीत् अनंतकृत्वः संसारेनरकजवे तव क्षुधापि तादृशी
आसी अणंतखुत्तो । संसारे ते छुहावि तारिसिया ॥
या प्रशमयितुं सर्वः पुद्गलकायोपिघृतादिरपि न तीर्यात् न शक्नुयात्
जं पसमेउं सव्वो । पुग्गलकाउवि नै तारिज्जा ॥ ६६ ॥

अर्थ —रे जीव! (संसारे के०) नरक जवरूप संसारने विषे (ते के०) तने (तारिसिया के०) तेवा प्रकारनी (छुहावि के०) क्षुधा पण (अणंतखुत्तो के०) अनंतीवार (आसी के०) उत्पन्न थइ हती के, (जं के०) जे क्षुधाने (पसमेउं के०) शमाववाने (सव्वो के०) सर्व एवा (पुग्गलकाउवि के०) घृतादिरूप पुद्-

लना समूह जे ते पण (न तरिजा के०) न समर्थ थाय ! ॥ ६६ ॥

भावार्थ –हे आत्मन् ! नरक भवने विषे तने एवी क्षुधा उत्पन्न थइ हती के, आ जगत्मां रहेला जे घृतादिक सघला सारा सारा पुद्गलोवडे पण, ते क्षुधानी शान्ति थाय तेम नहोतु एवी क्षुधावेदनी तें परवशपणामा अनतीवार सहन करी छे, माटे तने उपदेश करवानो एटलोज छे के, आज स्वाधीनपणामा एकासणु करवु, अथवा एक उपवास करवो, तेमा पण तने महोटो विचार थइ पडे छे अने वली तु एवु बोले छे के, महाराथी सवत्सरीनो उपवास पण बनी शकतो कठण छे कारण के, महाराथी तो एक घडियार पण भूख्यु रहेवातु नथी. एम कहीने अनेक प्रकारना सारा सारा भोजन करावी जमे छे परतु हे मूढ जीव ! आवो जन्मारो थइने तें केटला मण घृतादिक मिष्ट पदार्थो खाधा हशे? तेनु सुख लेशमात्र पण आज तने रह्यु नही केम के, जो तु तहारा हाथे तहारी जीभ उपर हाथ फेरवी जो के, ते घृतादिक पदार्थोनी काइ पण चिकाश जणाय छे? अर्थात् नथी जणाती तेमज हवे

थी पण तुं अनेक प्रकारनां पाप प्रपंचादिक करीने सारा सारां जोजन करी
श, तोय पण पूर्वनी पेठे ते जिह्वाइंद्रि तृप्त थवानी नथी अने जिह्वाइ
द्रिनु पोषण छे, तेज सर्व इंद्रियोना पोषणनु मूल छे एटले जेम वृक्षना मूल
मा पाणी नाखीए, तो बधा वृक्षमां ते पाणी पसरे, तेम एक जिह्वाइंद्रिने
छूटी मूकवाथी बीजी इंद्रियो प्रयासे करीने जीती होय, ते पण कुमार्गे चा
ले छे. माटे नीतिशास्त्रमां कह्यु छे के, "जित सर्वं जिते रसे" एटले जेणे रस
नाइंद्रिय जीती, तेणे सघली इंद्रियो जीती जाणवी केम के, रसनेंद्रियने
मोकली मूकवाथी मद्यमांसादिकने विषे पण प्रवृत्ति थाय छे, अने तेथी विष
यनी वृद्धि थाय छे. तेणे करीने नरकादिकने विषे जवु पडे छे त्या पूर्वे कहेली
क्षुधावेदनी सहन करवी पडे छे. एटलाज माटे अथकारे क्षुधावेदनीना स्व-
रूपने विशेषे जणाववाने माटे फरीथी वर्णन कर्यु छे माटे तेथी पुनरुक्ति दो
ष समजवो नही ॥ ६६ ॥

कृ० । अनेकानि जन्ममरणाना परावर्त्तनशतानि
कोणाम अणेगाइ । जम्मणमरणपरियट्टणसयाइं ॥

उखेन मानुषत्वं यदि लभते यथोक्तिन मुख जीव
डुक्खेण माणुसत्त । जइ लहइ जहिच्छिय जीवो ॥६७॥

अर्थ —(जइ के०) ज्यारे (जीवो के०) जीव जे ते (अणेगाइं के०) अनेक एवा (जम्मण मरण के०) जन्म मरण तेना (परियट्टण के०) परावर्तन तेनां (सयाइ के०) शेकडो एटले जन्म मरणनां शेकडो परावर्त्तनने (काऊण के०) करीने (डुक्खेण के०) डु:खे करीने (माणुसत्तं के०) मनुष्यपणाने पामे छे, त्यारे (जहिच्छिय के०) यथा इच्छा प्रमाणे एटले पोतानी इच्छा प्रमाणे कुशलपणाने (लहइ के०) पामे छे ॥६७॥

नावार्थ —रे आत्मन्! अनंत एवा जन्म मरणना शेकडो एटले क्यारेक जन्म, क्यारेक मरण, ए प्रकारनो डु:ख सहन करीने, ज्यारे आ जीव मनुष्यपणाने पामे छे, एटले अकाम निर्जरा अने नवस्थितिनु परिपक्पणुं इत्या

दक कारण वडे करीने मनुष्यपणाने पामे छे, त्यारे तेने जोइती चीज मली शके छे. एटले देवताना सुखने आपनारो, तथा मोक्षना सुखने आपनारो आ मनुष्यभव छे. परंतु मनुष्यभव विना कोइ भव वडे सुखनी प्राप्ति थइ शकती नथी. एटलाज माटे ज्ञानी पुरुषोए सर्व भव करता आ मनुष्यभवने उत्तम गण्यो छे. अने दश दृष्टांते करी दुर्लभ पण एटलाज माटे कह्यो छे. आ दश दृष्टांतनु स्वरूप प्रसिद्ध छे माटे, तथा ग्रंथ विस्तार थवाना भयथी लख्युं नथी माटे आवा मोंघामा मोंघा मनुष्यभवने पामीने एले गमावी अवसर चूकजो नही. ॥ ६७ ॥

तन्मनुष्यजन्म तथादशदृष्टांतवत् दुर्लभलाभ विद्युल्लतावत् च मनुजत्व

तं तहदुल्लहलंभ । विज्जुलयाचंचलं च मणुयत्तं ॥

धर्मे यः विषीदति सः कापुरुषः न सत्पुरुषः

धम्ममि जो विसीयइ । सो काउरिसो न सप्पुरिसो ॥६८॥

अर्थ —(जो के०) जे पुरुष (तह दुल्लहलंभ के०) तथा प्रकारे, एटले चु-

ठे एटले पछी घणो पश्चात्ताप करवो पडे ठे ॥ ६ए॥

भावार्थ –अनंता भवरूप समुद्रमां भटकतां भटकतां मनुष्य जन्मरूप काठो प्राप्त थए सते पण जेणे अहिंसारूप जिनधर्म न आचरण कर्यो, तेने, जेम रणसंग्राममां युद्ध करवा गएला एक धनुर्धारी पुरुषना धनुष्यनी पणछ तूटी गइ, तेथी तेने जेम हाथ घसवा पड्या, तेम तहारे पण हाथ घसवा पडशे माटे हे जीव! जो तुं पण छती सामग्री सते जिनधर्मरूप भातु नहि ग्रहण करे, तो तहारे पण मरणावस्थाए पश्चात्ताप करवोज पडशे ते आ प्रकारे के, अरेरे! मे छती सामग्रीए पण आ शुं कर्युं!!! के, परलोके जतां धर्मरूप भातु काइ पण लीधुं नही! माटे हवे हुं शुं करीश! एवी रीते तहारे हाथ घसवा पडशे वली जेम आ भवमां थोडो काल रहेवा माटे कोइ पुरुष ज्यारे परदेश जवानो होय, त्यारे ते पुरुष प्रथमथी भाता विगेरेनो एटलो बधो बंदोबस्त करी राखे ठे के, अमुक जग्याए उतरीशुं, ने त्यां अमुक भोजन करीशुं एवी रीतनो ठराव करीने पछी पोतानी साथे भातादिक घणी

सामग्री लेइने जाय छे पण भातुं लीधा शिवाय जतो नथी. तेम तहारे तो अहिंथी मरीने क्यां जवु पडशे? ने त्यां केटला दिवस रहेवुं पडशे? अने कोने त्या जइने उतारो करवो पडशे? अने मार्गमां भातु लीधा विना शु खाइशु? इत्यादि परलोक संबधी तने काइ पण विचार थतो नथी! माटे हे मूढ जीव! सर्व दुःख मात्रने निवारण करनार अने मनोवांछित सुखने आपनार एवु धर्मरूप भातु लगाथे राख्य. ॥ ६९ ॥

॥ पद्धडीवृत्तम् ॥

रे जीव निशृणु चचलस्वभावान् मुक्त्वा परलोके यास्यति सकलान् अपि बाह्यभावान् तथा

रेजीव निसुणि चचलसहाव। मिल्हेविणु सयलवि बज्झभाव॥

नवभेदपरिग्रहस्य यत् विविधजालमस्ति अतःसंसारे अस्थिरत् सर्व तत् इन्द्रजालमिवासदस्ति

नवभेयपरिग्गह विविहजाल। संसारि अत्थि सेहु इंदयाल ॥७०॥

अर्थ.-(रे जीव के०) हे जीव! तु (निसुणि के०) सांभळ्य के जे, (चचल सहाव के०) चचल स्वभाववाला (सयलवि के०) सर्व एवाय पण (बज्झभाव

के०) शरीरादिक बाह्यभावने तथा (नवभेयपरिग्रह के०) नव भेदवाला परिग्रहनो (विविहजाल के०) अनेक प्रकारनो समूह तेने (मिल्हेयिणु के०) मूकीने परलोके जइश ए हेतु माटे (ससारि के०) ससारने विषे (अछि के०) जे शरीरादिक देखाय ठे, (सहु के०) ते सघलुं (इदयाल के०) इन्द्रजाल समान ठे ॥ ३० ॥

भावार्थ—हे आत्मन्! तहारु हितकारी एवु आ एक वाक्य सांभल्य आ देखातो शरीरादिक सघलो बाह्यभाव ठे, इंद्रजाल समान ठे, एटले नव प्रकारनो परिग्रह* ते सघलो चचल स्वभाववालो ठे एटले क्षणमा देखाय अने क्षणमा नाश पामी जाय एवो ठे. एटलुज नहि पण ससारमा जे जे वस्तु देखाय ठे, ते सर्वेने तुं इन्द्रजाल समान जाणीने तेने विषे मोह ममत्व न कस्य. कारण के, ते सघला बाह्यभावने मूकीने तु एकलोज परलोकमा जईश, पण पूर्वे कही तेमानी कोइ वस्तु पण तहारी साथे आववानी नथी. केम के, ते स

* १ धन. २ धान्य ३ क्षेत्र ४ घर ५ सुवर्ण. ६ रूपु ७ त्रांबुपित्तल ८ द्विपद ९ चतुष्पद.

वे, वस्तुताए असत् छे माटे तेने तु सत्यपणानी भ्रांति न करीश. ॥ ३० ॥

पितृपुत्रमित्रगृहगृहिणीनां जात समूहः ऐहलौकिकं सर्वं निजसुख शुभे कल्याणे सहायं निमित्तं

पियपुत्तमित्तघरघरणिजाय। इहलोइअ सव्व नियसुहसहाय॥

न अपीनिश्चे अस्ति कोपि तव शरणेत्राणे हेमूर्ख एकाक्येव सहिष्यसे तिर्यक्नरकदुःखानि

नं वि अत्थि कोइ तुह सरणि मुक्ख। इक्कल्लु सहसि तिरिनिरयदुक्ख॥

अर्थ—(मुक्ख के०) हे मूर्ख! (इहलोइअ के०) आ लोक संबधी (सव्व के०) सर्व एवो (पिय के०) पिता (पुत्त के०) पुत्र (मित्त के०) मित्र (घर के०) गृह (घरणि के०) स्त्री, तेमनो (जाय के०) समूह जे ते (नियसुह सहाय के०) पोताने सुख करवानो छे स्वभाव ते जेमनो एवो छे. एटले सौ पोत पोताना सुखना अर्थी छे पण (तिरि निरय दुक्ख के०) तिर्यंच तथा नरक ते संबधी दुःख. तेने (इक्कल्लु के०) तु एकलोज (सहसि के०) सहन करे छे, पण ते वखत तेमां नु (तुह के०) तहारे (सरणि के०) शरण करवा योग्य (कोइ वि के०) कोइपण (न अत्थि के०) थतु नथी. ॥ ३१ ॥

भावार्थ —आ जगत्मा परलोकने विषे काइ पण सहायता करवाने न समर्थ एवा माता पिता स्त्री पुत्रादिक सौ पोत पोताना स्वार्थी छे, पण कोईकोइनु नथी जेमके, उपर लखेला घरना माणसोने एवो निश्चय थाय छे के, हवे आ पथारीमा सूतारेलो माणस जीवशे नही, एवु धारीने ते सूतेला माणसने महा तरपूर वेदनामा तरफडतो नजरे जोइने पण कहे छे के, तमे मने काइ कहो छो? एटले तमे छानी रीते सचय करेलु, आपेलु, मूकेलु, दाटेलु, काइ देखाडो छो? एवी रीते पोतानो स्वार्थ साधवानी वातो करे छे तथा तेना मरी गया पछी पण केवल पोतानो स्वार्थ सभारी सभारीने रुए छे के, आटलु काम अधुरु मूकीने गया! पण तेओ एम नथी विचारता के, ज्यारथी समजणो थयो त्यारथी मार्डीने चोके नूता सूनी पण एणे आपणु वेतरु कूट्या कर्यु छे परतु ते बापडो नरकादिक गतिने विषे एटलो गयो छे, त्या तेने केवा दु ख पडता हशे? तथा ते बिचारो घणु द्रव्य मूकीने गयो छे! पण तेना बीजा दु खमा भाग न लेता फक्त तेनुज द्रव्य तेनी पछवाडे शुभ कृत्यमा वा

परन्तु, एवो विचार पण नथी थतो अने वली आवो विचार पण तेमने नथी थतो के, अरेरे! रात्री दिवस पोताना शरीरनु सुख पण न विचारता कूड कपट छलभेद अन्यायादिक करीने एणे आपणुज भरण पोषण कर्यु छे, पण पोताना परलोकनु साधन करवानो अवकाश जरापण एणे लीधो नथी एवी रीते कोइ रुदन करतु नथी माटे हे जीव! हे महामूर्ख!! कांइकतो विचार्य!! के, हु आश्रवभावमाथी निवृत्ति पामीने काइकतो संवरभावमा वर्त्तु ॥७१॥

॥ मागधिका वृत्तम् ॥

कुशाग्रे यथा अवश्यायो हिमबिंदुकः स्तोक तिष्ठति लम्बमानः

कुसग्गे जह उसबिंदुए । थोवं चिट्ठइ लंबमाणए ॥

एवं मनुजाना जीवितं समयमपि हे गौतम मा प्रमादीः

एवं मणुआण जीवियं । समयं गोयम मा पमायए ॥७२॥

अर्थ.—(जह के०) जेम (कुसग्गे के०) डाभना अग्रभागने विषे (उसबिंदुए के०) झाकलनो बिंदु जे ते (लंबमाणए के०) लांबो थतो सतो एटले वायु

भावार्थ —आ जगत्मा परलोकने विषे काइ पण सहायता करवाने न समर्थ एवा माता पिता स्त्री पुत्रादिक सौ पोत पोताना स्वार्थी छे, पण कोई कोइनु नथी जेमके, उपर लखेला घरना माणसोने एवो निश्चय थाय छे के, हवे आ पथारीमा सूवारेलो माणस जीवशे नही, एवुं धारीने ते सूतेला माणसने महा जरपूर वेदनामा तरफडतो नजरे जोइने पण कहे छे के, तमे मने काइ कहो छो? एटले तमे छानी रीते सचय करेलु, आपेलु, मूकेलु, दाटेलु, काइ देखाडो छो? एवी रीते पोतानो स्वार्थ साधवानी वातो करे छे तथा ते ना मरी गया पछी पण केवल पोतानो स्वार्थ सभारी सभारीने रुए छे के, आ टलु काम अधुरु मूकीने गया! पण तेओ एम नथी विचारता के, ज्याथी समजणो थयो त्यारथी मांडीने चोके सूता सूधी पण एणे आपणु वेतरु कूट्या कर्यु छे परतु ते बापडो नरकादिक गतिने विषे एटलो गयो छे, त्या तेने केवा दु ख पडता हशे? तथा ते विचारो घणु द्रव्य मूकीने गयो छे! पण तेना बीजा दु खमा भाग न लेता फक्त तेनुज द्रव्य तेनी पछवाडे शुभ कृत्यमा वा

परन्तु, एवो विचार पण नथी थतो अने वली आवो विचार पण तेमने नथी थतो के, अरेरे ! रात्री दिवस पोताना शरीरनु सुख पण न विचारता कूड कपट छलभेद अन्यायादिक करीने एणे आपणुज भरण पोषण कर्यु छे, पण पोताना परलोकनु साधन करवानो अवकाश जरापण एणे लीधो नथी. एवी रीते कोइ रुदन करतु नथी माटे हे जीव! हे महामूर्ख !! कांइकतो विचारय !! के, हु आश्रवभावमाथी निवृत्ति पामीने काइकतो संवरभावमा वर्तु ॥ ७१ ॥

॥ मागधिका वृत्तम् ॥

कुशाग्रे यथा अवश्यायो हिमबिंदुकः स्तोक तिष्ठति लम्बमानः
कुसग्गे जह उसबिंदुए । थोव चिट्ठइ लवमाणए ॥
एव मनुजाना जीवित समयमपि हे गौतम मा प्रमादी
एवं मणुआण जीवियं । समय गोयम मा पमायए ॥७२॥

अर्थ —(जह के०) जेम (कुसग्गे के०) डाभना अग्रभागने विषे (उसबिंदु ए के०) झाकलनो बिंदु जे ते (लंबमाणए के०) लाबो थतो सतो एटले वायु

वडे पडनान्नी तैयारीमा आवेलो (थोव के०) थोडो काल (चिठ्ठइ के०) रहे ठे (एव के०) ए प्रकारे (मणुआण के०) मनुष्य जे तेमनु (जीविय के०) जीवित जे ते चचल जाणवु माटे श्री महावीरस्वामी गौतमस्वामीप्रत्ये* कहे ठे के, (गोयम के०) हे गौतम! (समय के०) एक समयमात्र पण (मा पमायए के०) प्रमाद न करीश ॥ ३२ ॥

भावार्थ—श्री महावीरस्वामी गौतम प्रत्ये कहे ठे के, हे गौतम! एक समयमात्र पण प्रमाद न करीश केमके, आ मनुष्यपणानु जीववु डाभना अग्रभागमा रहेला जलबिंदुनी पेठे, थोडोज काल रहे तेवु ठे एटले जोता जोता अल्प वायुवडे पण शीघ्रपणे नाश पामे तेवु ठे अर्थात् डाभना अग्रने विषे रहेला जलबिंदु तो, फक्त वायुवडेज नाश पामे ठे, परतु आ मनुष्य तो, अनेक प्रकारना कारणोथी मरे ठे जेम के, ताव आववाथी, मूकारो थ-

* आ वार्त्ता श्री उत्तराध्ययन सूत्रना दशमा अध्ययनमा ठे, त्यांथी विस्तारना अर्थि पुरुषोए जोइ लेवु

वाथी, कोलेरा (कोगलियुं) आववाथी, घर पडवाथी, अग्निडे बलवाथी, शस्त्र प्रमुख वागवाथी, सर्प करडवाथी, इत्यादिक अनेक प्रकारना कारणो मलवाथी उचितो नाश पामे ले एम जाणीने हे जीव! धर्मकृत्यने विषे समयमात्रनो प्रमाद न कर ॥ ७२॥

आ ७३ तथा ७४ मी ए बे गाथाउ श्री सूयगडांग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कंधना वैतालीय अध्ययननी ले.

सबुध्यध्वं किं न बुध्यध्वं संबोधिः खलु प्रेत्य दुर्लभा

संबुज्झह किं न बुज्झह। संबोहि खलु पिच्च दुल्लहा॥

न एव उपनमति आगच्छति रात्रयोऽतीता नो सुलभं पुनरपि जीवित

नो हूं उवणमंति राइउ। नो सुलहं पुणरवि जीवियं ॥७३॥

अर्थ —श्री ऋषभदेव स्वामीना पुत्र श्री जरतेश्वर, तेमणे तिरस्कार कर्या एवा, अने राज्यना अर्थि एवा, पोताना अठाणु पुत्रो प्रत्ये श्री आदीश्वर जगवान उपदेश करे ले, अथवा श्री महावीरस्वामी पर्षदा प्रत्ये कहे ले के,

(सवुझह के०) अहो जव्यो! तमे वुको (वोध पामो)) (कि न वुझह के०)
केम तमे वोध नथी पामता? जे हेतु माटे जेमणे धर्म नथी कस्यो ते पुरु-
षोने (पिच्च के०) मरण पाम्या पठी परजवने विषे (सबोही के०) वोधिवीज
जे ते (खलु के०) निश्चे (डुल्लहा के०) डुर्लज ठे शाथी के, (राइन्न के०) रात्री
दिवस जे ते (हु के०) निश्चे (उवणमति नो के०) गयेला पाठा आवता नथी
तेम (जीविय के०) जीवित जे ते (पुणरवि के०) फरीने पण एटले फरी फरी
(सुलह नो के०) सुलज नथी एटले सयमरूप जीवित घणु डुर्लज ठे अथवा
(जीविय के०) जीवित जे ते अर्थात् तूटेलु आउखु जे ते (पुणरवि के०) फ-
रीने पण साधवु (सुलह नो के०) सुलज नथी एटले तूटेलु आउखु साध-
वाने कोइ पण समर्थ नथी ॥ ७२ ॥

जावार्थ —हे जव्य जीवो! तमे ज्ञान दर्शन चारित्ररूप धर्मने जाणो का
रण के, आवो अवसर फरी फरीने मलवो दुर्लज ठे. माटे घणी सामग्रीसते
पण, केम वोध पामता नथी? अर्थात् जोगने तुछ जाणी, तेनो त्याग करीने

सद्धर्मने विषे बोध पामो कह्यु छे के —

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

निर्वाणादिसुखप्रदे नरभवे जैनेन्द्रधर्मान्विते ।
लब्धे स्वल्पमचारु कामजसुख नो सेवितुं युज्यते ॥
वैडूर्यादिमहोपलौघनिचिते प्राप्तेऽपि रत्नाकरे ।
लातुं स्वल्पमदीप्ति काचशकल किं चोऽचित साम्प्रतम् ॥ १ ॥

अर्थ —मोक्षादिक सुखनो आपनार एवो, मनुष्यनो भव मले सते, तेमां वली जिनराजनो धर्म मले सते, तहारे लगारमात्र पण कामसुख सेववु घटतु नथी केम के, ते अल्प छे, अने ते सुखनो परिणाम् सारो आवतो नथी ते उपर दृष्टांत कहे छे के, जेम वैडूर्यादि रत्नो समूह जेमा रह्यो छे, एवा रत्ना करने पामीने एटले रत्नी खाण पामीने कातिरहित एवो, अने वली अल्प मूल्यवालो एवो काचनो ककडो लेवो शु तहारे घटे छे? अर्थात् पूर्वे कह्यो एवा रत्नाकरनो त्याग करीने, तेने बदले काचनो ककडो लेवो ते, घटेज नहीं.

तेम अतिशे अल्प अने तुछ एवा विषयसुखने अर्थें रत्नाकर समान जिनधर्मनो त्याग करवो, ते पंडित पुरुषने घटे नहीं वली जेणे धर्मकृत्य नथी कर्युं, तेने परजन्ममा नजमरूप जीवित मलतुज नथी वली गएला एवा, जे धर्मसाधन करवाने योग्य एवा, रात्री दिवस जे ते, तथा यौवनादिक काल इत्यादिक पाछा आवता नथी केमके, इन्द्रादिकनु पण त्रुटेलु आयुष्य पाछुं सधातु नथी माटे एवु जाणीने रात्री दिवस धर्मनु आराधन करवु ॥ ७३ ॥

हवे सर्व ससारी जीवने आयुष्यनु अनित्यपणु देखाडे छे

बाला॰ वृद्धा॰ च पश्यंतं गर्भस्था अपि त्यजंति मानवा

डहरा वुड्ढा य पासह । गप्भठावि चयंति माणवा ॥

श्येन यथा वर्त्तकत्तिर्त्तिरिं हरति एवं आयुक्षये त्रुट्यति जीवितं

सेणे जह वट्टयं हरे । एवमाऽऽउखयंमि तुट्टइ ॥७४॥

अर्थ—हे आत्मन्! (डहरा के०) बाल एवा (य के०) वली (वुड्ढा के०) वृद्ध एवा, वली (गप्भठावि के०) गर्भने विषे रहेला एवाय पण (माणवा के०)

मनुष्य जे ते (चयति के०) नाश पामे छे (पासह के०) तेने तुं जो वली (जह के०) जेम (सेणे के०) शिचाणो पक्षी जे ते (वट्टयं के०) तेतर पक्षीने (हरे के०) हरण करे छे अर्थात् शीघ्रपणे मारे छे (एव के०) ए प्रकारे (आउक्खयम्मि के०) आउखानो क्षय थये सते (तुट्टई के०) त्रुटे छे. एटले क्षणे क्षणे आयुष्य नाश पामे छे; अथवा मृत्यु जे ते जीवितने हरे छे. ॥ ७४ ॥

भावार्थ.—हे जीव! तुं विचारीने जो के, केटलाएक मनुष्य गर्भमां रह्या थकाज मरण पामे छे, अने केटलाएक महाकष्ट करीने जन्म थया पछी बालपणामांज मरण पामे छे, अने केटलाएक जवान अवस्थामांज पोताना स्त्री-आदिक वहाला पदार्थोने अणछ्याए मूकीने मरण पामे छे, अने केटलाएक तो वृद्धावस्थाना दुःख जोगवता जोगवता पराणे पराणे पग घसीने मरण पामे छे. वली आ जग्याए मानव शब्द ग्रहण कर्यो छे, तेनुं ए कारण छे के, उपदेश करवा योग्य होय, तेनेज मनुष्य कहीए. परंतु जे उपदेश देवा योग्य न होय, तेने तो मनुष्यनी पंक्तिमां न गणवा, एम ग्रंथकारनो अभि-

थाय छे वली मनुष्यनु आयुष्य अनेक प्रकारनां कारणो मलवाथी घणुज चचल छे, एम जणाववाने अर्थे सर्वे अवस्थामा मरण देखाड्यु छे वली श्री सूयगडाग सूत्रना प्रथम श्रुतस्कधना बीजा वैतालीय अध्ययननी बीजी गाथानी दीपिकामा तथा टीकामा कह्यु छे के,—

त्रिपल्योपमायुष्कस्यापि पर्याप्तेन्नतरमन्तर्मुहूर्त्तेनैव कस्यचिन्मृत्युरुपतिष्ठतीति

अर्थ —त्रण पल्योपमना आयुष्यवालाने पण, पर्याप्ति पाम्या पछी अतर्मुहूर्त्त करीने कोइक पुरुषने मृत्यु ते ते प्राप्त थाय छे

वली श्री ठाणागजी सूत्रना सातमा ठाणामा कह्यु छे के,

सत्त विहे आउ भेदे पन्नत्ते त जहा.

॥ आर्यावृत्तम् ॥

अज्झवसाण निमित्त । आहारे वेयणा पराघाए ॥
फासे आणापाणू । सत्तविहं ... आउ ॥ १ ॥

अर्थ —आयुष्यनो भेद एटले उपक्रम जे ते, सात प्रकारनो कह्यो छे. के-

मरे, निमित्तनु पामवापणुं ते ए हेतु माटे. हवे ते सात भेद देखाडे छे स-
राग स्नेहना भयथकी एटले कोइना उपर अत्यन्त स्नेह होय, तेवामा तेनो
नाश सांभळवाथी ठरावश थयो जे भय, तेथी आउखु त्रुटे छे एम आगळ
पण संबंध जोडवो ॥ १ ॥ तथा दंड शस्त्रादिकना उचिता घातथी ॥ २ ॥
तथा अत्यंत आहार करवाथी. ॥ ३ ॥ तथा नेत्र अने शूलादिकनी वेद
नाथी ॥ ४ ॥ तथा पराघातकी एटले गर्भपातादिकथी. ॥ ५ ॥ तथा ...
वारना सर्पादिकना स्पर्शथी ॥ ६ ॥ अने श्वासोश्वासने रुंधवाथी ...
सात प्रकारे आउखु भेदाय छे. अथवा उपक्रम ते कारण ते ...
उखुं तेज पूर्वे कहेला निमित्तथी त्रुटे छे. आ पूर्वे जे ...
खावावाळानेज आश्रीने जाणवुं. पण, निरुपक्रम आउखावाळाने आश्रीने ...
जाणवुं केम के, आउखु बे प्रकारे बधाय छे. एक ... कर्मथी अने बीजुं
निरुपक्रम कर्मथी बधाय छे. तेमां जे सोपक्रम (शिथिल) आउखु आयुष्य छ
ते निमित्त पामवाथी त्रुटे छे अने निरुपक्रम (निकाचित) आउखु आयुष्य छे,

ते कदिपण त्रुटतु नथी

वली जेम शिंचाणो पक्षी तेतर पक्षिने उचितो झाली ले ठे, अर्थात् नाश करे ठे, तेम आउखु क्षय-थए सते जीवित पण नाश पामे ठे माटे एवु जाणीने एटले, क्षणमात्र जीववानो विश्वास न राखीने धर्मसाधन करवामा सावधान था. ॥ ३४ ॥

॥ आर्यावृत्तम् ॥

त्रिभुवनजनान् म्रियमाणान् दृष्ट्वा नाययति ये न आत्मानं धर्मे
तिहुयणजणं मरंत । दट्ठूण नयंति जे नं अप्पाणं ॥
निवर्त्तंते न पापात् धिक्धिक् धृष्टत्वं तेषां
विरमंति न पावाउ । धीधी धीट्ठत्तण ताण ॥ ३५ ॥

अर्थ -(जे के०) जे पुरुष (मरत के०) मरतो एवो (तिहुयणजण के०) त्रण भुवनना जनने (दट्ठूण के०) देखीने (अप्पाणं के०) आत्माने (न नयति के०) धर्मने विषे नथी जोडता, अने (पावाउ के०) पापथकी (न विरमति के०) न

थी विराम पामता (ताण केण) तेमना (धीठत्तण के०) धिठइपणाने एटले नि र्लजपणाने (धीधी के०) धिक्कार थाउ! धिक्कार थाउ!! ॥ ३५ ॥

जावार्थ.—स्वर्ग मृत्यु ने पाताल ए प्रकारे त्रण लोकना रहेनारने, अर्थात् सर्व संसारी जीवने, मरता देखीने अने जाणीने पण पोताना आत्माने धर्म ने विषे नथी जोडता, तथा हिंसादिक थकी निवृत्ति नथी पामता, अर्थात् जे कृत्यथी पाप बंधाय छे, तेवा कृत्यथी पाछा नथी उसरता, तेवा निर्लज जीवोना धिठइपणाने धिक्कार थाउ! धिक्कार थाउ!! एम अतिशे धिक्कारपणु जणाववाने माटे बेवार धिक्कार शब्द कह्यो छे. ॥ ३५ ॥

मामा जल्पत बहुल ये बद्धाः चिक्कणैः कर्मभिः
मामा जंपह बहुय। जे बद्धा चिक्कणेहिं कम्मेहिं ॥
सर्वेषां तेषां जायते हितोपदेशः महादोषः वा महाद्वेषः
सवेसि तेसिं जायेइ। हियोवएसो महादोसो ॥ ३६ ॥

अर्थ—अयोग्य शिष्योने कृपायी उपदेश करता गुरुने जोइ, योग्य शिष्यो गुरु प्रत्ये कहे छे के, हे गुरु! (जे के०) जे पुरुषो (चिक्कणो नि के०) चिक्कणा एवा (कर्म इति के०) कर्मे करीने (बद्धा के०) बंधाया छे, तेमने (बहुक के०) घणो (भाषा उपदेश के०) उपदेश न करो, न करो! केम के (जेति के०) ते (सव्वेनि के०) सर्वे अयोग्य शिष्योने (हियोवएसो के०) हितोपदेश जे ते (महादोसो के०) महादोषवालो, अथवा महाद्वेषवालो (जायइ के०) थाय छे ॥३६॥

तात्पर्य—अयोग्य शिष्यने वारंवार बोध करता देखीने आचार्यमहाराज प्रत्ये मुनियो जे ते, विनंती करे छे के, हे भगवन्! आपतो करुणासागर छो परंतु काला निविड पत्थर जेवा, आ खल शिष्योने आप गमे तेटलो प्रतिबोध करशो, तोयपण तेउ प्रतिबोध पामवा कठण जणाय छे केम के, जे प्राणियो ज्ञानावरणीयादिक निविड कर्मे करीने बंधाणा छे, ते प्राणियो धर्मोपदेश देवाने योग्य नथी जेम काचा घडामां नाखेलुं पाणी ते पोते नाश पामे छे, अने घडाने पण नाश पमाडे छे, तेम अयोग्य जीवोने बोध करेलु सिद्धांत रह

स्य, जे ते, नाश पामे ठे. अने ते अयोग्य शिष्यो पोताना आत्माने पण नाश करे ठे अथवा ते अयोग्य शिष्योने गुरु उपर द्वेष थाय ठे ते कह्युं ठे के,

उपदेशो हि मूर्खाणां । प्रकोपाय न शान्तये ॥
पय.पान भुजङ्गानां । केवल विषवर्द्धनम् ॥ १ ॥

अर्थ —मूर्ख जीवोने करेलो हितापदेश जे ते, प्रकोपने अर्थे थाय ठे. एट ले उपदेश देवाथी उलटो गुरु उपर कोप करे ठे जेम सर्पने जे दूध पावुं, ते केवल झेरनु वधारवु ठे. एटले ते सर्प जेम जेम दूध पीए ठे, तेम तेम तेने झेर वधतु जाय ठे. ए रीते मूर्खने जेम जेम हितोपदेश करे ठे, तेम तेम ते मूर्ख द्वेष वधारतो जाय ठे ॥ १ ॥

माटे तेवा अयोग्य जीवोने उपदेश देवो ते व्यर्थ ठे. अर्थात् विपरीतपणाने पामे ठे ॥ ३६ ॥

करोषि ममत्वं धनस्वजनविभवप्रमुखेषु अनन्तदुःखकारणेषु
कुणसि ममत्व धणसय । णविहवपमुहेसु अणंतदुक्खेसु ॥

अर्थ—अयोग्य शिष्योने छूतायी उपदेश करता गुरुने जोइ, योग्य शिष्यो गुरु प्रत्ये कहे छे के, हे गुरु ! (जे के०) जे पुरुषा (चिक्कणेहिं क०) चिकणा एवा (कम्मेहिं के०) कर्मे करीने (गहा के०) ग्रहाया छे, तेमने (बहुय के०) घणो (आमा रूपक के०) उपदेश न करो, न करो ! केम के (नेति के०) ते (सव्वे नि के०) सर्वे अयोग्य शिष्योने (हियोवएसो के०) हितोपदेश जे ते (महादोसो के०) महादोषवालो, अथवा महाद्वेषवालो (जायइ के०) थाय छे ॥ ३६ ॥

भावार्थ—अयोग्य शिष्यने वारंवार बोध करता देखीने आचार्यमहाराज प्रत्ये मुनियो जे ते, विनती करे छे के, हे भगवन् ! आपतो करुणासागर छो. परंतु काला निबिड पत्थर जेवा, आ खल शिष्योने आप गमे तेटलो प्रतिबोध करशो, तोयपण तेने प्रतिबोध पामवा रूपगुण जणाय छे केम के, जे प्राणियो ज्ञानावरणीयादिक निबिड कर्मे करीने बंधाणा छे, ते प्राणियो धर्मोपदेश देवाने योग्य नथी जेम काचा घडामा नाखेलु पाणी ते पोते नाश पामे छे, अने घडाने पण नाश पमाडे छे, तेम अयोग्य जीवोने बोध करेलु सिद्धांत रह

[illegible] तना उपकार करनार सो, अनंता जवमां अनंतां स्वजना-
दिक थया ठे माटे ते स्वजनादिकने विषे तुं केम ममत्व नथी करतो? अने ते स्वजनादिकना श्या हवाल थया हशे? तेनो पण लगारमात्र विचार नथी करतो? वली फक्त आज जवना स्वजनादिकने अर्थे राग द्वेषे करीने खेती, व्यापार, अने सेवादिक के, जेमां प्राणीनो उपघात थाय, एवी न करवा योग्य क्रिया, आ जीव कर्या करे ठे. जेम फरशुरामे अनंतवीर्य राजामां आशक्त थएली रेणुका नामे पोतानी मातानुं माथु कापी नाख्यु. तथा तेज फरशुरामे पोताना पिता उपर राग होवाथी एकवीशवार नक्षत्री पृथ्वी करी. वली कोणिक राजाये राज्यना लोजे करीने पोताना पिता जे श्रेणिक राजा, तेमने बंधीखानामां नाख्या तेमज पोतानी मनोवृत्ति प्रमाणे चालवामां अडचण करनार जाणीने, चूलणी राणीये पोतानो पुत्र जे ब्रह्मदत्त, तेने मारवाने अर्थे लाखना मोहोलमां घाली अग्नि सलगाव्यो. वली एक हार हाथीनी लडाइने माटे, फक्त एक पद्मावतीना वचनथीज एक क्रोडने एंशीलाख जीवोनो

घात थयो वली राज्यना लोभे करीने भरत अने बाहुबली ए बे भाई वच्चे महोटुं युद्ध थयुं ने तेमां हजारो जीवोनो संहार थइ गयो वली विषयराग पूरो न थवाथी पोतानो पति जे परदेशी राजा, तेने सूरीकता राणीये झेर दइने मार्यो, एटलुज नही पण, ठेवटे गले नख पण दीधो. वली पुत्रीना स्नेहे करीने जरासंघे श्री कृष्ण वासुदेव सगाथे महोटुं युद्ध करी, पोताना कुलसहित हजारो जीवोनो नाश कर्यो वली राज्यना लोभे करीने कनककेतु राजाये पोताना पुत्रोनां सर्व अंग छेदन कर्यां वली नीतिशास्त्रना कर्त्ता चाणाक्ये राज्यना लोभे करीने पोतानो मित्र जे पर्वत नामे राजा, तेने मारी नाख्यो वली पोताना स्वार्थ माटे सुभूम चक्रवर्त्तिये ब्राह्मणोनो अने क्षत्रियोनो क्षय कर्यो एवी रीतना अनेक दृष्टांतो छे, ते जो लखवा बेशीये तो तेनो एक महोटो ग्रंथ थतां पण पार न आवे माटे विचारवानुं आटलुं छे के,

पुत्रो मे भ्राता मे । स्वजनो मे गृहकलत्रवर्गो मे ॥
इतिकृतमेमेशब्द । पशुमिव मृत्युर्जनं हरति ॥ १ ॥

अर्थ.—तुं रात्रो दिवस एवु विचारे छे के, आ महारो पुत्र, आ महारो भाई, आ महारा स्वजन, आ महारु घर, आ महारा स्त्रीआदिक वाल्हेशरी, परतु ए प्रकारे बोलनारने जेम घातकी पुरुष, बें बें करता एवा बोकडाने हरण करे छे, तेम मृत्यु जे ते, मे मे (महारु महारु) करता प्राणीने पकडीने लेइ जाय छे. ॥ १ ॥

माटे तेना उपर ममत्व करवाथी उलटु पाप बंधाशे, पण तेमांनु कोइ मरी जशे, त्यारे तेमांथी कोइ पण ते मरनारने राखवा समर्थ थतुं नथी; एटलुज नहि पण, पोताना स्वार्थमां खामी आववाथी, थोडा दिवस रुदन करी "गयेलाने भूली जवु" ए रीवाज प्रमाणे नेज संबधीयो तेने विसरी जाय छे. जेम पोताना वीश वर्षना पुत्रना मृत्यु समये फक्त मोहना उछालाथी (गाढ स्वरे लावा रागे बुमो पाडी) रुदन करता अने छाती कुटनार पिता, पोताना बीजा पुत्रना लग्न समये, ते मृत्यु पामनारने भूली जइ, वर्त्तमान समयना उत्साहमा पूर्ण हर्षथी दाखल थाय छे. ए रीते अत्यंत स्नेहवाळी स्त्री (त्ता-

तमां (नहानिश्चवाद् के०) अहर्निश वडावड (अइवद्धा के०) अतिशे बंधायेला एवा (जीवा के०) जीव जे ते (तदपि के०) ते संसारने पण (न त्यजन्ति के०) नथी त्याग करता अर्थात् संसारने दुःखदायक जाणे छे, तोयपण तेनो त्याग नथी करता ॥ ३० ॥

जावार्थ.–आ संसारमां सर्व बंधन करतां प्रेमबंधन अतिशे महोटुं छे. ते कहुं छे के,–

॥ वसन्ततिलकावृत्तम् ॥

रात्रिर्गमिष्यति जविष्यति सुप्रजातं । जास्वानुदेष्यति हसिष्यति पङ्कजश्री· ॥
इत्थं विचिन्तयति कोशगते दिरेफे । हा हन्त हन्त नलिनीं गज उज्जहार ॥ १ ॥

॥ स्वागतावृत्तम् ॥

बन्धनानि खलु सन्ति बहूनि । प्रेमरज्जुकृतबन्धनमन्यत् ॥
दारुजेदनिपुणोऽपि षडङ्घ्रि । र्निष्क्रियो जवति पङ्कजकोशे ॥ २ ॥

अर्थ.–जेम कमलनो रस पीवाने बेठेलो एवो जे जमरो, ते मनमां वि-

चारे ठे के, हवे सध्याकाल पडवा आवी, ने कमल मिंचाइ जशे; माटे हुं उडी जउ तो ठीक. एम विचार करतां करतां संध्याकाल थइ, ने कमल मिंचाइ गयु, ते वखते ते ज्ञमरो विचार करे ठे के, रात्री जशे ने सारो प्रजातकाल थशे ने सूर्य उगशे, ने कमलनी लक्ष्मी हसशे एटले प्रफुल्लित थशे, त्यारे हुं उडी जइश एवो विचार करे ठे. एटलामां पाणी पीवाने माटे आवेला हाथीए ते कमलने उपाडीने हा इति खेदे ! ! मुखमां घाली, पेला विचारा ज्ञमराने दातवडे चाववा माड्यो! ॥ १ ॥ ते वखत पेलो ज्ञमरो मरता मरतां पश्चात्ताप करे ठे के, जगत्मां बंधन तो घणा ठे, पण प्रेमरूप दोरीनुं बंधन तो एक जुदी जातनुंज ठे. केम के, गमे तेवुं काष्ट होय तोपण तेने विंधवाने ज्ञमरो समर्थ होय ठे, परंतु हुं तो लेहे करीने कमलना दोडाने विषे रहीने क्रियारहित थयो. एटले ते दोडानें कोरीने नीकली जवा समर्थ न थयो ! ॥ २ ॥ वली ब्रह्मदत्त राजा मरणांतिक रोगनी वेदनादिके करीने पराजव पाम्यो सतो अतिशे, सतापनो अनुज्ञव करे ठे. एटले वेदनाए करीने

आंखमाथी आसु चाल्यां जाय छे, तोपण मोहना उदयथी जोगनी आकाङ्क्षा (इच्छा) करे छे अने पासे बेठेली स्त्रीना उपर हाथ नाखीने पोतानी स्त्रीनु नाम देतो देतो मरण पामीने सातमी नरकने विषे गयो अने त्यां पण तीव्र वेदनानो अनुभव करतो सतो, ते स्त्रीनु नाम वारंवार संभारतो सतो वेदना जोगवे छे एवी रीते जोगनी आसक्ति त्याग करवी घणी दुष्कर छे अने केटलाएक महा सत्ववाळा सनत्कुमार चक्रवर्त्ति जेवा पुरुषो तो, रोगनी वेदना थये सते पण देहने तथा आत्माने जुदो समजीने एवु विचारता के, आ महारु करेलुं कर्म मने उदय आव्यु छे, माटे महारेज जोगववुं पडशे एवो निश्चय करीने समतासहित कर्म जोगवे छे, पण मनमां पीडा उत्पन्न थवा देता नथी अर्थात् आर्त्तध्यान रौद्रध्यान ध्याता नथी अने वळी एवु विचारे छे के,—

॥ शार्दूलविक्रीडितवृत्तम् ॥

उत्तो यः स्वत एव मोहसलिलो जन्मालवालोऽशुचो।

रागद्वेषकषायसततिमहानिर्विघ्नबीजस्तथा ॥
रोगैरङ्कुरितो विपत्कुसुमित· कर्म्मद्रुमः साम्प्रतं।
सोढा नो यदि सम्यगेष फलितो दुःखैरधोगामिभि ॥ १ ॥

अर्थ.—आ कर्मरूप वृक्ष पोते पोताने हाथेज वाव्यो छे, ने तेमां मोह-रूप पाणी शिच्युं छे, अने ते वृक्षनी जन्मभूमि पण अशुभ कर्मरूप क्यारामा छे. वली राग द्वेष कषाय, तेनी जे संतति एटले श्रेणि, ते रूप बीज छे ते म-होटा विघ्नरहित छे. एटले ए बीजमाथी वृक्ष उत्पन्न थया विना रहेज नही, तेवु छे अने ए वृक्षने रोगरूप अकुरा उत्पन्न थया छे अने विपत्तिरूप पुष्प ने जो तु सम्यक् प्रकारे एटले समभावे नहि सहन करे तो, ते पुष्पमाथी अधोगतिनां दुःखरूप फल उत्पन्न थशे ॥ १ ॥

वली आम विचारे छे के, जो हु आवी पडेली आपदाने समभावे नहि भोगवु तो, एमाथी म्हारे दुर्गतिना दुःखरूप फल उत्पन्न थशे माटे हे भव्य जीवो! आ प्रकारनो विचार करीने ससारनें दुःखमय जाणीने संसार

घटाडवानो उद्यम करो ॥ ३० ॥

निजकर्मपवनचलित जीव ससारकानने घोरे

नियकम्मपवणचलिउ । जीवो ससारकाणणे घोरे ॥

का का विमवना बधबधनादीविगोपना न प्राप्नुयात् दु सहदुःख पाश्यप्ररा॥

का का विम्वणाउ । न पावए डुसहडुक्काउ ॥३ए॥

अर्थ –(घोरे के०) घोर (जयानक) एवुं (ससारकाणणे के०) ससाररूप महावनने विषे (निय के०) पोतानु (कम्म के०) ज्ञानावरणीयादिक कर्म, ते रूप (पवण के०) वायु, तेणे करीने (चलिउ के०) प्रेरणा कर्यो एवो, अर्थात् उडाड्यो एवो (जीवो के०) आ जीव जे ते (दुसहदुक्काउ के०) दु ख करीने सहन करवाने अशक्य ठे दु ख ते जेनु एवी (का का के०) केइ केइ (विडवणाउ के०) वध बधनादिक विटवना तेने (न पावए के०) नथी पामतो ? अर्थात् सर्व विटंवनाउने पामे ठे ॥ ३ए ॥

जावार्थ –कोइ पुरुष पोतानो लीधेलो नियम (व्रत) कोइ अल्प परिषह-

श्री मेघकुमारनी पेठे जागवाने तैय्यार थयो छे, पण तेणे विचार्युं के, आ वा र्त्ता गुरुने निवेदन करीने पछी म्हारो नियम मूकुं एम धारीने जेटलाकमां गुरु पासे आवे छे, तेटलाकमां ज्ञानवंत गुरुए उपदेश आपीने निश्चल कर्यो ते आ प्रमाणे के,—हे भव्य जीव! अहो हो!! आ घोर भवाटवीने विषे आ जीवे कर्मना वशे करीने शां शा दुःख नथी सहन कर्यां? अर्थात् सर्वे जातिना वध, बंधनादिक दुःख सहन कर्या छे, अने अनेक प्रकारना अपराधथी राजा प्रमुखे गधेडा उपर बेसाडीने नाक कान कापीने अने कपालमां डाम देइने इत्यादि घणीज विटंबना पमाडीने, ने आखा शेहेरमां फेरवीने शूलिये देवा प्रमुख असह्य दुःख दीधां त्यां ते परवशपणाथी तेवां दुःख अनंतीवार सहन कर्यां वली कर्मे करीने जीवने शुं शुं नथी वितर्युं? अर्थात् घणुंज वीते छे. जेम के,—

निवसइ सायरमज्झे। निवसइ गिरिगुहरकंदरामज्झे॥
कम्मसहायजीयाणं। कहमवि न हणे विलग्गं तु॥ १॥

यसानिल के०) शीनळ (ताढो) वायु, तेनी (सहस्सेहि के०) हजारो स हेरी,जडे (निम्रघणदेहो के०) जेदायो ठे एटले पीडायो ठे दृढ एवो पण देह ते जेनो, एवो थयो सतो, तु (अणंतसो के०) अनंतीवार (निहण के०) नाश ने (अणुपत्तो के०) पाम्यो ठे ॥ ७० ॥

जावार्थ —हे आत्मन्! तुं पूर्वे अनुजवेला दुःखने, लगार विचारी जो के, तिर्यंचना जवमा तहारो देह खूब मजबूत हतो, तोयपण पोष महा महिनानी अत्यंत टाढथी, (हिम पडवाथी) अनंतीवार मरण पाम्यो एटले आ जीव अनेक प्रकारना रसायण जेवां के, त्रांबु हरिताल विगेरे खाइने शरीरने मजबुत तथा पुष्ट करवुं धारे ठे, तोयपण ते शरीर घोडा जेवु, अथवा पाडा जेवु कदिपण थतुं नथी तो पण ते शरीरने घोडानी तथा पाडानी उपमा अपाय ठे. तेवा घोडा विगेरे तिर्यंचोनां शरीर पण, अत्यंत टाढथी नाश पामे ने ते नाश पामवादिक दुःख तें अनंतीवार सहन कर्या तो आ जवमां धर्मसाधन निमित्ते अल्प एवो पण शीत (साढनो) परिषह तु केम

सहन नथी करतो? ॥ ८० ॥

ग्रीष्मातपसंतप्त॰ अरण्ये क्षुधित॰ पिपासित॰ बहुश॰
गिम्हायवसंतत्तो । ऽरंणे छुहिओ पिवासिओ बहुसो ॥
समाप्तः तिर्यक्भवे मरणदुःख बहु यथातथा विद्यमानः
संपत्तो तिरियभवे । मरणदुहं बहु विसूरंतो ॥ ८१ ॥

अर्थ—हे जीव! तुं (तिरियभवे के॰) तिर्यंचना भवने विषे (अरणे के॰) अटवीमां (गिम्हायव के॰) ग्रीष्मऋतुना तडकावडे (संतत्तो के॰) सारी पेठे तप्यो एवो, अने (बहुसो के॰) घणी वणी (छुहिओ के॰ क्षुधा वेदनाने सहन करतो एवो, अने (पिवासिओ के॰) घणी घणी तृषा वेदनाने सहन करतो एवो, अने (बहु के॰) घणो घणो (विसूरंतो के॰) खेद पामतो सतो (मरणदुह के॰) मरणना दुःखने (संपत्तो के॰) पाम्यो हतो. ॥ ८१ ॥

भावार्थ—हे आत्मन्! जेम तें तीर्यंचना भवमा शीत परिषह सहन कर्यो, तेम उष्ण कालमां (ग्रीष्मऋतुमां) एटले वैशाख जेठ महिनाना आकरा ता-

पमा तें उष्ण परिषह सहन कर्यों तेमा वली अतिशे तृषा वेदनी तथा अतिशे क्षुधा वेदनी तेणे करीने, तु अत्यत खेद पामतो सतो अनतीवार मरण पाम्यो. परतु ते डुःख विसरी जइने, आ जवमा थोडा तापने पण न सहन करतो, तु पंखा प्रमुखे करीने वायुकायना जीवोनो घात करे ठे. पण एम नथी विचारतो के, तिर्यंच जवने विषे तथा नरक जवने विषे में अनता तापना डुःख सहन कर्यां ठे ते डुःखना आगल आ तापनु डुःख स्या हिसाबमां ने? एवो विचार तने लेशमात्र पण आवतो नथी ! ॥ ७१ ॥

वर्षासु अरण्यमध्ये गिरिनिर्झरणोदकैः उह्यमानः
वासासु ऽरणमज्जे । गिरिनिझरणोदगेहि वज्झंतो ॥
शीतानिलेन दग्ध मृत मृतोसि तिर्यक्त्वे बहुशः
सीयानिलेणडज्जविउ । मउसि तिरियत्तणे बहुसो ॥७२॥

अर्थ—रे जीव ! तु (तिरियत्तणे के०) तिर्यंचपणाने विषे (वासासु के०) वर्षाऋतुमां पटले चोमासामां (अरणमज्झे के०) अटवीने विषे रह्यो सतो

(गिरिनिज्झरणोदगेहि केο) पर्वतनां निर्झरण एज पाणीवडे (बज्झंतो केο) वहन थतो एटले तणातो, अर्थात् चारे पासे पाणीमां अथडातो एवो, अने (सीयानिल केο) अतिशे शीतल एवो वायुवडे अर्थात् हिमवडे (रुक्खवियो केο) दाझेलो छतो (बहुसो केο) घणीवार (मउसि केο) मरण पाम्यो छे. ॥७२॥

भावार्थ –हे जीव! तुं तिर्यंचना भवने विषे, चोमासानी ऋतुमां वृक्ष प्रमुखने विषे रात्री दिवस निर्गमन करता वरसादनी धाराउनां कष्ट सहन करी आव्यो छे. वली हिम पडवाथी बलीने मरण पण पाम्यो छे ने नदीयोमां तणातो तणातो अनेक प्रकारनी वेदना पामीने अथडाइ कुटाइने पराणे प्राण त्याग कर्यो छे. ए सघलां कष्टने तुं आज केम विसरी जाय छे? ॥ ७२ ॥

एव तिर्यग्भवेष क्लिश्यन् सन् दुःखशतसहस्रैः
एवं तिरियभवेसु । कीसतो डुक्खसयसहस्सेहिं ॥
उषित अनंतवारान् जीवः भीषणभवारण्ये
वसियो अणंतखुत्तो । जीवो भीसणभवारणे ॥७३॥

२०

अर्थ -(एव के०) ए प्रकारे, एटले पूर्वे कह्यु ते प्रकारे (तिरियत्तणेसु के०) तिर्यंचना ज्ञवोने विषे (डुक्खसयसहस्साइं के०) लाखो गमे डुःखे करीने (कीसंतो के०) क्लेश पामतो एवो (जीवो के०) आ जीव जे ते (जीसणज्ञवारणे के०) ज्ञयानक एवी संसाररूप अटवीने विषे (अणंतखुत्तो के०) अनंतीवार (वसियो के०) निवास करी आव्यो छे. ॥ ७३ ॥

ज्ञावार्थ –हे आत्मन्! तुं तिर्यंचना ज्ञवोने विषे पण अनंता दुःख ज्ञोगवी आव्यो छे ॥ ७३ ॥

दुष्टकर्मपवनप्रेरित · · · जीषणे ज्ञवारण्ये
डुठकम्मपलयानिलपेरिउ ज्ञीसणंमि ज्ञवरणे ॥
हिंडमान. नरकेषु अपि अनंतश हे जीव प्राप्नोसि दुःख
हिंडंतो नरएसु वि । अणंतसो जीव पत्तोसि ॥७४॥

अर्थ.–(जीव के०) हे जीव! तुं (डुठकम्म के०) डुष्ट एवा जे आठ कर्म, एटले डुष्ट फलने आपनारा ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्म ते रूप (पलया

निल के०) प्रलय कालना वायु वडे (पेरित के०) प्रेरणा कर्यो एवो, अने (जी-सणमि के०) जयानक एवी (जवरणे के०) संसाररूप अटवीने विषे (हिंडंतो के०) चालतो सतो (नरएसु वि के०) नरकने विषे पण, पूर्वोक्त डुःख (अणतसो के०) अनंतीवार (पत्तोसि के०) पाम्यो ठे. ॥ ८४ ॥

जावार्थ.-हे आत्मन्! तें ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्म करीने नरकादिक गतिने विषे, अनंतीवार डुःख जोगव्यामां खामी राखी नथी तोपण वली पाठा तेनां तेज डुःख प्राप्त थाय, तेवा उपाय करे जाय ठे माटे हवे तेवां दुःखो जोगववां पडे नहिं, तेवो उपाय करय ॥ ८४ ॥

सप्तसु नरकमहीषु वज्रानलदाहस्य शीतस्य च वेदनास्तासु

सत्तसु नरयमहीसु वज्जानलदाहसीयवियणासु ॥

उषित अनंतकृत्वः विलपन् करुणाशब्दैः

वसियो अणंतखुत्तो । विलवंतो करुणसद्देहिं ॥ ८५ ॥

अर्थ -हे जीव! तु (वज्जानलदाह के०) वज्राग्निनो ठे दाह ते जेने विषे,

एटले अतिशे तीक्ष्ण छे अग्नि ते जेने विषे, अने (सीयविग्घणासु के०) अतिशे शीतनी छे वेदना ते जेने विषे, एवी (सत्तसु के०) सात (नरयमहीसु के०) नरक पृथ्वीओने विषे (करुणसद्देहिं के०) करुण शब्दवडे (विलवतो के०) विलाप करतो सतो (अणतखुत्तो के०) अनतीवार (वसियो के०) वशो छे ॥ ८५ ॥

भावार्थ—हे आत्मन्! तु साते नरक पृथ्वीयोमा निवास करी आव्यो छे, अने त्यां त्यां उष्ण वेदना तथा शीत वेदना, आ नीचे लख्या प्रमाणे अनतीवार सहन करी आव्यो छे.

जेम ग्रीष्मऋतुना छेल्ला समयमां आकाशनी मध्ये आवेलो, मेघरहित, घणा आकरा किरणवालो सूर्य, देदीप्यमान सते, जेना शरीरने विषे पित्तनो प्रकोप थयो छे, तेवा पुरुषने, त्यारे वाजु खेरना अंगाराना अग्नि सलगावीने तेनी वच्चे राखीए, ने तेने जेवी उष्णवेदना थाय, ते करतां पण अनंतगुणी उष्ण वेदना, नरकने विषे नारकीना जीवो भोगवे छे. ते नारकीना जीवोने

तो जेम शीतल चंदननो लेप कर्यो होय, ने तेथी जेम अत्यंत सुखथी निद्रा आवे तेवी रीतनी निद्रा ते नारकीना जीवने आवे छे एवीज रीते पोष म हिनानी रात्रीने विषे मेघरहित आकाश थये सते, हृदयादिकमां कपाराना रोगवाला पुरुषने आवरण रहित, हिमाचलनी पृथ्वीने विषे राख्यो होय, अने वली त्यां अत्यत वायराना झपाटा चालता होय, ते वखत ते जीवने जेवी शीतवेदना थाय, तेथी पण अनंतगुणी शीतवेदना नरकने विषे नारकीना जीवो भोगवे छे. ते नारकीना जीवोने पूर्वे कहेला, हिमाचल पृथ्वीना स्थानमा राख्यो होय, तो जेम वायरा विनाना स्थानमां शियालाने विषे निद्रा आवे, तेम ते नारकीना जीवोने निद्रा आवी जाय छे. माटे एवां दुःख तुं अनतीवार सहन करी आव्यो छे.

माटे तेथी त्रास पामीने फरीथी त्यां न जवुं पडे, एवा धर्मकृत्यमां साव धान था ! ॥ ७५ ॥

पितृमातृस्वजनरहित॰ दुरतव्याधिभि॰ पीडितः बहुश॰
पियमायसयणरहिउ । दुरतवाहिहि पीडिउ वहुसो ॥
मनुजभवे निःसारे विलापित॰ किं न न स्मरसि
मणुअन्नवे निस्सारे । विलाविउ किं नं त सरेसि ॥८६॥

अर्थ —रे जीव ! (निस्सारे के०) असार एवा (मणुअन्नवे के०) मनुष्यन्नव ने विषे (पियमाय के०) पिता माता, अने (सयण के०) स्वजन तेणे करीने (रहिउ के०) रहित एवो, अने (दुरतवाहिहिं के०) दुःखे करीने छे अंत ते जेनो, एवा व्याधिये करीने (वहुसो के०) घणीवार (पीडिउ के०) पीडा पाम्यो एवो एज कारण माटे (विलाविउ के०) विलाप करतो एवो, तुं जे ते (त के०) ते मनुष्यन्नवने (कि न सरसि के०) केम नथी संन्नारतो ? ॥ ८६ ॥

न्नावार्थ —हे जीव ! तु मनुष्यन्नवमा पण माता पिता स्वजनादिक प्रिय वस्तुनो वियोग थवाथी तथा अनेक प्रकारना शरीरना व्याधिथी विलाप करी करीने मरण पाम्यो हतो, ते वातने तु केम विसरी जाय छे ? मनुष्यन्नव

आश्रीने अहं ममत्व तथा मोहपणा सहित निर्लोभपणा विषे एक सोमिल ब्राह्मणनी कथा टीकामा लखी छे. ते नीचे प्रमाणे जाणवी. ॥ ७१ ॥

कथा ७ मी.

कौशांबी नगरीमां सोमिल नामे ब्राह्मण जन्मथी दरिद्री एवो रहेतो ह तो. तेने स्त्री, पुत्र, पुत्री, इत्यादिक घणु कुटुंब हतुं. ते कुटुंबनी प्रेरणाथी एक दिवस धन कमाववाने अर्थे देशांतर गयो, त्या तेणे व्यापारादिके रहित एवो, पण दानजोगे सहित, एटले महोटा दानेश्वरी जेवो, एक योगी पुरुष दीठो. ते योगीये द्रव्यनी चिताथी आकुल व्याकुल थएला ब्राह्मणने पूछ्युं के, तहारे शी चिता छे? त्यारे तेणे कह्यु के, दारिद्र्य एज महारे चिता छे. त्यारे योगी बोल्यो के, जो तुं महारुं कह्यु करे, तो हु तने महोटो धनाढ्य करुं. त्यारे ते वात ते ब्राह्मणे कबूल करी. पछी ते बे जण पर्वतनी तलाटीमां (गुप्त स्थानकमा) गया, त्या योगी बोल्यो के, आ सुवर्णसिद्धि थवानो रस छे. ए-टले योगीए पूर्वे ताढ तडको भूख तृषादिक वेठीने अने घणा काल सूधी

सूका एवा कदमूल फल इत्यादिकनु भोजन करीने, एवी रीते महा महेनत करीने अने समडीना पादडानो पडियो करीने ते वडे रसकुपिकामाथी लइने घणे काले घणा प्रयासथी ते रस तुवडीमा भरी राख्यो हतो ते पेला दरिद्री ब्राह्मणने देखाड्यो ने कह्यु के, आ सहस्रवेधी रस छे. एटले त्रांबाना हजार पत्रा अग्निमां तपावीने उपरा उपरी खडकीने मूक्या होय, तेमां आ रसनु एक टीपु मूक्यु होय तो, ते सर्व पत्रामां रस वेंधइ जाय एटले पहोंची जाय. अर्थात् तेज वखत ते सर्व पत्रा सुवर्णमय थइ जाय. एवी रीते योगिए वारंवार कह्यु त्यारे ते निर्भागी ब्राह्मणने उलटो क्रोध चड्यो, ने तेथी वे हाथे झालीने पेलु रसनु तुवडु, सादडवृक्षना पानडामा ढोली दीधु त्यारे ते योगिये ते ब्राह्मणने घणोज अयोग्य जाणीने तेनो त्याग कर्यो अने ते ब्राह्मण पण पृथ्वीमा भ्रमण करतो करतो एटले पैसा पैसा एम पोकार करतो करतो मरण पाम्यो, पण ते मळ्या नही

आ कथानु तात्पर्य ए छे के, जेम निर्भाग्य जीवने घणु धन पामवानो अ

वसर आवे तोयपण तेने ते धन लेवु सूझे नही. तेम आ जीवने पण मनुष्य भवमां जिनधर्मरूप धन ग्रहण करवानो अवसर आव्यो छे, तोयपण बहुल-कर्मिपणाथी जिनधर्मरूप सुवर्णसिद्धिनो रस लेवानुं मन नथी थतु, ए बहु आश्चर्यकारक छे!!!

पवन इव गगनमार्गे अलक्षितः सन् भ्रमति भववने जीव

पवणु व्व गयणमग्गे। अलक्खिउ भमइ भववणे जीवो ॥

स्थाने स्थाने समुत्सृज्य धनस्वजनसंघातान्

ठाणठाणंमि समु। ज्झिऊण धणसयणसंघाए ॥ ७७ ॥

अर्थ—हे आत्मन्! (जीवो के०) आ जीव जे ते (भववणे के०) संसार रूप अटवीने विषे (ठाणठाणमि के०) स्थान स्थानने विषे (धणसयणसंघाए रूप के०) धन तथा स्वजन तेना समूहने (समुज्झिऊण के०) त्याग करीने (गयण मग्गे के०) आकाशमार्गने विषे (पवणु व के०) पवननी पेठे (अलक्खिउ के०) अदृश्यरूपे थयो सतो (भमइ के०) भमे छे. ॥ ७७ ॥

भावार्थ –जेम आकाश मार्गमां वायु फरे छे, तेम आ जीव पण भवाटवी मां अदृश्यपणाथी एटले आ पूर्वे म्हारो कोण सगो हतो? तेवा अजाणपणा थी अनेक स्थानने विषे भ्रमण करे छे तेमां अनेक भवने विषे मलेला धन तथा स्वजन इत्यादिकनो त्याग करीने एटले तेमनी शी गति हशे? एवी चिंता मूकीने वर्त्तमानकालना स्वजनादिकने सुखी करवाने तथा धन मेलववा ने अर्थे देशोदेश भमे छे. अर्थात् वायुवडे पानडुं जेम पराधीन थइने उडे छे, तेम केटलाएक पुरुषो धनने अर्थे शरीरनुं दुःख पण न गणतां, कोइ विलायत जाय छे, कोइ चीन जाय छे, कोइ लंकामां जाय छे, कोइ ब्रह्मदेशमां जाय छे इत्यादिक अनेक देशमां जाय छे तेवामां त्यां अनेक प्रकारनां निमित्त मलवा थी मरण पामे छे एवी रीते आ जीव नजरे देखे छे, तो पण कर्म उपर विश्वास राखीने संतोष राखी धर्मसाधन करतो नथी ॥ ७३ ॥

विध्यमाना अमंकृत जन्मजरामरणान्येवतीक्ष्णाः कतास्तै

विद्धिज्जंता असरण । जम्मजरामरणतिरकुंतेहिं ॥

दुःख अनुभवन्ति घोरं संसारे समरतः संतः जीवाः

दुहंम अणुहवंति घोरं । संसारे संसरंत जिआ ॥८८॥

तथापि क्षणमपि कदापि निश्चये अज्ञानमेवनु जगस्तेनदष्टाः जीवाः

तहवि खणंपि कयावि हु । अन्नाणभुयंगमक्किया जीवा ॥

संसारएवचारकोगुप्तिगृह तस्मात् नच उद्विजन्ते मूढमनसः

संसारचारगाउ । नय उव्विजंति मूढमणा ॥८९॥युग्मम्॥

अर्थ –(ससारे के०) च्यारगतिरूप ससारने विषे (ससरत के०) पर्यटन करता एवा (जिआ के०) जीव जे ते (जम्मजरामरण के०) जन्म. जरा मरण रूप (तिरकुतेहिं के०) तीक्ष्ण ज्वालाये करीने (असय के०) वारंवार. (विढि ता के०) विधाता सता (घोर के०) रौद्र (आकरा) एवा (दुहं के०) दुःखने (अणुहवति के०) अनुभवे छे. ॥ ८८ ॥ (तहवि के०) तोपण पटले पूर्वे कह्युं तेवुं दुःख भोगवे छे तोपण (मूढमणा के०) मूढ छे मन ते जेमनु एवा. अर्थात् मूर्ख एवा, अने (अन्नाणभुयंगडकिया के०) अज्ञानरूप सर्प डस्या एवा

(जीवा के०) जीव जे ते (कयाવિ के०) कोइ वखत पण (हु के०) निश्चे (ससारचारगाउ के०) संसाररूप बधिखानाथी (खणंपि के०) क्षणमात्र पण (नय उव्विजति के०) उद्वेग नथी पामता. एटले वैराग्य नथी पामता ! आते केटलुं बधु आश्चर्य ? ॥ ७९ ॥

जावार्थ.—जेम कोइ जालो मारे, ने तेनी वेदना थती होय, तेवामां वली बीजो जालो मारे, एवी रीते उपरा उपरी वागवाथी जेवुं दुःख जोगवे, तेवी रीते आ ससारी जीव पण जन्म जरा मरण इत्यादिकनां घणां जयानक दुःख उपरा उपरि जोगवे छे. ॥ ७८ ॥ तोयपण अज्ञानरूप सर्पे डशेला एवा मूढ जीव, ससाररूप बंधिखानाथी कोइ वखत पण क्षणमात्र उद्वेग पामता नथी आ केटलुं बधु आश्चर्य छे ! ! ॥ ७९ ॥

क्रीडसि क्रियतीवेलां यावत् शरीरमेतद्यापीतरणां यत्र मोतिमयं

कीलसि कियंतवेलं । सरीरवावीइ जत्थ पइसमय ॥

कालएवअरघट्टस्सघटीभिः शोष्यते जीवितमेवाम्भोजलं तत्प्रवाहः

कालरहट्टघमीहिं । सोसिज्जइ जीवियंन्नोहं ॥ ए० ॥

अर्थ.-हे जीव! तुं (सरीरवाडीइ के०) शरीररूप वाडयने विषे (कियतं-वेल के०) केटला काल सूधी (कीलसि के०) क्रीडा करीश? (जह के०) जे श-रीररूप वाडयने विषे (पइसमय के०) समय समय प्रत्ये (कालरहट्ट घडीहिं के०) कालरूप रहेंटनी घडीयो वडे (जीवियंनोहं के०) जीवितरूप जलनो प्रवाह (सोसिज्जइ के०) शोष पामे छे. अर्थात् सूकाइ जाय छे. ॥ ए० ॥

भावार्थ.-जेम रहेंट वडे वाडयमांथी जेम जेम पाणी काढीए, तेम तेम ते पाणी उंडुं थतुं जाय छे. तेम हे जीव! तें पण जेटलुं आयुष्य बांधीने जन्म लीधो छे, ने तेमाथी जे जे समय जाय छे, तेटलुं आउखुं उंडुं थतुं जाय छे. केहेवत छे के, मावाप जाणे के, म्हारो दिकरो म्होटो थाय छे, पण ते दिवसे दिवसे आउखुं घटवाथी न्हानो थतो जाय छे. ए प्रमाणे विचारतां तो, आउखानो अंत आवतां वार नहि लागे. केमके, समये समये घटवापणुं

ठे माटे, जेमके, कोइने शूली देवा दइ जाय ठे, अने ते शूली सो डगलां वेटी ठे, त्यारे ते माणस जेम जेम शूली सन्मुख पगलां भरे ठे, तेम तेम तेने मृत्यु नजिक नजिक आवतु जाय ठे, अने ते वखत तेने खानपानादिक काइ पण गमतु नथी केमके, एने मृत्यु नक्की ढुकडु जाएयु ठे माटे, तेम हे चेतन ! तहारा पण जेम जेम वर्ष जाय ठे, तेम तेम तहारे पण मृत्यु सन्मुख आवे जाय ठे एटले जो कदि तहारु आयुष्य सो वर्षनु होय, अने ते-माथी जे जे वर्ष गया, तेटलु आयुष्य सो वर्षमाथी ओछु थयु जाणवु अर्थात् आ अल्प आयुष्य ऊपाटाबध पुरु थशे, 'अने मनना मनसुबा मनमां रही जशे, अने पाछलथी घणोज पश्चात्ताप थशे' माटे प्रमाद छोडीने परलोकनु साधन करवामां सावधान था ॥ ८० ॥

एज वातने मूल ग्रंथकार पण जणावे ठे के,

रे जीव, बुध्यस्व मा मुह्य ; मा प्रमाद्य धर्मं कुरु रे पाप ,

रे जीव बुझ मा मुझ । प्रमा पमाय करेसि रे पाव ॥

किं परलोके गुरुक दुःखभाजनं भविष्यसि हे अज्ञान हे मूढ
किं परलोए गुरुडुःखजायणं होहिसि अयाण ॥९१॥

अर्थ —(रे जीव के०) हे जीव! तु (बुष्ट के०) धर्मने विषे बोध पाम्य पण (मासुष्ट के०) मोह न पाम्य जे कारण माटे (रेपाव के०) हे पाप जीव! (पमाय के०) प्रमादने (मा करेसि के०) न करीश. (अयाण के०) हे अज्ञाण! एटले हे मूढ! प्रमाद करीने (परलोए के०) परलोकने विषे (गुरुडुःखजायणं के०) महोटा दुःखने रहेवाना जाजनरूप (किं के०) केम (होहिसि के०) थाय छे? ॥ ९१ ॥

जावार्थ:—हे आत्मन्! तुं अदृष्टना वशथी दुर्लज एवा मनुष्यजवने पामीने तेमा वली जैनधर्म पामीने, धर्मने विषे प्रमाद न कर्य. तेम छतां जो प्रमाद करीश, तो महा दुःखने पामीश. ॥ ९१ ॥

बुध्यस्व रे जीव त्वं मा मुह्य जिनमते ज्ञात्वास्वरूप
बुष्टसु रेजीव तुमं । मामुष्टसि जिणमेयंमि नाऊणं ॥

पश्चात् पुनरपि, एषा, सामग्री, दुर्लभा, हे जीव,

जम्हा पुणोरवि एसा । सामग्गी दुल्लहा जीव ॥ ९२॥

अर्थ.–(रे जीव के०) हे जीव, (तुमं के०) तुं (बुज्झसु के०) धर्मने विषे बोध पाम्य अने (नाऊणं के०) धर्मने जाणीने (जिणमयम्मि के०) जिनशासनने विषे (मा मुज्झसि के०) मोह न पाम्य. एटले सम्यक् प्रकारे जिनधर्म अंगीकार करय (जम्हा के०) जे हेतु माटे (जीव के०) हे जीव! (पुणरवि के०) फरीने पण (एसा के०) आ (सामग्गी के०) धर्म सामग्री जे ते (दुल्लहा के०) दुर्लभ छे. एटले फरी फरीने धर्म सामग्री मळवी महा दुर्लभ छे. ॥ ९२ ॥

भावार्थ –हे आत्मन्! धर्म साधन करवाना अंगरूप एटले मनुष्यनो भव, शुद्ध श्रद्धा, संजम, अने तेने विषे वीर्यनुं फोरववुं, ते फरी फरीने वारंवार मळवुं महा दुर्लभ छे. एटले काकतालीय न्यायथी एक वखत तने मळ्युं छे, ते फरीथी मळवुं अत्यंत दुर्लभ छे. ॥ ९२ ॥

दुर्लभः पुनः जिनधर्मः एकशोलब्धः त्वं प्रमादस्याकर खानि सुखैषीएंद्रियसवांकः च

दुल्लहो पुण जिणधम्मो । तुंम पमायायरो सुहेसी यं ॥

दुःसह आस्ति च नरकदुःखं कथत्व नविष्यासियतःकारणात् मन न जानीम परलोके

दुसहं च नरयदुक्खं । कहं होहिसि तं न याणामो ॥ ए३

अर्थ.—हे जीव! आ (जिणधम्मो के०) आ पामेलो जिनधर्म जे ते, (पुण के०) वली फरीथी पामवो (दुलहो के०) महा दुर्लज ठे, अने (तुम के०) तु (पमायायरो के०) प्रमादनी खाण ठे, अने (य के०) वली (सुहेसी के०) सुखनी वांग करे ठे. एटले प्रमाद करीने सुखनी वांग राखे ठे, ते सुख तने क्यांथी मलशे? (च के०) अने (नरयदुःखं के०) नरकनां दुःख जे ते (दुसहं के०) दुःखे करीने पण सहन करवा कठण ठे. माटे (तं के०) ते (न याणामो के०) हुं नथी जाणतो के, (कह होहिसि के०) तुं किये प्रकारे थइश? एटले तहारी शी गति थशे? ते हु नथी जाणतो. ॥ ए३ ॥

नावार्थ.—श्री आवश्यक निर्युक्तिमा कह्यु ठे के, आलसथी साधु पासे

जइने धर्म साजली शकतो नथी, तथा मोहथकी घरनी जंजालने विषे मूढ थइने रह्यो छे अर्थात् साधु पासे जइ नित्य शुं सांजलवु छे? घणीवार सांजलेलु छे एम धारीने धर्म सांजलवानी अवज्ञा करे छे तथा जात्यादिकना अजिमानथी तथा क्रोधथी तथा प्रमादथी एटले मद्यादिक कुव्यसन सेववाथी तथा कृपणपणाथी एटले जो उपाश्रे जइशुं, तो कोइ धर्ममार्गनी टीपमां लोकलाजथी कांइ आपवु पडशे तथा जयथी एटले जो उपाश्रे जइशु, तो नरकादिकना दुःख सांजलवा पडशे तथा शोकथी तथा अज्ञानथी एटले जाइबंध दोस्तदारना ना कहेवाथी तथा व्याक्षेपथी एटले जाणी जोइने घणी जंजाल उजी करवाथी तथा कुतूहलथी एटले गीत नाटकादिकना उदमां पडवाथी तथा रमणथी एटले जनावरनी साथे क्रीडा करवाथी इत्यादिक अनेक कारणोथी पामेलु एवु पण मनुष्यपणु एळे गमावे छे एटले जव-समुद्रथी तारनार अने सकल सुखने आपनार एवा जिनधर्मने करतो नथी, अने सांसारिक सुखनी वांछा करे छे पण हे जीव! तुं सामान्य दुःख पण

सहन करी शकतो नथी, त्यारे नरकना दुःसह दुःख तहाराथी केम सहन थशे? अने परलोकमा तहारी शी गति थशे? एम गुरु महाराज उपदेश करे छे ॥ ૯૩ ॥

अस्थिरेण स्थिरः समलेन निर्मलः परवशेनरोगादिना स्वाधीनः

अथिरेण थिरो समेले । ण निम्मलो परवसेण साहीणो ॥

देहेन यदि उपार्ज्यते धर्मः तदा किं न पर्याप्त किं नसपन्न

देहेन जइ विढप्पइ । धम्मो तो किं न पज्जत्त ॥૯૪॥

अर्थ.—रे जीव! (जइ के०) जो (अथिरेण के०) अस्थिर एवा, तथा (समलेण के०) मलसहित एवा, अने (परवसेण के०) परवश एवा (देहेण के०) देहवडे (थिरो के०) स्थिर एवो, अने (निम्मलो के०) निर्मल एवो, अने (साहीणो के०) पोताने स्वाधीन एवो (धम्मो के०) धर्म जे ते (विढप्पइ के०) उपार्जन थइ शके छे, तो (ता के०) त्यारे तहारे (किं न पज्जत के०) शुं न प्राप्त थयु? अर्थात् सर्वे प्राप्त थयु. ॥ ૯૪ ॥

भावार्थ—हे जीव ! आ अशाश्वता देहवडे परलोकमा निरतर सहायकारी एवो धर्म उपार्जन थाय छे, तो शु न परिपूर्ण थयु ? अर्थात् सर्वे परिपूर्ण थयु एटले घणो महोटो लाभ मळ्यो, एम जाणवु तेमज आ मलमूत्र भरेला देहवडे निर्मल एवो जिनधर्म उपार्जन थाय तो, शु परिपूर्ण लाभ न मळ्यो कहेवाय ? अर्थात् जगत्मा जेटला लाभ कहेवाय छे, ते सर्वे लाभ मळी चूक्याज कहेवाय तेमज रोगादिकने आधीन एवा देहवडे जो स्वाधीन एवो जिनधर्म मळे, तो शु एने काइ पण मळवानी खामी रही कहेवाय ? अर्थात् नज कहेवाय ते कह्यु छे के,—

चिन्तारत्नमनर्घ्यं चेत्प्राप्यते काचसंचयैः ॥
रेणुना चेद्धिरण्य चेत्सुधाब्धिर्नीरबिन्दुना ॥ १ ॥
गृहेण यदि साम्राज्य देहेन सुकृत यदि ॥
कस्तदा तत्र गृह्णीयात्तत्वातत्वविचारकः ॥ २ ॥ युग्मम् ॥

अर्थ—तत्व अने अतत्वनो विचार करनार (बुद्धिमान्) पुरुष जे ते, का-

चना ककडा साटे, अमूल्य एवा चिंतामणि रत्नने कोण न ग्रहण करे? तथा धूल आपीने सोनु कोण न ग्रहण करे? तथा पाणीनो बिंदु आपीने अमृतना समुद्रने कोण न ग्रहण करे? तथा पोताने रहेवानुं कुंपडु आपीने चक्रवर्त्तिनुं राज्य कोण न ग्रहण करे? अर्थात् तत्त्वातत्त्वना विचारनार तो तरतज ग्रहण करे तेवीज रीते आ मलमूत्रादिके करीने भरपूर एवा देहवडे पूर्वे कहेला चिंतामणीरत्न समान जैनधर्मने कोण न ग्रहण करे? अर्थात् जे महामूर्ख होय तेज न ग्रहण करे ॥ १ ॥ २ ॥

एवी रीते विचारीने आ महामलिन एवा शरीर उपरथी मोह उतारीने, जेम बने तेम शुद्ध एवा धर्मने ग्रहण करवु. ॥ ९४ ॥

यथा चिंतामणिरत्ने सुलभं न निश्चयं भवति तुच्छविभवानां अल्पपुण्यानां

जह चिंतामणिरयणं । सुलहं न हु होइ तुच्छविहवाणं ॥

गुणविभववर्जितानां जीवानां तथा धर्मरत्नमपि

गुणविहववज्जियाणं । जियाण तह धम्मरयणंपि ॥९५॥

अर्थ.-हे जीव! (तुह्छविह्वाण के०) तुछ विजववालाने (जइ के०) जेम (चिंतामणिरयण के०) चिंतामणि रत्न जे ते (सुलह के०) सुलज एवु (न हु होइ के०) नज होय (तह के०) तेम (गुणविहववज्जियाण के०) गुण रूप वैजवे करीने रहित एवा (जियाण के०) जीवोने (धम्मरयणपि के०) धर्मरत्न जे ते पण, सुलज न होय ॥ ए५ ॥

जावार्थ-तुछ विजववाला जीवोने एटले पशुपाल जेवा स्वल्प पुण्यवाला प्राणियोने, जेम चिंतामणि रत्न सुखे पामवा जोग्य न होय, अर्थात् पुण्यहीन जीवो, जेम चिंतामणि रत्न पामी शके नही, तेम सम्यक्त्वादि गुणरूप विजवे करीने रहित एवा प्राणियो, शुद्ध धर्मरूप रत्नने पामी शके नही जे जयदेव कुमारनी पेठे घणा पुण्यरूप गुणोए करीने जरेला होय, तेज प्राणियो, आ मनुष्यगतिने विषे चिंतामणि रत्नसमान सद्धर्म प्रत्ये पामे ठे ॥ ए५ ॥

कथा ८ मी.

इहां पशुपाल अने जयदेवनु वृत्तात आ नीचे प्रमाणे

हस्तिनापुर नगरने विषे नागदेव नामा शेठनी वसुधरा भार्यानी कूखमा उत्पन्न थएलो जयदेव नामे पुत्र हतो, तेणे बार वर्ष सूधी रत्ननी परीक्षानो अभ्यास कर्यो. त्यार पछी ते शास्त्रना अनुसारे महा प्रभाववालु चिंतामणि रत्न जाणीने बीजा मणियोने पथरातुल्य गणीने तेज चिंतामणि रत्नने मेलववा माटे सर्व नगरने विषे हाट हाट अने घर घर प्रत्ये भमतो हतो; परतु ते रत्न क्याहि पण पाम्यो नही त्यारे खेद पामीने माता पिताने कहेतो हवो के, महारुं चित्त चिंतामणी रत्नने विषे लाग्यु छे, माटे हु तेने अर्थे बीजे ठेकाणे जइश त्यारे माता पिताए कह्यु- हे पुत्र ! आतो निश्चे कल्पनाज छे. परतु परमार्थे थकी चिंतामणी नथी. ते कारण माटे तुं पोतानी खुशी प्रमाणे बीजा रत्नोथी व्यापार कर. एवी रीते बहु कह्यु, परतु जयदेव, चिंतामणी पामवानो निश्चय करीने हस्तिनापुरथी नीकलीने घणा पर्वत, नगर, गाम;

खाण, करबट, पत्तन, समुद्रतीर एटला स्थानकोने विषे ते चिंतामणीने खोलतो सतो घणा काल जम्यो; परतु क्यांहि ते रत्न पाम्यो नही पछी उदास मनवालो थइने पोताना मनमा विचार करवा लाग्यो के, शु ! आ चिंतामणी रत्न साचु छे ? के जूठु छे ? जे माटे क्याहि पण देखवामा आवतु नथी ! ! अथवा शास्त्रमा कहेलु ते मणिनु छतापणु फेरफार न होय, माटे क्याहि पण हशे एवो निश्चय करीने फरीने पण घणी मणिनी खाणो जोतो सतो ते रत्ननी घणी खोल करवा लाग्यो त्यार पछी एक दहाडो कोइ वृद्ध पुरुषे तने कह्यु के, हे जड ! इहा एक मणीनी खाण छे, तेने विषे जे पुण्यवत प्राणी होय, ते चिंतामणी पामे पछी जयदेव तेना वचनथी त्यां जइने चिंतामणी खोलवा लाग्यो. ते अवसरे त्या एक मंदबुद्धिवाला पशुपालना हाथमां गोल आकारवालो पथरो देखीने ते पथराने शास्त्रमा कहेला लक्षणोये करीने चितामणी जाणीने, ते जयदेवे ते पशुपालनी पासे माग्यो त्यारे पशुपाले कह्यु. तमारे आ पथरानु शु काम छे ? जयदेवे कह्यु हु महारे घेर जइने छो-

करावीने रमवा आपीश. पछी पशुपाले कह्युं इहां आवा घणा पथरा पड्या छे, ते तमे पोतेज केम लेता नथी? जयदेव बोल्यो. हमणा म्हारे घेर जावानी उतावल छे, माटे एज मने आप्य. तु इहांथी बीजो पामीश. एवी रीते कह्यु, तोपण ते पशुपाले परने उपकार करवाना स्वभावे रहितपणे करीने तेने न आप्यो पछी जयदेवे उपकारबुद्धिये करीने तेने कह्यु. हे जड! जो तुं मने नथी आपतो, तो तु पोतेज ए चिंतामणी रत्नतु आराधन कर्य. जेथी आ चिंतामणी तने पण वांछित फल आपे. त्यारे पशुपाले कह्युं जो आ चिंतामणी सात्तु छे, तो म्हारु चिन्तन करेलु बहु बोरडीना फलनुं चूरणादिक शीघ्र आपो त्यारे लगारेक हसीने जयदेवे कह्यु. अहो! एम न विचारीये. त्रण उपवास करीने सध्या समये ए मणिने शुद्ध पाणीथी पखालीने शुद्ध भूमिये उचे स्थानके स्थापन करीने चंदन, बरास, फूलादिकवडे पूजीने अने वली नमस्कार करीने पछी एनी आगल जे पोताने इष्ट होय, ते चिन्तन करीए, ते सर्व पण प्रातःकालमा पामीये. ए प्रकारे सांभलीने ते पशुपाल पो-

वे० खाण, करवट, पत्तन, समुद्रतीर एटला स्थानकोने विषे ते चिंतामणीने शा०
खोलतो सतो घणा काल जम्यो; परतु क्यांहि ते रत्न पाम्यो नही पछी उ-
१५६ दास मननालो थइने पोताना मनमा विचार करवा लाग्यो के मा ! मा चिं-

मा समुद्रने खेडने नामना मनुष्य मणो, [illegible] शा०
के, पुण्यरहित एवा आना [illegible]
अम विचारीने जगदेव पण तेनी पूंठे [illegible]
मनमां कहेवा लाग्यो के, हे मणि ! [illegible]
[illegible] विचारीने तहारी पूजा करीश. [illegible]
माटे तेने उद्यम करवो नथी [illegible]
[illegible] कथा कहे छे अने [illegible]
एक नगरने विषे एक [illegible]
वारवार मणिनी आगल [illegible]
मूर्ख, शेष [illegible]
नथी, तो [illegible]
[illegible] नाम चिंतामणि [illegible]
[illegible] महारा मननी चिंता [illegible] १५७

क्षणमात्र पण रही न शकु, ते हुं तहारा माटे करवा, माड्या एवा त्रण उपवासे करीनेज मरण पामुं. ते माटे एम मानुं छुं के, आ वाणियाये मने मारवाने माटे तहारु वर्णन कर्युं जणाय छे। ते माटे तु त्यां जा. के, ज्यां फरीने महारे देखवो न पडे. एम कहीने तेणे ते मणिने छेटे नाखी दीधो. ते अवसरे जयदेवे आनद पामीने तत्काल नमस्कार करीने चिंतामणी ग्रहण करीने, सपूर्ण थयो छे मनोरथ ते जेनो एवो सतो पोताना नगरने सन्मुख चाल्यो मार्गमा महापुर नगरने विषे मणिना प्रभावथी जेने घणु द्रव्य प्राप्त थयु छे एवो ते कुमार सुबुद्धि शेठनी रत्नवती नामे पुत्री तेने परणीने बहु परिवार सहित हस्तिनापुर नगरे आव्यो. आवीने पोताना माता पिताने पगे लाग्यो ते अवसरे तेनी समृद्धि सहित तेने जोइने माता पिता आनद पाम्यां, अने तेनी प्रससा करवा लाग्यां. अने कुटुंबी लोको तेनु सन्मान करवा लाग्यां. अने बीजा लोको पण तेनी स्तवना करवा लाग्या. पोते जावजीव सूधी सुखी थयो. ए प्रकारे धर्मरूप रत्ननी प्राप्तिने विषे पशुपाल-अने जयदेवनो उपनय कह्यो.

यथा दृष्टिसयोग न नवति जात्यधाना जीवाना

जह दिठीसजोगो । न होइ जच्चंधयाण जीवाण ॥

तथा जिनमतसयोग न नवति मिथ्यात्वेन अधाना जीवाना

तह जिणमयसजोगो । न होइ मिछधजीवाण ॥८६॥

अर्थ –(जह के०) जेम (जच्चधयाण के०) जन्माराथीज अध एवा (जीवाण के०) जीव जे तेमने (दिठीसजोगो के०) दृष्टिनो सयोग जे ते एटले आखे करीने देखवु (न होइ के०) न होय (तह के०) तेम (मिछधजीवाण के०) मिथ्यात्वे करीने आधला एवा जीवोने (जिणमयसजोगो के०) जिनमतनो सयोग जे ते एटले जिनमतनी प्राप्ति (न होइ के०) न होय ॥८६ ॥

नावार्थ.–जेम जन्माराथी अंध थएला पुरुषोने स्थूल पदार्थ पण देखवामा आवतो नथी, तेम मिथ्यात्वरूप कुवासनाये करीने विवेकरूप चक्षुए रहित थएला जीवोने पण, जिनशासनरूप सूर्य दीठामा आवतो नथी. एटले जिनशासननी प्राप्ति नथी ॥ ८६ ॥

प्रत्यक्षे अनंतगुणे जिनेन्द्रधर्मे न दोषलेशोपि

पच्चरकम अणंतगुणे । जिणिंदधम्मे न दोसलेसोवि ॥

तथापि निश्चये अज्ञानेन अंधा. न रमते कदापि तस्मिनजिनमते जीवाः

तहवि हु अन्नाणंधा । न रमंति कयावि तमि जिया॥ए७॥

अर्थ -(पच्चरकं के०) प्रत्यक्ष प्रमाणे करीने सिद्ध एवो, अने (अणंतगुणे के०) अनंता छे गुण ते जेने विषे एवो (जिणिदधम्मे के०) जिनेंद्रनो धर्म तेने विषे (दोसलेसोवि के०) अपयश प्रमुख दोषनो लेश पण (न के०) नथी (तहवि के०) तोयपण (अन्नाणंधा के०) अज्ञाने करीने आंधला एवा (जिया के०) जीव जे ते (हु के०) निश्चे (तंमि के०) ते जिनेंद्रभाषित धर्मने विषे (कयावि के०) क्यारे पण. एटले कोइ वखत पण (न रमति के०) नथी रमता एटले नथी जोडाता ॥ ए७ ॥

भावार्थ -आ लोकने विषे यश, अने परलोकने विषे स्वर्ग तथा मोक्षना सुख आपवारूप गुणवाळो, अने जेने विषे काइ पण दोष नथी एवा, श्री

जिनेन्द्रधर्मने प्रत्यक्षपणे देखे छे, तोयपण अज्ञाने करीने आंधला एवा जे पुरुषो, ते जेम जे वस्तु छे, तेम ते वस्तुने जणावनार एवा श्री जिनधर्मने अंगीकार नथी करता ॥ ९७ ॥

मिथ्यात्वे अनन्तदोषा प्रकटा दृश्यन्ते न अपि च गुणलेश

मिछे अणतदोसा । पयडा दीसंति नं वि यं गुणलेसो ॥

तथापि च त एव जीवा हीति विस्मये मोहान्धाः निषेवन्ते

तहविय ते चेव जिया । ही मोहधा निसेवति ॥९८॥

अर्थ—(मिछे के०) मिथ्यात्वने विषे (पयडा के०) प्रकट एवा (अणतदोसा के०) अनंत दोष जे ते (दीसति के०) देखाय छे (य के०) वली. तेमां (गुणलेसो वि के०) गुणनो लेशमात्र पण (न के०) नथी (तहविय के०) तोय पण (मोहधा के०) मोहे करीने आंधला एवा (जिया के०) जीव जे ते (त चेव के०) ते मिथ्यात्वनेज (निसेवति के०) सेवे छे ते (ही के०) निश्चे घणुज आश्चर्य छे!!! ॥ ९८ ॥

भावार्थ —कुगुरु कुदेव अने कुधर्म तेमनो अंगीकार करवारूप अध्यवसायने विषे एटले मिथ्यात्वने विषे नरकपातादिक अनंत दोष प्रकट देखाय छे, पण तेमां गुणनो तो लवलेश पण देखातो नथी तोयपण मोहे करीने अंध थएला जीवो, ते मिथ्यात्वनोज आश्रय करे छे एटले ते मिथ्यात्वनेज अंगीकार करे छे परंतु जिनधर्मने अंगीकार नथी करता, ते घणुंज खेदकारक छे !!! ॥ ९८ ॥

धिक्धिक् तत् तेषा नराणा विज्ञानेशिल्पे तथा गुणेषु कुशलत्वंयत्
धिद्धी ताण नराण । विन्नाणे तह गुणेसु कुशलत्त ॥
सुखरूपे सत्यरूपे धर्मरत्ने सुपरीक्षा ये न जानति
सुहसच्चधम्मरयणे । सुपरिक्ख जे न जाणंति ॥ ९९ ॥

अर्थ —(सुहसच्चधम्मरयणे के०) सुखकारी अने सत्य एवा धर्मरूप रत्नने विषे (जे के०) जे पुरुषो (सुपरिक्ख के०) जली रीते परीक्षाने (न जा-

पति के०) नथी जाणता अर्थात् नथी जाणी शकता, (ताण के०) ते (नराण के०) पुरुषोना (विन्नाणे के०) विज्ञानने विषे (तह के०) तथा (गुणेसु के०) गुणने विषे, (कुसलत्त के०) कुसलपणाने (धिद्धि के०) धिक्कार थाउ ! धिक्कार थाउ !! ॥ ९९ ॥

नानार्थ.—जगत्ने विषे जे पुरुषोनु शिल्पचातुर्य, कलाकौशल्य, औदार्य तथा शौर्य धैर्यादिकने विषे कुशलपणु घणुज वखणाय छे, एटले रत्नादिकनी परीक्षा करवामा घणा डाह्या कहेवाय छे, ते पुरुषो सुखकारी अने सत्य एवा धर्मरूप रत्ननी परीक्षा, जो न करी शक्या, तो तेमना सघला डह्यापणपणाने अतिशे धिक्कार थाउ !! धिक्कार थाउ !!! ते उपर शास्त्रमा कह्यु छे के, बहोतेर कलामा कुशल एवा पडित पुरुषो होय, तोपण जो तेमण सर्व कलामा श्रेष्ट एवी जे धर्मनी कला नथी जाणी, तो ते निश्चे अपडितज जाणवा माटे सर्व परीक्षा करता धर्मरूप रत्ननी परीक्षा करवी, तेज श्रेष्ट परीक्षा छे ॥ ९९ ॥

॥ अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

जिनधर्मः अय जीवानां अपूर्वः कल्पपादपः
जिणधम्मो ऽयं जीवाणं । अप्पुवो कप्पपायवो ॥
स्वर्गापवर्गसुखानां फलानां दायकः अय
सग्गापवग्गसुक्खाणं । फलाण दायगो इमो ॥ १०० ॥

अर्थ —(अय के०) आ (जिणधम्मो के०) जिनधर्म जे ते (जिवाण के०) जीवोने (अप्पुवो के०) अपूर्व एटले अप्रसिद्ध एवो (कप्पपायवो के०) कल्पवृक्ष छे केम के, (इमो के०) ए जिनधर्मरूप कल्पवृक्ष जे ते (सग्गापवग्गसुक्खाण के०) स्वर्ग एटले देवलोक अने अपवर्ग एटले मोक्ष तेना सुखरूप (फलाण के०) फलनो (दाइगो के०) आपनारो छे. ॥ १०० ॥

जावार्थ —आ जिनधर्मरूप कल्पवृक्ष अपूर्व छे. एटले प्रसिद्ध कल्पवृक्ष तो, फक्त आ लोकने विषे रहेला पुद्गलिक सुखनेज आपनार छे परंतु आ धर्मरूप कल्पवृक्ष तो, स्वर्गादिक फलने तथा मोक्ष फलने आपनार छे माटे

अपूर्व कल्पवृक्ष कह्यो. एवु जाणीने तेनोज आश्रय करवो ॥ १०० ॥

धर्म. बंध सुमित्र च धर्म च परम गुरु

धम्मो बंधु सुमित्तो य । धम्मो य परमो गुरु ॥

मोक्षमार्गप्रवृत्ताना धर्म परम स्यदन'स्थ.

मुक्कमग्गपयट्टाण । धम्मो परमसंदणो ॥१०१॥

अर्थ –रे जीव! (धम्मो के०) आ जिनधर्म जे ते (बंधु के०) बंधु (भाइ) समान छे (य के०) वली (सुमित्तो के०) सारा मित्र समान छे (य के०) वली (धम्मो के०) धर्म जे ते (परमो गुरु के०) उत्कृष्टा गुरु समान छे. वली ते (धम्मो के०) धर्म जे ते (मुक्कमग्गपयट्टाण के०) मोक्ष मार्गने विषे प्रवर्त्तेला पुरुषोने (परमसंदणो के०) उत्कृष्टा रथ समान छे ॥ १०१ ॥

भावार्थ –जेम आपद् कालने विषे भाइ सहायता करे छे, तेम ससाररूप आपद्कालमा, आ जिनधर्म पण सहायता करे छे, माटे भाइ समान छे तथा सारो मित्र जेम हितकारी अर्थने मेलवी आपवाथी सुख करे

छे, तेम आ धर्मरूप मित्र पण मनोवांछित सुख मेळवी आपवाथी सुमित्र समान छे तथा गुरु जेम असत् मार्गथी पाछो वाळे छे, तेम आ जिनधर्म पण, नरक तिर्यंचादिक दुर्गतिमा जवाथी पाछो वाळे छे. माटे उत्कृष्ट गुरुसमान छे तथा रथे करीने जेम मार्गमा सुखे सुखे जवाय छे, तेम धर्मरूप रथे करीने मोक्ष मार्गमा सुखे सुखे जइ शकाय छे माटे धर्मने परम रथ समान कह्यो छे एवुं जाणीने आवा जैनधर्मने विषे उद्यम करवो ॥ १०१ ॥

॥ आर्यावृत्तम् ॥

चतसृणागतीनामनन्तानिदुःखानिता-येवानलस्तेनप्र-दीप्तेभवकानने महाभीमे

चउगइणंतदुहानल । पलित्तंभवकाणणे महाभीमे ॥

सेवस्व रेजीव त्वं जिनवचन अमृतकुण्डसम

सेवसु रेजीव तुमं । जिणवयणं अमियकुंडसम ॥१०२॥

अर्थ –(महाभीमे के०) महा भयकर एवुं (चउगइणंतदुहानल के०) च्यार गतिमां रहेला एवां अनंता दुःखरूप महोटा अग्निये करीने (पलित्त

नयकाणणे के०) लागतु एवु जे ससाररूप वन, तेने विषे (रेजीव के०) हे जीव! (तुम के०) तु (अमियकुडसम के०) अमृतना कुड समान (जिणवयण के०) जिनराजना वचनने (सेवसु के०) सेवन करय एटले सिद्धातमा कहेला अनुष्ठानने विधिसहित अगीकार करय ॥ १०२ ॥

नावार्थ –आ ससाररूप नयकर दावानलथी दाझेलो एवो जे तु, ते जिन वचनरूप अमृतना कुडमा मग्न था अर्थात् रुडा अनुष्ठानने ग्रहण करय. जेथी तने अपूर्व सुखशाति थशे ॥ १०२ ॥

विषमे नरएवमरुदेशे अनतदुःखग्रीष्मतापसतप्ते

विसमे नवमरुदेशे। अणतडुहगिम्हतावसतत्ते ॥

जिनधर्मएवकल्पवृक्ष स्मर त्वं रेजीव शिवसुखद

जिणधम्मकप्परुक्ख। सरसु तुमं जीव सिवसुहदं ॥१०३॥

अर्थ –(जीव के०) हे जीव! (विसमे के०) विषम एटले चालनारने दु ख कारी एवा, अने (अणंतडुहगिम्हतावसंतत्ते के०) अनता दु खरूप ग्रीष्मऋ-

तुना तापवडे तारी पेठे तपेला एवा (जवमरुदेसे के०) संसाररूप मारवाड देशने विषे (सिवसुहद के०) मोक्ष सुखने आपनार, एवा (जिणधम्मकप्परुक्क के०) जिनधर्मरूप कल्पवृक्षने (तुम के०) तु (सरसु के०) आश्रय कर. (आ जग्याये टीकाकारे कल्पवृक्षनु स्मरण कर्य एवो अर्थ कर्यो छे, ते विचारवा योग्य छे) ॥ १०३ ॥

भावार्थ – हे जीव ! संसारना अनेक दुःखरूप मारवाड देशनी तपेली रेती, तेमा भ्रमण करता प्राणियोने महोटा भाग्ये प्राप्त थयेलो जिनधर्मरूप कल्पवृक्ष, तेज आश्रय करवायोग्य छे के, जेथी सकल वांछित सुखनी सिद्धि थाय छे ॥ १०३ ॥

किं बहुना जिनधर्मे यतितव्य यथासात्मा भवोदधि घोर

किं बहुणा जिणधम्मे । जइयव्व जंह भवोदहिं घोर ॥

लघुशीघ्र तीर्त्वा अनतसुख लभते जीवः शाश्वत स्थान

लहु तरियंम अांतसुह । लहइ जिउ सासय ठाणं ॥१०४॥

अर्थ –हे आत्मन् ! (किं बहुणा के०) घणु कहेवे करीने शु ! ते प्रकारे (जिणधम्मे के०) जिनधर्मने विषे (जइयव्व के०) यत्न करवो (जह के०) जेम (जिव के०) जीव जे ते (घोर के०) भयानक एवा (भवोदहि के०) संसाररूप समुद्रने (लहु के०) शीघ्रपणे (तरिय के०) तरीने (अणतसुह के०) अनतु छे सुख ते जेने विषे एवु (सासय ठाण के०) शाश्वतु स्थान एटले मोक्ष, तेने (लहइ के०) पामे ॥ १०४ ॥

भावार्थ –हे भव्य जीवो ! आवा ग्रंथनो सारमां सार एटलोज कहेवानो छे के, जिनधर्मने विषे प्रमाद रहितपणे प्रयत्न करो के, जेथी तमने मोक्षनु शाश्वतु सुख प्राप्त थाय ते सुखनु वर्णन थइ शके तेम नथी, तेम छतां जो तेना स्वरूपने जाणवानी मरजी होय तो श्री आचारांगजी सूत्रना पांचमा लोकसार नामा अध्ययनमां जोइ लेज्यो. ॥ १०४ ॥

आ मथना ... मा पानानी पुंठिमां जणाव्यु छे

के सागरोपमनुं

शुं. ते ते इहां

अति सूक्ष्म

थती थाय, तेनी

ने सोळ आवली

दिवस थाय छे.

वाडिये एक मा

कयाला कोडाग

१ इहां पर

३ केन पल्याम



तीसरा मोड़ THIRD FOLD

इस पत्र के भीतर कुछ न रखिए NO ENCLOSURES ALLOWED

पते में पिन कोड लिखें WRITE PIN CODE IN ADDRESS

प्रेषक का नाम और पता — SENDER'S NAME AND ADDRESS —

पिन PIN

अस्पृश्यता ईश्वर और मानवता के प्रति अपराध है।

UNTOUCHABILITY IS A CRIME AGAINST GOD ...

एज रीते एटले पूर्वे कह्या तेवा दश कोडाकोडि सागरोपमे, उत्सर्पिणी अने बीजा दश कोडाकोडि सागरोपमे, अवसर्पिणी थाय. ए बे मळीने वीश

पमनु स्वरूप जणावीए छीए. तेम के, आ बादर अद्धा पल्योपमे करीने जीवोना आउखा कायस्थिति, कर्मस्थिति, पुद्गलस्थिति आदिकनु प्रमाण गणाय छे माटे, ए अद्धा पल्योपमना पण सूक्ष्म अने बादर एवा बे भेद छे, तेमा प्रथम बादर अद्धा पल्योपमनु स्वरूप कहीए छीए. ॥ देवकुरु उत्तरकुरु क्षेत्रमा जन्मेला जुगलियाना वाल ने एवा रे, जे जुगलने जन्मे, एक बे त्रण यावत् सात दिवस थया होय, तेवा जुगलियाना केश (वाल) लेईने तेना एवा ककडा करवा के, ते कर्म नो बीजा कडका थइ शके नहीं तेवा वालाग्रने च्यार गाउनो लांबो, च्यार गाउनो पहोळो अने च्यार गाउनो उंडो एवा कूवामां ते वालाग्रने एवा ठांसीठांसीने भरवा के तेना उपर थइने चक्रवर्तिनु सैन्य जाय तोपण ते वालाग्र दाबी शके नहीं, तथा अग्नि बाळी शके नहीं, तथा पाणीए करी भींजाय नहीं एटले तेनी अंदर पाणी उतरी शके नहीं, तथा वायरे करी ते वालाग्र उडी शके नहीं, एवा ठांसी ठांसीने भर्या होय, पछी ते वालाग्रनो एकेक ककडो समय समय काढीए, ने काढतां काढतां ज्यारे ते कूवो खाली थाय, त्यारे एक बादर उद्धार पल्योपम थाय. तेवा दश कोडाकोडि वडे

कोडाकोडि सागरोपमे, एक कालचक्र थाय. एवा अनंता कालचक्रे एक पुद्गल परावर्त्तन थाय. ॥ इति पुद्गलपरावर्त्तन प्रमाणम् ॥

थाय आ दृष्टांत कथनमात्र छे केम के, आ प्रमाण गणत्रीमां आवतुं नथी. गणत्रीमां तो सूक्ष्म अद्धा पल्योपम आवे छे तेनुं स्वरूप नीचे कहीए छीए.

पूर्वे कह्या प्रमाणे जुगलियाना एकेका वालाग्रना, असंख्याता खंड कल्पवा ते वालाग्रना खंडे करी पूर्वे कह्या प्रमाणे ते कूवा ठांसी ठांसीने भरीने पछी समाया पूर्वेना पछे एकेका वालनो कणको सो सो वर्षे काढीए पछी ज्यारे ते कुवो तमाम खाली थाय, त्यारे एक सूक्ष्म अद्धा पल्योपम थाय, तेना असंख्याता कोडाकोडी वर्ष थाय. तेवा दश कोडाकोडीना सागरोपमे एक अद्धा सागरोपम थाय. एवा रीतना सागरोपमनुं प्रमाण आ जगाए जाणवुं. आ वातोनो विशेष विस्तार श्री अनुयोगद्वार सूत्रमां तथा पांचमा कर्मग्रंथमा छे त्यांथी विस्तारना अर्थिये जोइ लेवुं.

आ ग्रंथनो बालावबोध करनार कहे छे के,--

॥ उपजाति वृत्तम् ॥

प्रबन्धचिन्तामणि, धर्मबिन्दु । श्रीहारिभद्राष्टकसघण्टा ॥
भाषान्तरेणाङ्कियुता यत स्यु । सोय प्रतापो मयि सद्गुरोः ॥ १ ॥

॥ अनुष्टुप् वृत्तम् ॥

मागधी संस्कृतेऽकारिरत्नमञ्जरी नाटिका ॥
जयतिहुयणस्तोत्रे ज्ञानसारे तु गौर्जरी ॥ २ ॥

॥ इति श्री जैनीय अध्यापक, शास्त्री रामचंद्र दीनानाथ विरचित श्री वैराग्यशतकनो दंडान्वय सहित बालावबोध समाप्त. ॥

આ અમૂલ્ય ગ્રંથની ઉપરા ઉપરી માગણી થવાથી આવૃત્તિ ચોથી
પ્રસિદ્ધ કરવામા આવી છે
ફક્ત ૧૦૦૦ નકલ.

સૂચના.

આ ગ્રંથમાં પ્રસિદ્ધકર્તાના શિક્કા શિવાયની કોઇ પણ કૉપી (નકલ) વેચાતી કોઇપણ ઠેકાણે જણાશે તેના ઉપર ઘટતા ઇલાજો લેવામા આવશે.

પુસ્તક મળવાના ઠેકાણાં.

અમદાવાદ—પ્રસિદ્ધકર્તા પાસેથી
 „ —રાજનગર પ્રિન્ટીંગ પ્રેસ તથા જાણીતા તમામ બુકસેલરો પાસેથી
 „ —શા. વાલાભાઇ છગનલાલ પાસેથી ઠે. કીકાભટની પોળ

મુંબાઇ—વંદરમા. જીમશી માણેકની દુકાનેથી.

॥जैनीय-वैराग्यशतकं भाषान्तरसहितं॥

॥ समाप्तम् ॥